आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जून, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2015 ★ आषाढ़, 2072

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Rec 2976

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

31850

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

पाणे य नाइवाएज्जा,
से समिए त्ति वुच्चई ताई।
तओ से पावयं कम्मं,
निज्जाइ उदगं व थलाओ।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.9

अतिपात न करता प्राणों का,
वह त्राता 'समित' कहलाता है।
उस त्रायी का सब पापकर्म,
थल से जल-सम बह जाता है।।

जून, 2015
वीर निर्वाण संवत्, 2541
प्रथम आषाढ़, 2072

वर्ष 73 अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु. स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु. संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु. साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	ऑब्ज़र्वेशन	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	11
	समाधि-मरण	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	13
प्रवचन-	अहिंसा का सही स्वरूप जानिए	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	14
शोधालेख-	श्रावक-प्रतिमा : एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री	21
	उपांगसाहित्य : एक विश्लेषणात्मक विवेचन	-प्रो. सागरमल जैन	26
आ.पद रजतवर्ष-	जैन आगमों में आचार्य पद की महिमा	-श्री सम्पतराज चौधरी	33
	आचार्य श्री हीरा पर भावाभिव्यक्तियाँ	-संकलित	63
अध्यात्म-	आत्मा को जो अमर नहीं मानता वही मृत्यु से डरता है	-आचार्य श्री विजय रत्नसुन्दरसूरिजी	40
	दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (4)	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	49
अंग्रेजी-स्तम्भ-	SALLEKHANA	*-Justice Sh. T.K. Tukol*	42
परिवार-स्तम्भ-	संस्कार-निर्माण	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	51
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (11)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	55
संघ-सेवा-	अम्मा-पियरो का दायित्व निभाएँ	-श्री आर. वीरेन्द्र कांकरिया	59
युवा-स्तम्भ-	पारिवारिक संवाद व सम्बन्धों पर आभासी दुनिया का प्रहार	-श्रीमती बीना जैन	61
नारी-स्तम्भ-	आदर्श माँ बनने के सूत्र	-प्राणिमित्र श्री नितेश नागौता जैन	69
शिविर-अनुभव-	आत्मस्वरूप को पहचानने का साधन	-सुश्री प्रतीक्षा जैन	75
बाल-स्तम्भ -	ब्रह्म मुहूर्त्त में उठिए/मैं हूँ निडर साहसी बालक	-श्रीमती कमला सुराणा/डॉ. दिलीप धींग	77
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें (5)	-संकलित	83
चिन्तन/विचार-	अनमोल वचन	-सुश्री लक्ष्मी जैन	25
कविता/गीत-	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	54
	ममता बनाम भ्रूण हत्या	-श्रीमती माया कुम्भट	70
	दुनिया गाये यश तेरा	-महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.	71
	महापुरुषों के जीवन से लें सीख	-श्री नेमीचन्द जैन	82
	लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाना है	-श्रीमती अरुणा कर्णावट	87
	धर्म की शक्ति है महान्	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	98
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	88
समाचार विविधा-	रिपोर्ट	-श्री नौरतनमल मेहता	90
	समाचार-संकलन	-संकलित	99
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	120

सम्पादकीय

ऑब्ज़र्वेशन

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

अंग्रेजी के 'ऑब्जर्वेशन' शब्द का हिन्दी में प्रमुख अर्थ है- प्रेक्षण या अवलोकन। इसके देखरेख, राय, टिप्पणी आदि अर्थ भी होते हैं। जीवन एवं व्यक्तित्व के निर्माण में इन अर्थों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हम प्रकृति, वातावरण, आस-पड़ौस में या अपने में जो कुछ तटस्थ भाव से देखते हैं या जानते हैं, वह ऑब्जर्वेशन का ही रूप है। इसे प्रेक्षण या अवलोकन कहा जा सकता है। शिशु एवं बालक इस ऑब्जर्वेशन के माध्यम से अपना विकास करता है। वह प्रकृति एवं अपने आस-पास के व्यक्तियों एवं उनके व्यवहार को ऑब्जर्व करके सीखता है। चलना-फिरना, खाना-पीना, बोलना, उत्तर देना आदि का प्रशिक्षण बालक को प्रेक्षण से ही प्राप्त होता है। यद्यपि प्रेक्षण नयनों से होता है, किन्तु यहाँ श्रोत्र, घ्राण, रसना और स्पर्शन इन्द्रियों से होने वाला तटस्थता पूर्वक किया गया ज्ञान भी ऑब्जर्वेशन के अन्तर्गत समाविष्ट है। ऑब्जर्वेशन के समय मन की एकाग्रता, बुद्धि की जागरूकता तथा भावों की तटस्थता भी आवश्यक है। जिसकी जैसी पात्रता होती है, वह दूसरों में एवं अपने में वैसा ही ऑब्जर्व करता है।

सीखने का सबसे बड़ा माध्यम है ऑब्जर्वेशन। एक लुहार का पुत्र अपने पिता को कार्य करता हुआ देखकर जल्दी ही उस कार्य को सीख लेता है। एक कृषक का पुत्र परिवारजनों के द्वारा किये जा रहे खेती के कार्यों को देखकर शीघ्र ही उन कार्यों को सीख लेता है। एक व्यापारी का पुत्र पिता के व्यापार के गुर को ऑब्जर्वेशन के माध्यम से शीघ्र आत्मसात् कर लेता है। भाषा का ज्ञान करना हो या तकनीकी काम सीखना हो सर्वत्र ऑब्जर्वेशन उपयोगी है। ऑब्जर्वेशन के बिना कोई श्रेष्ठ कवि, लेखक, चित्रकार या वक्ता नहीं हो सकता। स्वाध्याय एवं गुरु से प्राप्त शिक्षा के साथ स्वयं के द्वारा कृत ऑब्जर्वेशन से कार्य में मौलिकता का आधान होता है। महाकवि कालिदास हो या शेक्सपियर, कहानीकार प्रेमचन्द हो या कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर सभी ने ऑब्जर्वेशन के माध्यम से ही कुशलता को प्राप्त किया है। अच्छे अभियन्ता हों या वैज्ञानिक, अच्छे चिकित्सक हों या कुशल अध्यापक- सब ऑब्जर्वेशन की सूक्ष्मता एवं तटस्थता के माध्यम से अपने कार्य में श्रेष्ठता का अर्जन करते हैं। चित्रों में भावनाओं की अभिव्यक्ति, कथाओं में जीवन के वास्तविक संवाद का सन्निवेश प्रेक्षण या ऑब्जर्वेशन के बिना सम्भव नहीं है।

हमारा व्यक्तित्व इस प्रेक्षण या अवलोकन स्वरूप ऑब्जर्वेशन से निर्मित होता है। हम क्या एवं कैसे ऑब्जर्व करते हैं इस पर ही निर्भर करता है कि हम क्या एवं कैसे बनेंगे। हमारी रुचि एवं योग्यता के अनुसार ही हम ऑब्जर्व करते हैं। रुचि के साथ हमारी दृष्टि की मलिनता या पवित्रता की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारी रुचि यदि संगीत में है तो हम लय, ताल,

आरोह, अवरोह आदि पर ध्यान देते हैं तथा उसे सीख लेते हैं। जिसकी रुचि संगीत में नहीं है, उसके समक्ष संगीत प्रस्तुत होने पर भी वह सीख नहीं पाता है, हाँ सुनने की रुचि होने पर उसे अच्छा बता सकता है। रुचि के बिना संगीत का कोई विशेष प्रभाव नहीं होता। पात्रता का अन्तर होने से भी ऑब्जर्वेशन में अन्तर आ जाता है। एक घटना को दो व्यक्ति देखते हैं, किन्तु दोनों उससे एक समान शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं। अनुभव के आधार पर पात्रता का विकास होता रहता है। एक बालक अपने माता-पिता के मनोभावों का ऑब्जर्वेशन नहीं कर पाता है, जबकि एक पत्नी अपने पति के मनोभावों को शीघ्र जान लेती है, यह अनुभव का भेद है। एक शिष्य अपने गुरु के इंगित एवं मनोभावों को जानकर तदनुसार प्रवृत्त हो जाता है। यह सूक्ष्म ऑब्जर्वेशन से ही सम्भव होता है।

प्रेक्षण बाहर भी होता है एवं भीतर भी। हम प्रायः बाह्य प्रेक्षण में लगे रहते हैं, अन्तः प्रेक्षण में हमारी रुचि नहीं होती। स्वयं के विकास में बाह्य प्रेक्षण की अपेक्षा अन्तःप्रेक्षण अधिक महत्त्वपूर्ण है। स्वयं की कमियों एवं कमजोरियों का बोध अन्तः प्रेक्षण से ही सम्भव होता है। यह बोध होने पर ही उन कमजोरियों एवं कमियों को दूर किया जा सकता है। अन्तःप्रेक्षण में ध्यान-साधना अतीव उपयोगी है। ध्यान में विभिन्न संवेदनाओं एवं विकारों का प्रेक्षण सम्भव है। अपने सामर्थ्य की अभिवृद्धि एवं आत्म-विश्वास के लिए भी अन्तः प्रेक्षण उपयोगी होता है। प्रभु महावीर हों या अन्य कोई साधक, वे अन्तःप्रेक्षण के माध्यम से ही मोह कर्म एवं ज्ञानावरणादि कर्मों पर विजय प्राप्त कर केवलज्ञानी बने हैं। हम आत्म-निरीक्षण एवं प्रेक्षण की क्रिया जितने तटस्थ होकर करेंगे, उतने ही हम अपना भीतरी परिमार्जन करने में सक्षम होंगे। क्रोध क्यों उत्पन्न हुआ, उसके कारणों का प्रेक्षण करने पर उन कारणों को दूर करने का संकल्प उत्पन्न हो सकता है। मान या अहंकार कैसे घेर लेता है, इसका प्रेक्षण करने पर उस पर विजय प्राप्त करने का मार्ग मिल सकता है। इसी प्रकार अन्य-अन्य कषायों पर भी विजय पायी जा सकती है। आचारांग सूत्र में कहा गया है- जो अपने क्रोध को देखता है, वह मान, माया एवं लोभ कषायों को भी देखने में समर्थ हो जाता है। संयम में शिथिलता का भाव आया, उसको देख लिया तो वह भाव शिथिल हो सकता है एवं संयम में दृढ़ता आ सकती है। इसलिए स्वयं का स्वयं के द्वारा ऑब्जर्वेशन किया जाना स्व-सुधार एवं आत्म-विश्वास हेतु आवश्यक है।

दृष्टि मलिन हो तो ऑब्जर्वेशन से दोषों में भी अभिवृद्धि हो सकती है। टी.वी. में दिखाए जाने वाले अनेक कार्यक्रमों को देखकर लोग हत्या, आत्महत्या, चोरी, लूटपाट आदि के गुर भी सीखते हैं। इसलिए ऑब्जर्वेशन के साथ दृष्टि की पवित्रता भी आवश्यक है। ऑब्जर्वेशन से दुर्गुण एवं सद्गुण दोनों की वृद्धि सम्भव है, अतः हमें रुचि एवं दृष्टि को सम्यक् बनाकर तटस्थ बुद्धि से ऑब्जर्वेशन करना चाहिए या फिर उसमें आत्म-विकास के गुर तलाशने चाहिए।

ऑब्जर्वेशन का दूसरा अर्थ है- देखरेख। अस्पताल में चिकित्सक कई बार कहते हैं- रोगी ऑब्जर्वेशन में है, अर्थात् उनकी देखरेख में है। वे या उनका नर्सिंग स्टॉफ रोगी की हर

घण्टे, आधे घण्टे में स्थिति देखता है तथा दवा के प्रभाव का भी मूल्यांकन करता है। इसी प्रकार एक बालक माता-पिता, परिवारजन या शिक्षक के ऑब्जर्वेशन में रहता है तो उसकी कमजोरियों एवं आदतों को सुधारा जा सकता है। उनके मनोभावों का वे मनोवैज्ञानिक ढंग से ऑब्जर्वेशन कर यदि व्यवहार करें तो उनमें उत्पन्न होने वाली विभिन्न बुरी आदतों से उन्हें बचा सकते हैं। माता-पिता जब किसी वस्तु को खाने के लिए शिशु से बार-बार आग्रह करते हैं तब शिशु क्या प्रतिक्रिया करता है, तथा जब उससे भोजन-सम्बन्धी आग्रह न किया जाए तो वह क्या प्रतिक्रिया करता है, इसको सूक्ष्मता से देखने पर ज्ञात होगा कि बालक से बार-बार आग्रह किए जाने पर वह नकारात्मक उत्तर देता है, और यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे आदत का रूप लेने लगती है, जो उस बच्चे के भविष्य के लिए हानिकारक सिद्ध होती है। बालक फिर हमारी बातों को नहीं मानने का आदी हो जाता है। बालक की आवश्यकता का ध्यान रखें परन्तु अधिक आग्रह नहीं करें तथा उसकी अनुचित मांग बार-बार पूरी न करें। इसके समाधान का मार्ग सही ऑब्जर्वेशन से प्राप्त हो सकता है। एक आचार्य एवं गणप्रमुख संत नवदीक्षित संत को अपनी देखरेख में रखकर किस प्रकार घड़ते हैं, यह द्रष्टव्य है। कोई स्वयं की देख-रेख भी कर सकता है। उसके लिए स्वयं पर पैनी नज़र होना आवश्यक है। इस प्रकार वह अपने को गुरुजनों की देख-रेख में रखकर भी स्वयं का सुधार कर सकता है, तो स्वयं की आदतों एवं हरकतों का स्वयं प्रेक्षण करके भी उनमें सुधार ला सकता है।

व्रत-नियम आदि की अनुपालना को अंग्रेजी में ऑब्जर्वेशन न कहकर ऑब्जर्वेन्स कहा जाता है। पाँच महाव्रतों की पालना साधु-साध्वी के द्वारा तथा बारह व्रतों की अनुपालना श्रावक-श्राविका के द्वारा करना उन्हें ऑब्जर्व करना है, यही ऑब्जर्वेन्स कहा गया है। विभिन्न व्रतों को ऑब्ज़र्व किया जाता है अर्थात् उनका पालन किया जाता है। हम संयम एवं व्रत-नियमों का पालन कर अपने जीवन को उन्नत बना सकते हैं।

हम विभिन्न घटनाओं, परिस्थितियों या कार्यों का प्रेक्षण करने के पश्चात् उनके सम्बन्ध में जो राय बनाते हैं उसे भी ऑब्जर्वेशन कहा जाता है। उस राय की अभिव्यक्ति टिप्पणी आदि के रूप में की जाती है वह भी ऑब्जर्वेशन है। हम वैसी ही राय बनाते हैं जैसा हम देखते हैं एवं विश्लेषण करते हैं। विश्लेषण में हमारी अपनी पूर्व की धारणा भी कार्य करती है। उस धारणा को पृथक् रखकर तटस्थ भाव से विश्लेषण करते हुए टिप्पणी की जाए तो वह अधिक फलदायी होती है।

ऑब्जर्वेशन के उपर्युक्त सभी अर्थ साधना की दृष्टि से उपयोगी हैं। सांसारिक घटनाओं का ऑब्जर्वेशन कर हम संसार एवं शरीरादि की अनित्यता का बोध कर सकते हैं। घर में परिवारजनों की लगातार हुई मौतों को देखकर बालक हस्ती के मन में संसार की अनित्यता की अवधारणा पुष्ट होती गई। फलस्वरूप उन्होंने अपनी माता रूपकंवर के साथ प्रव्रज्या अंगीकार

कर ली। अनाथी मुनि ने जब यह ऑब्जर्व किया कि उनकी अक्षिवेदना को परिवार का कोई सदस्य नहीं बाँट सका तथा वैद्य भी उसे ठीक न कर सके तो उन्होंने प्रव्रज्या का पथ अपनाने का निर्णय किया। भरत चक्रवर्ती ने आरिसा भवन में अपना रूप निहारते हुए एक-एक आभूषण उतारकर देखा तो जाना कि यह सौन्दर्य तो नकली है। उन्हें वैराग्य हो गया। अरिष्टनेमी ने विवाह के लिए बारात बनाकर जाते समय बाड़े में पशुओं को बंद देखा तो करुणा जाग उठी एवं विवाह का विचार त्याग दिया। राजकुमार सिद्धार्थ ने वृद्ध, रोगी, मृत पुरुषों को देखकर प्रव्रज्या अंगीकार कर ली एवं वे गौतम बुद्ध बन गए। मोहनदास गाँधी ने ग्राम की स्त्रियों को जब वस्त्राभाव में देखा तो उन्होंने मात्र एक धोती धारण करने का संकल्प ले लिया। इस प्रकार सम्यक् ऑब्जर्वेशन के प्रभावशाली परिणाम आते हैं।

सत्य को ऑब्जर्वेशन से जाना जा सकता है, बशर्ते इन्द्रियों के साथ चित्त की एकाग्रता हो, बुद्धि की जागरूकता हो तथा दृष्टि में तटस्थता हो। ऑब्जर्वेशन की दिशा सही न हो तो हम दूसरों के दोषों को देखकर दोषों की ही अभिवृद्धि करेंगे तथा मन को मैला बनाये रखेंगे। सही दृष्टि न हो तो बुरे कार्यों में एवं बुराइयों में व्यक्ति को रस आने लगता है, फलतः वह बुराइयों का पात्र बन जाता है, वहीं यदि उसमें दृष्टि की निर्मलता है तो वह सद्गुणों को पनपाने एवं सिंचित करने में आनन्द का अनुभव करता है। इसलिए आवश्यक है कि हम ऑब्जर्वेशन सही दृष्टि के साथ करने का प्रयत्न करें, जिससे हमारे जीवन एवं व्यक्तित्व का सुन्दर निर्माण हो सके।

कभी-कभी इन्द्रियों की शक्तिहीनता या उनमें आए दोष के कारण सही ऑब्जर्वेशन नहीं हो पाता है। सही ऑब्जर्व नहीं करके भी हम यदि तब ज़िद्द पर अड़े रहें तो यह उचित नहीं। कभी इन्द्रियाँ भी सही हों, किन्तु अन्य वैज्ञानिक या बाह्य कारणों से हम सही ऑब्जर्व नहीं कर पाते हैं, जैसे प्लेटफार्म पर दूसरी ट्रेन चलने पर भी हमें लगता है कि हमारी ट्रेन चल रही है। बिजली के बल्बों की सीरीज में बल्बों के निरन्तर जलते-बुझने पर भी हमें उनका सही बोध नहीं होता एवं रोशनी गमन करती हुई प्रतीत होती है। इन्द्रियों के द्वारा सीमित ज्ञान होना भी इसमें कारण है। कभी मन के एकाग्र न होने पर भी हमारा सही ऑब्जर्वेशन नहीं होता। तब हम कुछ का कुछ समझ लेते हैं। बुद्धि की जागरूकता भी ऑब्जर्वेशन में आवश्यक है। इससे इन्द्रियादि-जन्य अनेक भ्रान्तियों का निवारण भी होता है तथा तर्कपूर्वक स्थितियों का विश्लेषण भी सम्भव है, जो हमें वस्तुस्थिति का सही बोध कराता है। सबसे अधिक आवश्यक है भावों की तटस्थता। बिना पक्षपात के एवं बिना भावनाओं में बहे, हम वस्तुस्थिति को जानने का प्रयत्न करें तो ऑब्जर्वेशन सफल हो सकता है।

ऑब्जर्वेशन के साथ सकारात्मक सोच एवं तटस्थ दृष्टि हो तो इससे हम जीवन में बहुत कुछ सीख सकते हैं, क्योंकि यह सीखने का बहुत बड़ा माध्यम है। स्वयं के व्यक्तित्व के निर्माण में भी निज का एवं महापुरुषों के जीवन का ऑब्जर्वेशन सहायक सिद्ध होता है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिअ-सुप्पट्ठिओ।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, 20.37

अर्थ- आत्मा ही अपने दुःखों एवं सुखों का कर्त्ता तथा विकर्त्ता (भोक्ता, क्षयकर्त्ता) है। उन्मार्ग में प्रस्थित आत्मा अपना शत्रु तथा सन्मार्ग में प्रस्थित आत्मा अपना मित्र होता है।

विवेचन- आत्मा ही अपने सुख-दुःख का कर्त्ता एवं भोक्ता है, यह मान्यता कर्मसिद्धान्त का मूल आधार है। कर्मसिद्धान्त की अवधारणा इसी पर प्रतिष्ठित है कि आत्मा ही अपने सुख-दुःख का स्वयं जिम्मेदार है। इसका उत्तरदायित्व किसी अन्य को नहीं सौंपा जा सकता। यदि हम हमारे सुख-दुःख का कर्त्ता किसी अन्य को मानेंगे तो दुःख से रहित होने की सम्भावना समाप्त हो जाएगी, क्योंकि दूसरे लोग संसार में इतने हैं कि किसी न किसी के कारण हम दुःखी होते रहेंगे। ईश्वर को सुख-दुःख दाता मानने वाले भी उसे जीव के शुभ-अशुभ कर्मों के आधार पर सुख-दुःख देने वाला मानते हैं। अतः सुख-दुःख का कर्त्ता जीव स्वयं है, यह मान्यता ही उचित है। भारतीय दर्शनों में एक सांख्य दर्शन ऐसा है जो जीव (पुरुष) को अकर्त्ता एवं भोक्ता मानता है। इस मान्यता में यह विसंगति है कि जो अपने कर्मों का कर्त्ता नहीं है वह उनका फल भोक्ता कैसे हो सकता है?

जैनदर्शन आत्मवादी, लोकवादी, कर्मवादी एवं क्रियावादी है। शरीर में हमें चेतना (Consciousness) का अनुभव आत्मा के कारण ही होता है। शरीर छूटने पर भी आत्मा का अस्तित्व समाप्त नहीं होता। वह आत्मा अपने कृत कर्मों का फल भोग करने के लिए नाना योनियों में जन्म ग्रहण करता रहता है। वे नाना योनियाँ लोक में हैं। अतः जैन धर्म लोकवादी भी है। उसमें कर्मों के अनुसार फल भोग का विधान है, इसलिए जैन धर्म कर्मवादी भी है। कर्मों का अर्जन शुभाशुभ क्रियाओं से होता है, अतः जैनदर्शन क्रियावादी है। वह तपश्चर्या आदि की क्रियाओं से कर्मों की निर्जरा का भी निरूपण करता है।

गाथा में 'दुहाण' एवं 'सुहाण' शब्द मात्र दुःखों एवं सुखों के वाचक नहीं हैं, अपितु उपलक्षण से ये अष्टविध कर्मों का संकेत करते हैं। जीव आठों कर्मों का कर्त्ता है एवं फल भोक्ता है। ज्ञान पर आवरण हो या दर्शन पर, सुख का वेदन हो या दुःख का, दृष्टि का मोह हो या क्रोधादि कषायों का, मनुष्यायु हो या अन्य कोई आयु, मनुष्य गति एवं तत्सम्बन्धी शरीर आदि हो या अन्य गति एवं तत्सम्बन्धी शरीर आदि, उच्चता का अनुभव हो या हीनता

का, उदारता आदि गुणों में बाधा हो या शक्तिपूर्वक पुरुषार्थ में- सबका कर्त्ता जीव स्वयं है। वह अपने कृत कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त करता है।

सम्प्रति एक जैन विचारधारा यह प्ररूपणा करने लगी है कि आत्मा तो मात्र ज्ञाता-द्रष्टा है, कर्म आदि का कर्त्ता नहीं। यह निरूपण अथवा व्याख्या मूल जैन विचारधारा के अनुकूल नहीं है। समत्व की साधना के लिए आत्मा को निज-गुणों के आधार पर ज्ञाता-द्रष्टा मानना तो उचित है, किन्तु उसको रागादि का कर्त्ता भी न माना जाए तो जैन कर्म-सिद्धान्त विशृंखलित हो जाएगा। वे सांख्य दर्शन से प्रभावित होकर निश्चय नय से जीव को रागादि का अकर्त्ता एवं व्यवहार नय से कर्त्ता मानते हैं, किन्तु यह कथन शुद्ध जीवों पर तो लागू हो सकता है, संसारी जीवों पर नहीं, क्योंकि अपने रागादि एवं कर्मों का कर्त्ता जीव को नहीं माना जाएगा तो क्या अजीव को इनका कर्त्ता माना जाएगा? कर्मों से मुक्त शरीरधारी जीव को यह जिम्मेदारी लेनी होगी कि वह ही रागादि, क्रोधादि का कर्त्ता है एवं चाहे तो उन्हें छोड़ भी सकता है।

'विकत्ता' शब्द भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विकत्ता का संस्कृत शब्द 'विकर्त्ता' है। जो अपने कर्तृत्व से रहित हो जाए उसे विकर्त्ता कहते हैं (विगतं कर्तृत्वं यस्य सः)। कर्तृत्व से रहित होने का अभिप्राय है- बद्ध कर्मों से रहित होना। बद्ध कर्मों से रहित होने के दो उपाय हैं- 1. बद्ध कर्मों का फल भोग लेना, 2. तप आदि के द्वारा बद्ध कर्मों का क्षय कर देना। फल भोगने के कारण 'विकत्ता' शब्द का अर्थ 'भोक्ता' किया जाता है, जो जैनदर्शन के कर्म-सिद्धान्त के अनुकूल है। कर्तृत्व से रहित होने का एक उपाय तपस्या एवं समता भाव है। जब कर्मफल उदय में आए तब समत्व में रहकर कर्मों की निर्जरा की जाती है, जिससे कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं। कर्मक्षय करने की दृष्टि से जीव को क्षयकर्ता कहने में किसी प्रकार की बाधा नहीं है। विकर्त्ता का अकर्त्ता अर्थ इस अभिप्राय में ग्रहण किया जा सकता है कि आत्मा चाहे तो अपने कर्म का उपार्जन न करे एवं दुःख-सुख का उत्पादक कर्त्ता न बने। यह अकर्तृत्व भी समभाव में ही सम्भव है। आत्मा को पूर्णतः अकर्त्ता मानना उचित नहीं है, कथंचित् अकर्त्ता कहने में कोई दोष प्रतीत नहीं होता।

आत्मा ही अपना मित्र है एवं आत्मा ही अपना शत्रु है। वह ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना गुणग्राहक दृष्टि के साथ करता है तो वह सन्मार्ग में प्रस्थान करने के कारण अपना मित्र बन जाता है तथा दोष दृष्टि एवं शिथिलता का आचरण करते हुए वह उन्मार्ग में प्रस्थान करने के कारण अपना शत्रु बन जाता है। आचारांग में भी कहा है- तुममेव तुमं मित्तं किं बहिया मित्तमिच्छसि?'- हे आत्मन्! तुम ही तुम्हारे मित्र हो, बाहरी मित्र की क्यों इच्छा करते हो?।-**सम्पादक**

अमृत-चिन्तन

समाधि-मरण

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- अपना शरीर छूटने का काल नजदीक प्रतीत हो, उस समय ज्ञानदृष्टि को जागृत रखकर सोचना है कि शरीर और आत्मा अलग हैं। शरीर क्षणभंगुर एवं नाशवान है तो आत्मा अविनाशी एवं ज्ञानमय है। रोग-शोक शरीर को होते हैं, आत्मा को नहीं।
- मरण से दुनिया डरती है, परन्तु ज्ञानी मरण को महोत्सव मानते हैं। जैसे मुसाफिरखाने को मुसाफिर मुद्दत पूरी होते ही खुशी से छोड़ देता है, ऐसे ही ज्ञानी स्थिति पूरी होते ही स्वेच्छा से शरीर का परित्याग करने हेतु तत्पर रहता है।
- उत्तम मरण के लिए इन्द्रियों के विषय और मन की कलुषित वृत्तियों का सर्वथा परित्याग करके संसार के समस्त प्राणिसमूह से क्षमायाचना कर निरंजन निराकार परमात्मा के शुद्ध स्वरूप में ध्यान रखना ही कल्याण का मार्ग है।
- जीवनकाल में लगे दोषों का भगवत् चरणों में निवेदन कर हार्दिक प्रायश्चित्त, समस्त पापों का मनसा, वचसा, कर्मणा परित्याग, जीवमात्र से क्षमायाचना कर मैत्रीभाव, पुत्र, मित्र, कलत्र और इस शरीर तक से ममता का परित्याग कर समाधिमरण का वरण करना चाहिए।
- दुर्गुणी मानव परिग्रह के पीछे हाय-हाय करते मरता है। किन्तु ज्ञानी भक्त मरते समय सद्गुणों का धन संभालता है। अतएव लड़की जैसे ससुराल से पिता के घर जाने में प्रसन्नचित्त होती है, वैसे वह भी परलोक की ओर हँसते-हँसते जाता है और आनन्दित होता है। हर मानव को ऐसी ही साधना करनी चाहिए और ऐसी तैयारी रखनी चाहिए, जिससे कि वह हँसते-हँसते इस संसार से प्रस्थान कर सके।
- जीवन-सुधार से मरण-सुधार होता है। जिसने अपने जीवन को दिव्य और भव्य रूप में व्यतीत किया है, जिसका जीवन निष्कलंक रहा है, और विरोधी लोग भी जिसके जीवन के विषय में अंगुलि नहीं उठा सकते, वास्तव में उसका जीवन प्रशस्त है। जिससे अपने को ही नहीं, अपने पड़ौसियों को, अपने समाज को, अपने राष्ट्र को और समग्र विश्व को ऊँचा उठाने का निरन्तर प्रयत्न किया, किसी को कष्ट नहीं दिया मगर कष्ट से उबारने का ही प्रयत्न किया, जिसने अपने सद्विचारों एवं सद्आचार से जगत् के समक्ष स्पृहणीय आदर्श उपस्थित किया, उसने अपने जीवन को फलवान बनाया है। इस प्रकार जो अपने जीवन को सुधारता है वह अपनी मृत्यु को भी सुधारने में समर्थ बनता है, जिसका जीवन आदर्श होता है उसका मरण भी आदर्श होता है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

अहिंसा का सही स्वरूप जानिए

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा पल्लीवाल क्षेत्र में विचरण के समय ग्राम मण्डावर-दौसा में 16 मार्च 2015 को फरमाए इस प्रवचन का लेखन श्री अशोक कुमार जी जैन, संघमंत्री, महुवा द्वारा किया गया है।-सम्पादक

संसार के संसरण को मिटाकर अविचल पद पर विराजमान सिद्ध भगवन्तों, अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन के धारक अरिहन्त भगवन्तों, साधना-पथ पर चरण बढ़ाकर पाप का निरन्तर प्रत्याख्यान करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

संसारस्थ समस्त प्राणी, सुख से जीना चाहते हैं, दुःखी रहना और मरना कोई नहीं चाहता। दशवैकालिक सूत्र में उल्लेख मिलता है-

''सव्वे जीवावि इच्छंति, जीविउं न मरिज्जिउं।
तम्हा पाणवहं घोरे, निग्गंथा वज्जयंति णं।।''

अर्थात् सभी प्राणी जीने की इच्छा रखते हैं, मरना कोई नहीं चाहता है। मानव-समुदाय ही नहीं सभी जीव-जंतु जीना चाहते हैं। अतः उनकी हत्या करना निकृष्टतम कार्य है। आज विश्व में अहिंसा के महत्त्व को प्रश्रय न देने के कारण ही, देश-विदेश में साम्प्रदायिक हिंसा का वातावरण बन रहा है। धर्म, भाषा व प्रान्तवाद के नाम पर छाई संकीर्णता के परिणामस्वरूप देश में आये दिन हिंसा व अशान्ति की घटनाएँ घटित हो रही हैं। भगवान महावीर ने विश्व को अहिंसा के माध्यम से मैत्री और करुणा का पावन संदेश दिया। उन्होंने ''जिओ और जीने दो'' का कल्याणकारी सूत्र देकर विश्व-शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। उनके समक्ष उपस्थित होने वाली विविध जिज्ञासाओं के साथ एक जिज्ञासा यह भी प्रकट हुई कि संसार में प्रचलित अनेक धर्म, सम्प्रदाय, मत एवं पंथों में सर्वश्रेष्ठ धर्म कौनसा है? तो यही भाव प्रकट हुए कि-''जहाँ पूर्ण अहिंसा है, वहीं सर्वश्रेष्ठ धर्म है। जो केवली भाषित है और दया की प्रधानता वाला है, वही श्रेष्ठ धर्म है।'' प्रचलित धार्मिक विचारधाराओं में मुख्यतया वैदिक धर्म, ईसाई धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म आदि की गणना की जाती है।

इन सभी धर्मों एवं परम्पराओं में (जैन धर्म के अतिरिक्त) प्रायः स्थूल हिंसा अर्थात् चलते-फिरते प्राणियों का घात नहीं करना ही अहिंसा मानी गई है। सभी धर्म, प्रायः अहिंसा पर विशेष जोर देते हैं, परन्तु उनकी अहिंसा की व्याख्या में बहुत अंतर है। मैं यहाँ हिंसा नहीं

करने वालों को कतिपय वर्गों में विभक्त कर अपनी बात आपके समक्ष रख रहा हूँ।

प्रथम विचारधारा वाले वे लोग हैं, जो मानव-मात्र की रक्षा को ही धर्म के अंतर्गत लेते हैं। संसार में मनुष्य ही सुरक्षित रहें, ऐसी उनकी सोच है। मनुष्य को सुरक्षित रखने के लिए यदि अन्य त्रस प्राणियों का घात किया जाता है, तो वे उसे हिंसा का रूप नहीं मानते। इसीलिए तो वे त्रस प्राणियों को अचेतन कर, उनके अंग-प्रत्यंगों का परीक्षण कर, मानव को होने वाले रोगों से बचाव की विधि को समझने में विशेष रुचि से प्रयोग करते हैं। ऐसे लोग ड्राइंगरूम की शोभा बढ़ाने के लिए हिरण व खरगोश आदि की खाल को खरीदते हैं। हिरण के सींग और आँखें भी उपयोग में ली जा रही हैं। कहावत भी है- ''जीवित हाथी लाख का, मरा हुआ सवा लाख का'' हाथी को मारकर उसके दाँत की जो चूड़ियाँ बनती हैं, वे महंगें दामों में बिकती हैं। कस्तूरी मृग की नाभि में कस्तूरी होती है, वह भी महंगी बिकती है। ये सब वस्तुएँ, मात्र मानव के उपयोग में आने वाली हैं। त्रस तो एक दिन मरेगा ही, यदि उपयोगिता हो, तो मारने में हिंसा थोड़े ही लगती है। मानवों की रक्षा के नाम पर, त्रस जीवों की हिंसा भी यदि होती है तो उसे अनुचित नहीं माना जाता। बहुधा ईसाइयों की ऐसी ही सोच है। ईसाई धर्म, अहिंसा को मानव तक ही सीमित रखता है।

द्वितीय वर्ग में वे लोग आते हैं जो उपयोगी पशुओं के रक्षण में ही धर्म मान रहे हैं। गाय, भैंस, बकरी, जब तक दूध देती है, बछड़ा-बैल, ऊँट आदि जब तक कार्य के लिए उपयोगी रहते हैं, तब तक उनका पालन किया जाता है। अनुपयोगी होने के पश्चात् उन्हें कत्लखाने भिजवा दिया जाता है। यानी दूध देने तक तो सार-संभाल करो, उसके बाद कत्लखाने भिजवाने में हिंसा नहीं मान रहे हैं। इसी तरह चूहों व मच्छरों को भी बेरहमी से मारने वाले, उसे हिंसा का रूप नहीं मान रहे। सर्प और बिच्छू आदि ज़हरीले जानवरों को मारना उन अज्ञानियों के मत में हिंसा नहीं है।

तृतीय वर्ग की विचारधारा वाले वे लोग हैं, जो त्रस प्राणियों के रक्षण को धर्म मानते हैं। वैष्णव धर्म की अहिंसा त्रस प्राणियों तक सीमित है। गाय, कुत्ते, कीड़ियों आदि को तो बचाने का वहाँ प्रयास किया जाता है, परन्तु स्थावर काय को जीव स्वीकार नहीं करते। उन्होंने पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु एवं आकाश को पंच महाभूत से अभिहित किया है। ''दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।'' जिनका ऐसा सिद्धान्त है, वे त्रस प्राणियों का वध करने में हिंसा मानते हैं- पर मूर्तियों का प्रक्षालन कर अप्काय के जीवों की विराधना कर रहे हैं। वनस्पतिकाय के फूल तोड़कर चढ़ा रहे हैं। आम के पत्तों की बाँदनवार जन्माष्टमी के दिन दरवाजे पर लगाते हैं। शिव पूजा में बिल्व पत्र से पूजा करते हैं। केले के पत्तों से दरवाजे बनाकर कथा आदि प्रसंगों पर सजावट करते हैं। ब्रह्ममुहूर्त्त में स्नान को धर्म

की संज्ञा दे रहे हैं, अग्नि में हवन करते हैं। इन विविध कर्मकाण्डों से एकेन्द्रिय प्राणियों की घात होती ही है। प्राणी चाहे एकेन्द्रिय हो या त्रस हो, जीव सभी में होता ही है। एकेन्द्रिय प्राणियों में पृथ्वीकाय आदि पाँच प्रकार के जीव हैं। पृथ्वीकाय के अंतर्गत गीली मिट्टी खोदना या उस पर चलना, खुदवाने का संकेत करना व खोदते हुए की अनुमोदना करना, अच्छा बताना, ये सब हिंसा के कारण हैं। इसी तरह शेष चार को समझना चाहिए। वनस्पति में जीव होता है, यह सब स्वीकार करते हैं, पर उनको घात पहुँचाने में हिंसा नहीं मान रहे।

आज का युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान भी वनस्पति में जीव स्वीकार करता है। जैन-साधु वनस्पति के किसी पत्ते को भी स्पर्श नहीं करते। वायु, मिट्टी, अग्नि, पानी में भी जीव है। अतः जैन श्रमण कभी पंखा नहीं झलते हैं। वे तीन करण, तीन योग से अहिंसा का पालन करते हैं। एक बूँद पानी में असंख्यात जीव होते हैं। फिर फूल चढ़ाना, धूप-बत्ती जलाना, दीपक जलाना, मूर्ति का प्रक्षालन करना, इनमें कौनसा धर्म है? इन सभी कृत्यों में तो, धर्म के नाम पर हिंसा हो रही है। मैं पहले भी कह गया हूँ- "मूर्ति-पूजा" में धर्म नहीं है।

जैनागम भगवती सूत्र में गौतम गणधर ने प्रभु महावीर से 36000 प्रश्न पूछे, उनमें कहीं भी मूर्ति-पूजा से सम्बन्धित कोई प्रश्न नहीं है। जैन श्वेताम्बर परम्परा के 32 आगमों में कहीं भी मूर्ति पूजा का वर्णन नहीं आता है। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा रचित 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' प्रथम भाग में सभी तीर्थंकर भगवन्तों का विस्तारपूर्वक वर्णन है। सभी आम्नाओं का विवेचन है- कहीं भी मन्दिर, मूर्ति या मूर्ति-पूजा का वर्णन नहीं आया है। भगवान महावीर के जीवन-दर्शन का मैंने भी विस्तृत अध्ययन किया है। यदि उस समय मन्दिर होते तो तीर्थंकर भगवंत उनमें ही ठहरते, अन्यत्र क्यों रुकते? जब मन्दिर या मूर्ति ही नहीं थी, तो उनकी पूजा का प्रश्न ही नहीं उठता है।

"धर्म के नाम पर हिंसा की जाती है- वह धर्म नहीं है। कोई भी धर्म हिंसा करने की बात नहीं कहता। फिर जैन धर्म में तो छःकाया के जीवों की हिंसा को भी हिंसा माना जाता है। हिंसा को सबसे बड़ा पाप कहा गया है और सबसे बड़ा धर्म जीवों पर दया करना, जीवों की रक्षा करना, जीवों को बचाना ही भगवान ने फरमाया है। "जहाँ पूर्ण अहिंसा है, वहाँ सर्वश्रेष्ठ धर्म है।" विश्व के विभिन्न पंथों, सम्प्रदायों, धर्म-मतों में अनेक पक्षों को लेकर कुछ न कुछ अन्तर मिलेगा- जबकि सभी धर्म अहिंसा पर जोर देते हैं। परन्तु जैन-धर्म, पूर्ण अहिंसा पर बल देता है। जैन-धर्म में प्राणिमात्र के लिए अहिंसा के पालन का विधान है। जैनधर्म में छोटी से छोटी हिंसा भी त्याज्य मानी गई है। धर्म के नाम पर आडम्बर-प्रदर्शन, मन्दिर व स्थानक आदि बनवाने की प्रेरणा करना भी जैन-साधु के लिए वर्जनीय माना है।

धर्म में हिंसा को कोई स्थान नहीं है। भगवान महावीर ने अहिंसा को धर्म बताया है।

दशवैकालिकसूत्र की प्रथम गाथा में कहा है- "धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।" अर्थात् धर्म उत्कृष्ट मंगल है, जिसमें अहिंसा की प्रधानता रही हुई है। अहिंसा ही जीवन का भव्य मार्ग एवं संजीवनी शक्ति है। अहिंसा है तो दया है और दया है वहाँ अहिंसा है। जीव-दया के बिना धर्म की महिमा नहीं है।

मैं अपनी बात पर आ रहा हूँ- कुछ परम्पराओं में ऐसा माना जाता है कि रावण ने तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा के सामने भक्ति की। भक्ति में वीणा बजाते-बजाते एकाग्र हो गया, वीणा का तार टूट गया, तब रावण ने अपनी आँते निकालकर वीणा के तार जोड़े और तीर्थंकर की प्रतिमा के सामने भक्ति की। इससे उसे तीर्थंकर गोत्र की प्राप्ति हुई। क्या यह मान्यता उपयुक्त है? वास्तव में रावण के तीर्थंकर गोत्र बंधने का कारण तीर्थंकर की प्रतिमा के सामने वीणा बजाना और वह भी आँत से वीणा बजाना नहीं है। तीर्थंकर गोत्र उत्कृष्ट पुण्य-प्रकृति है। जब कोई जीव, सर्व जीवों के कल्याण की भावना से अपने स्वयं के दुःखों को छोड़कर उत्कृष्ट भाव से अरिहंत आदि की भक्ति करता है, और उत्कृष्ट रसायन आता है तो तीर्थंकर गोत्र बंधता है। रावण के तीर्थंकर गोत्र बंधने में तीर्थंकर प्रतिमा कारण नहीं, किन्तु वास्तविक कारण तो उत्कृष्ट भावपूर्वक की गई भक्ति है। ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र में तीर्थंकर प्राप्ति के 20 बोलों का वर्णन मिलता है। वहाँ उल्लेख है कि अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु आदि का कोई तल्लीन होकर भक्तिपूर्वक गुणगान करे एवं उत्कृष्ट रसायन आ जाये तो वह जीव तीर्थंकर गोत्र का बंध कर लेता है।

लोग कहते हैं कि साधु स्नान नहीं करते, इसलिए मूर्तिपूजा नहीं करते। मैं उनसे पूछता हूँ कि ऐसा कौन से आगम में लिखा हुआ है? लोग पहले धर्मार्जन के लिए प्राण देते थे, आज धर्मार्जन के नाम पर, स्थावर काय की हिंसा कर प्राण ले रहे हैं। उदाहरण सुनाऊँ- "शांतिनाथ भगवान ने राजा मेघरथ के अपने पूर्व भव में शरणागत कबूतर की रक्षा करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाई। अपने शरीर का मांस देने को तत्पर हो गये। यहाँ तक कि सम्पूर्ण शरीर को समर्पित करके भी शरणागत की रक्षा की। उसी शरणागत-वत्सलता के उत्कृष्ट भावों से उन्होंने तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया। सुख-विपाक सूत्र में वर्णन है कि मेघ कुमार ने सुमेरुप्रभ हाथी के अपने पूर्व भव में एक खरगोश की जान बचाई। हाथी के भव में अढ़ाई दिन-रात तक अपने एक पाँव को ऊपर किये रखा, और उस पाँव के नीचे बैठे खरगोश की रक्षा की। अपने शरीर का, अपनी सुख-सुविधा का, अपने प्राणों का, मोह त्याग कर जीव की रक्षा करने, दया करने से उसे समकित की प्राप्ति हुई और राजकुमार बना। हाथी ने किसी साधु की भक्ति नहीं की, न ही किसी तीर्थंकर की भक्ति की, केवल जीव दया के कारण पुण्य का अर्जन किया। जैन धर्म में हिंसा करना, कराना, अनुमोदन करना

तीनों ही निषिद्ध हैं। जीवन का आध्यात्मिक विकास हिंसादि पाप के त्याग से ही संभव है। अहिंसा-धर्म की आराधना, दूसरे के दुःख को अपना दुःख समझने पर ही संभव है।

राजकुमार खंदक ने राज दरबार में काचरे का खोल उतारने पर खुशी जाहिर की, अनुमोदना की, अगले भव में खंदक ऋषि के रूप में सम्पूर्ण शरीर की खाल उतरवानी पड़ी। भगवान महावीर द्वारा मरीचि के भव में कुलमद किया गया, उच्च कुल का अभिमान-अहंकार आ जाने से 27 भव तक नीच गोत्र में जन्म लेना पड़ा। राजा वसु का सिंहासन जमीन से सात हाथ ऊँचा था। किन्तु 'अज' शब्द का अर्थ समझने में अनर्थ कर दिया, जिससे पशु-बलियाँ प्रारम्भ हो गई और हिंसा के परिणामस्वरूप उसका सिंहासन जमीन पर गिर गया। प्राणियों पर अनुकंपा करना समकित का प्रमुख लक्षण है। वही साधना-आराधना उपादेय कही जा सकती है, जो सावद्य न हो, पूर्ण अहिंसक हो, जिसमें किसी जीव की विराधना नहीं हो, वही आराधना आचरण करने योग्य है। सच्चे जैन-साधु अपने भक्तों को उसी बात का उपदेश देते हैं, जिनका वे स्वयं अपने जीवन में पालन करते हैं। साधु, मन-वचन-काया से हिंसादि सावद्य कार्य की प्रेरणा भी नहीं करते हैं।

सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं का कर्त्तव्य है कि वे अपने जीवन में ऐसी साधना-पद्धति को अपनायें, जिसमें किसी की हिंसा न हो।

वर्तमान समय में धर्म-परिवर्तन की बातें भी पढ़ने-सुनने को अधिक मिलती है। जहाँ कहीं भी धर्म-परिवर्तन हो रहा है अथवा हुआ है, उसके दो मुख्य कारण हैं- 1. भय और 2. प्रलोभन। इतिहास साक्षी है कि शंकराचार्य ने जैन धर्म के उपासरों को तुड़वाकर मन्दिर बनवा दिये। मुस्लिम शासकों ने मन्दिरों को तुड़वाकर मस्ज़िदें बनावा दी। अनेक स्थानों पर तो हजारों की संख्या में जैन साधुओं को समाप्त कर दिया। कभी एक युग ऐसा भी रहा, जब डण्डे के जोर पर (भय से) धर्म बदलवाया जाता था। वर्तमान में भय के कारण तो धर्म-परिवर्तन कम हो रहा है, किन्तु प्रलोभन के कारण धर्म-परिवर्तन अधिक दिखाई देता है। अनेक हिन्दू परिवार धन के लालच में ईसाई बन रहे हैं, तो कई सुख-सुविधाओं के आकर्षण में फँसकर अपना धर्म-परिवर्तन कर लेते हैं। यही कारण है कि अनेक हिन्दू ईसाई बन गये हैं।

मुसलमानों में 'लव-जिहाद' चल रहा है। जिसमें मुस्लिम लड़के जैन लड़कियों से प्रेम करने का नाटक करते हैं। जैनों की लड़कियों के लिए सात लाख, वैश्य परिवार की लड़कियों के लिए पाँच लाख, ब्राह्मण परिवार की लड़कियों के लिए तीन लाख रुपयों का प्रलोभन देकर अपने जाल में फँसा लेते हैं और वेश्यावृत्ति के लिए प्रेरित करते हैं। कुछ समय बाद उन लड़कियों से वेश्यावृत्ति आदि अनैतिक कार्य करवाते हैं।

सुनी हुई एक घटना है- एक व्यक्ति, एक जैन बच्ची को दो वर्ष पहले अरब ले गया।

वहाँ से पाकिस्तान ले गया। वह व्यक्ति स्वयं खड़ा होकर वेश्यावृत्ति कराता था। लड़की पश्चात्ताप करती है, मैं मरना चाहती हूँ, गलती मेरी है- दोष किसी का नहीं। मैं प्रेम में आकर इनके चंगुल में फँस गई। समझाने पर उस जैन परिवार ने उस लड़की को घर में रखा। अब वह लड़की साधना करके साधु की तरह घर में ही जीवन-व्यतीत कर रही है। प्रलोभनों में आ रहे लोग, स्वयं के एवं दूसरों के शील-सदाचार को संकट में डाल रहे हैं। स्कूल और कॉलेजों में अनुचित और अनैतिक कार्य हो रहे हैं। यह पंचेन्द्रिय की घात है, जो यहाँ हिंसा के अन्तर्गत आती है। हमारे धर्म में तो कभी भी हिंसा को स्थान नहीं है। आज क्या दशा हो रही है? आप लोगों के लिए चिंतनीय विषय है।

कल जयपुर से एक सज्जन आये, बोले महाराज! अब मार्च के महीने में भी बरसात हो रही है। वस्तुतः उनका कथन सही था। आप सभी देख रहे हैं प्रकृति में भारी उथल-पुथल हो रही है, समय-असमय प्राकृतिक आपदाएँ आ जाती हैं। प्रमाण है चैत्र मास में भी वर्षा हो रही है। यह कलियुग की निशानी है, पाप का उदय है। अकाल में वर्षा हो रही है, और जब वर्षा का काल होता है तब वर्षा नहीं होती है। यह इस बात का संकेत है कि आज का मानव अपनी मर्यादा, अपने नियम और अपने आचरण को भूलता जा रहा है। ज्यों-ज्यों पाप बढ़ रहे हैं, त्यों-त्यों प्रकृति बदल रही है। पहले राजा दयालु होते थे। प्रजा भी दयालु थी। तब कभी भी अकाल नहीं पड़ता था। व्यक्ति ज्यों-ज्यों हिंसक होने लगे, प्रकृति ने भी कहर ढहाना शुरु कर दिया। धन की प्राप्ति के लिए, पद-प्रतिष्ठा के लिए, सुख-सुविधा और भोग-विलास के लिए, आज का मानव अनैतिक, क्रूर व हिंसक कार्यों को करने में अत्यधिक रुचि ले रहा है। जब मानव ने अपनी मर्यादाएँ सुरक्षित नहीं रखी, खान-पान, रहन-सहन विकृत बना दिया तो उसके परिणामस्वरूप प्रकृति भी रूठ गयी। इस कारण प्रकृति को बदलने के बजाय अपने आपको बदलो। पापी एक होता है, एक के पीछे सबको उसका दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है। कहावत भी है- "एक चन्द्रमा, नो लख तारा। एक सती, नगर सारा।।" नौ लाख तारे प्रकाश नहीं कर पाते, जबकि एक चन्द्रमा सबको प्रकाशित कर देता है और एक ही सती अपने शील से नगर के द्वार खोल देती है, दूसरे शब्दों में कहा जाय तो वह अपने शील की सौरभ से नगर की ख्याति को दूर-दूर तक प्रसारित कर देती है।

हिंसा करने वाले कभी सुखी नहीं रह सकते हैं। जिन जीवों की आप रक्षा करोगे, वे दुआ देंगे। जिस पीड़ा, विनाश या हिंसक क्रियाओं को तुम अपने लिए नहीं चाहते, वह अन्य को कैसे रुचिकर होगी? जिस दया-पूर्ण जीव-रक्षा या अहिंसा के व्यवहार को तुम अपने लिए पसंद करते हो, वही व्यवहार दूसरे प्राणियों के साथ करो। किसी को प्राण रहित कर देना तो शक्य है, पर प्राण-दान करना, मृत को पुनजीर्वित करना किसी के वश की बात

नहीं है। अहिंसा-प्रधान इस देश में 61 लाख टन मांस का निर्यात होता है। लाखों पशुओं को प्रतिदिन मौत के घाट उतार दिया जाता है। व्यापार में मिलावट, भ्रूण हत्या, दुराचार, पहाड़ों का खनन, जल का दोहन, कम्प्यूटर का प्रचलन, पेड़ों का कर्तन, बेईमानी का चलन आदि सभी कारोबारों में अधर्म का ही बोल-बाला है। अनैतिक आचरण एवं पाप-कार्यों की इस युग में वृद्धि हो रही है। फिर बताइये प्रकृति क्यों नहीं रूठेगी? आवश्यकता है, मानव अपनी मर्यादा में कायम रहे, सदाचार का पालन करे, तभी प्रकृति भी आपका सहयोग कर पायेगी। प्रकृति तो अजेय है- इस पर विजय पाना कठिन है। प्रकृति अपने सही मार्ग पर है। प्रकृति को दोष देने के बजाय स्वयं को सुधारो।

आत्म चिंतन करो, धर्म के मर्म को समझो, मूल में भूल मत करो, अंतरमन में झाँककर देखो, सही क्या है? गलत क्या है? सही निर्णय को स्वीकारो, जीवों की दया पालो, हिंसा के कार्यों को त्यागो, धर्म के नाम पर पूजा-पाठ आदि में हिंसा मत करो। पूर्ण अहिंसक बनने की शुभ-भावना के साथ उसके लिए सद्-प्रयास करो- जिससे आत्म-कल्याण का पथ-प्रशस्त हो सकेगा, ऐसी मंगल मनीषा है। ■

'जिनवाणी' पर अभिमत

श्री गौतमचन्द गाँधी

जिनवाणी हिन्दी मासिक का मार्च-2015 का अंक प्राप्त हुआ। 'अपरिग्रह का प्रयोजन' शीर्षक से प्रकाशित डॉ. धर्मचन्द जी जैन का संपादकीय पढ़कर मन अभिभूत हो गया। आपने सही लिखा है कि धन एवं पदार्थों के संग्रह में लगे रहने से संवेदनशीलता प्रायः समाप्त हो जाती है। आपने अपने आलेख में 'अधिक इच्छाओं वाले' या 'परिग्रही मानव का जीवन' के जो ग्यारह बिन्दु तथा 'अल्प इच्छाओं वाले' या 'परिग्रह परिमाणकर्ता मानव का जीवन' के जो ग्यारह बिन्दु अपने शब्दों में व्यक्त किये हैं, वे आज के मानव पर शत-प्रतिशत खरे उतरते हैं। डॉ. साहब के इस संपादकीय को यदि हम एकाग्र होकर पढ़ें तो निश्चित रूप से हमें जीवन जीने का सही मार्ग मिल सकेगा। यह संपादकीय आमजन को यह सोचने के लिए विवश कर देने के लिए ही काफी है कि उसे जीवन जीने के लिए कितनी वस्तुओं की महती आवश्यकता है। यह संपादकीय धनी, मध्यम और निर्धन वर्ग के लिए एक नयी राह दिखाने वाला है। यदि हम उनके शब्दों को अंगीकार कर लें तो निश्चित रूप से हमारी कामयाबी के प्रतिशत का ग्राफ शीघ्र ऊपर की ओर बढ़ेगा।

-'आशीर्वाद', प्लॉट नं. 60, अमरावती नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राज.)

शोधालेख

श्रावक-प्रतिमा : एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेशमुनि शास्त्री

साधक की योग्यता को संलक्ष्य में रखकर ही साधना-पद्धति के भिन्न-भिन्न रूप उजागर हुए हैं। विविध सोपान निर्मित हुए हैं। श्रावक की साधना के तीन रूप हैं- दर्शन श्रावक, व्रती-श्रावक और प्रतिमाधारी-श्रावक। यह महत्त्वपूर्ण क्रम उत्तरोत्तर साधना-पद्धति का विकसित रूप है। दर्शन श्रावक बने बिना कोई व्रती श्रावक नहीं बन सकता और बिना व्रती बने प्रतिमाधारी नहीं बन सकता। श्रावक सुदीर्घकाल तक व्रतों का सम्यक् प्रकार से पालन करता हुआ त्याग-धर्म की ओर प्रतिपल-प्रतिक्षण बढ़ता है। फिर एक दिन अपने कुटुम्ब का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सन्तान को समर्पित कर और स्वयं पौषधशाला में जाकर समूचा समय धार्मिक-क्रियाओं में व्यतीत करता है, सम्यक् प्रकार से नियमोपनियमों का पालन करता है।

प्रतिमा का अर्थ है- प्रतिज्ञा-विशेष, व्रत-विशेष[1], तप-विशेष, साधना-पद्धति। प्रतिमा स्थित साधक श्रमण के समान व्रत-विशेषों का पालन करता है। उसका जीवन एक तरह से श्रमण-जीवन की प्रतिकृति है।[2] प्रतिमा के ग्यारह भेद हैं- 1. दर्शन, 2. व्रत, 3. सामायिक, 4. पौषध, 5. सचित्त-त्याग, 6. रात्रिभुक्ति-त्याग, 7. ब्रह्मचर्य, 8. आरम्भ त्याग, 9. परिग्रह त्याग, 10. अनुमति त्याग, 11. उद्दिष्ट त्याग।

1. **दर्शन प्रतिमा-** इस प्रतिमा को धारण करने वाला श्रावक देव, गुरु की उपासना करता है। श्रमण-धर्म और श्रावक-धर्म पर उसकी अत्यन्त निष्ठा होती है। यह प्रतिमा सम्यग्दर्शन की सुदृढ़ नींव पर अवस्थित है। जिस पर ही व्रतों का अति भव्य प्रासाद अवलम्बित है। श्रावक (पंचम गुणस्थान में स्थित) इस प्रतिमा की निरतिचार आराधना करता है। प्रस्तुत प्रतिमा की आराधना अविरत सम्यग्दृष्टि (चतुर्थ गुणस्थान में स्थित) भी कर सकता है। जिसने क्षायिक सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया है, वह यह प्रतिमा धारण नहीं कर सकता। क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्वधारी का सम्यक्त्व निर्मल होता है। उसको अतिचार नहीं लगता है तथा औपशमिक सम्यक् दर्शनधारी भी यह प्रतिमा धारण नहीं कर सकता है। क्योंकि औपशमिक सम्यक्त्व की स्थिति केवल अन्तर्मुहूर्त की होती है। इस प्रकार क्षायोपशमिक सम्यक्त्वी ही प्रस्तुत प्रतिमा धारण करता है।[3]

2. **व्रत प्रतिमा–** अतिचार रहित पंच अणुव्रतों का सम्यक् प्रकार से पालन करना, उसमें किसी भी प्रकार का दोष नहीं लगने देना व्रत प्रतिमा है।[4] इस प्रतिमा का धारक तीनों शल्यों (मिथ्यात्व, माया, निदान) से मुक्त होता है। वह शीलव्रत, गुणव्रत, प्रत्याख्यान आदि का भी अभ्यास करता है। द्वादश व्रतों में आठवें व्रत तक तो वह नियमित रूप से पालन करता है, परन्तु सामायिक, देशावकाशिक व्रतों की आराधना परिस्थिति के कारण नियमित रूप से नहीं भी कर पाता है। पर उसकी श्रद्धा-प्ररूपणा सम्यक् होती है। सामान्य श्रावक अणुव्रत और गुणव्रत को धारण करता भी है और नहीं भी करता है। जबकि व्रत प्रतिमा में अणुव्रत और गुणव्रत धारण करना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। प्रतिमाधारी में भावशुद्धि अधिक होती है।
3. **सामायिक प्रतिमा–** अपने अपूर्व बल और उल्लास से पूर्व-प्रतिमाओं का सम्यक् प्रकार से पालन करने वाला साधक अनेक बार सामायिक की साधना करता है। देशावकाशिक व्रत का भी पालन करता है। दिगम्बर ग्रन्थ रत्नकरण्डक श्रावकाचार के अनुसार इस प्रतिमा में जो सामायिक होती है, वह 'यथाजात' होती है। यथाजात से तात्पर्य है- नग्न होकर सामायिक की जाय। तीन बार दिन में दो-दो घड़ी तक नग्न रहने से आगे चलकर वह साधक दिगम्बर श्रमण बन सकता है।[5]
4. **पौषध प्रतिमा–** पौषध ग्यारहवाँ व्रत है और प्रतिमा की दृष्टि से वह चतुर्थ प्रतिमा है। व्रत में देशतः पौषध भी कर सकता है, किन्तु प्रस्तुत प्रतिमा में प्रतिपूर्ण पौषध करने का विधान है। श्रावक अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णमासी प्रभृति पर्व दिनों में प्रतिपूर्ण पौषधोपवास करे।[6] पौषधोपवास के दिन श्रावक श्रमण के समान आरम्भ आदि का त्याग कर धर्म-ध्यान करता है।
5. **नियम–** प्रस्तुत प्रतिमा में श्रावक विविध-नियमों को ग्रहण करता है। उन में पाँच बातें मुख्य हैं-

   1. स्नान नहीं करता है।
   2. रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्याग करता है।
   3. धोती की लांग नहीं लगाता है।
   4. दिन में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता है।
   5. रात्रि में मैथुन की मर्यादा करता है।

   एक रात्रि की प्रतिमा का भी भली-भांति पालन करता है। इस तरह वह विविध नियमों को ग्रहण करता है। एक माह में एक रात्रि कायोत्सर्ग की साधना करता हुआ व्यतीत

करता है। इसमें श्रद्धा, धृति, संवेग, और संहनन के अनुसार धर्म-ध्यान की आराधना की जाती है।

भोज्य पदार्थ के सचित्त और अचित्त ये दो प्रकार हैं। श्रमण धर्म को ग्रहण करने की निर्मल भावना वाला श्रावक जीव-रक्षा के लिये और राग-भाव के परिहारार्थ सचित्त फल, शाक आदि पदार्थों का यावज्जीवन के लिये त्याग करता है। प्रस्तुत प्रतिमाधारी श्रावक सचित्त जल का उपयोग न पीने के लिये करता है। न स्नान के लिये करता है और न वस्त्र प्रक्षालन के लिये करता है। इस प्रतिमा का नाम "सचित्त त्याग" भी है। इस प्रतिमा के विषय में स्पष्टतः उल्लेख है- रोगादि होने पर उसके शमनार्थ- रात्रि में गन्ध माल्यादि विलेपन और तेलाभ्यंगन भी नहीं करना चाहिये।[7]

6. **ब्रह्मचर्य-** पाँचवीं प्रतिमा में श्रावक दिवा मैथुन का परित्याग करता है, पर रात्रि में इसका नियम नहीं होता। किन्तु प्रस्तुत प्रतिमा में चाहे दिन हो, चाहे रात्रि हो, वह मन, वचन और काया से पूर्णतया अब्रह्म का त्याग करता है। वह पूर्ण जितेन्द्रिय बन जाता है वह दृढ़ता से ब्रह्मचर्य तप की आराधना करता है। ब्रह्मचर्य को सभी तपों में श्रेष्ठ माना हैं।[8] ब्रह्मचर्य एक विशिष्ट प्रतिमा है। जो एक ब्रह्मचर्य की आराधना कर लेता है वह समस्त नियमों की आराधना कर लेता है।[9] वास्तविकता यह है कि ब्रह्मचर्य धर्म ध्रुव है, नित्य है, शाश्वत है, जिनदेशित है। पहले भी प्रस्तुत धर्म का पालन कर अनेक जीव सिद्ध हुए हैं, अभी होते हैं और आगे भी होंगे।[10] इसकी साधना वासना-विजय की साधना है। यह व्रतों का सरताज है, मुकुटमणि है।

7. **सचित्तत्याग-प्रतिमा-** इस प्रतिमा का धारक यावज्जीवन के लिये सभी प्रकार के सचित्त आहार का त्याग कर अचित्त आहार को ग्रहण करता है। जो आहार भक्ष्य व अचित्त हो, उसे ही प्रस्तुत प्रतिमाधारी श्रावक ग्रहण कर सकता है। जो आहार सचित्त हो, उसे वह ग्रहण नहीं कर सकता। जैसे गुठलीयुक्त आम, गुठलीयुक्त पिण्डखजूर, बीज युक्त मुनक्का आदि।

8. **आरम्भ-त्याग प्रतिमा-** सचित्त त्याग के बाद सभी प्रकार के सावद्य आरम्भ का त्याग किया जाता है। आरम्भ शब्द का अर्थ है हिंसात्मक क्रिया। श्रावक संकल्प पूर्वक त्रस जीवों की हिंसा नहीं करता। किन्तु कृषि, वाणिज्य, अन्य व्यापार और घर-गृहस्थ के कार्यों को करते हुए षड्काय के जीवों की हिंसा हो जाती है। प्रस्तुत प्रतिमा में उन हिंसाओं से बच जाता है। मन से किसी प्राणी के हनन का विचार करना मानसिक आरम्भ है, यानी हिंसा है। इस प्रकार की वाणी का उपयोग करना, जिससे

दूसरों का हृदय तिलमिला उठे, वह वाचिक आरम्भ है। शस्त्र आदि के द्वारा या शारीरिक क्रियाओं के द्वारा किसी प्राणी का हनन करना कायिक आरम्भ है। इस तरह मानसिक, वाचिक और कायिक तीनों आरम्भ का वह त्याग करता है।[11]

9. **प्रेष्य प्रतिमा–** प्रस्तुत प्रतिमाधारी सेवक अन्य व्यक्तियों से भी किंचित् मात्र भी आरम्भ नहीं कराता है। स्वयं के द्वारा तो आरम्भ का परित्याग आठवीं प्रतिमा में एक करण, तीन योग से किया जात है। इस नौवीं प्रतिमा में दो करण, तीन योग से आरम्भ का त्याग होता है। प्रस्तुत प्रतिमाधारी श्रावक जलयान, नभोयान, स्थलयान आदि किसी भी वाहन का उपयोग न स्वयं करता है और न दूसरों को उपयोग करने के लिये कहता है।

   इस प्रतिमा में श्रावक संवर-साधना में अधिक रत रहता है। वह अपने अनुचरों पर अनुशासन करना भी बन्द कर देता है। उसके परिग्रह की वृत्ति भी न्यून हो जाती है। परिग्रह की वृत्ति न्यून होने से इस प्रतिमा का अपर नाम 'परिग्रह-परित्याग' भी है।

10. **उद्दिष्ट भक्त त्याग–** नौवीं प्रतिमा में श्रावक न स्वयं आरम्भ करता है और न दूसरों से आरम्भ करवाता है। पर उसके निमित्त जो आहार आदि तैयार किया हुआ है, उसे वह ग्रहण कर लेता है। किन्तु प्रस्तुत प्रतिमा धारण के बाद अपने निमित्त से बना हुआ आहार आदि भी वह ग्रहण नहीं करता। वह निरन्तर स्वाध्याय और ध्यान में तल्लीन रहता है। वह अपने शिर के बालों का शस्त्र से मुण्डन करवाता है, किन्तु चोटी अवश्य रखता है, क्योंकि वह गृहस्थाश्रम का चिह्न है।[12] और वह भाषा का पूर्ण विवेक रखता है।

11. **श्रमणभूत प्रतिमा–** प्रस्तुत प्रतिमाधारी श्रावक श्रमण के समान जीवनयापन करता है। वह श्रमण की तरह निर्दोष-भिक्षा, प्रतिलेखन, स्वाध्याय, ध्यान आदि में लीन रहता है। सभी प्रतिमाओं का निरतिचार पालन करता है। ग्यारहवीं प्रतिमा संपन्न कर श्रमणोपासक श्रमण बन जाता है।[13] ऐसा भी उल्लेख है- कई बार संक्लेश बढ़ जाने से वह श्रमण न बनकर गृहस्थ भी हो जाता है।[14]

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि प्रतिमाएँ वही श्रावक ग्रहण करता है। जिसे नवतत्त्व का सम्यक् रूप से परिबोध होता है। प्रतिमास्थित श्रावक का जीवन एक तरह से श्रमण जीवन की प्रतिकृति है।

संदर्भः-

1. (क) प्रतिमा प्रतिपत्ति : प्रतिज्ञेति यावत्- स्थानांग वृत्ति पत्र-61
   (ख) स्थानांग वृत्ति पत्र- 184

2. (क) दशाश्रुत स्कन्ध, दशा 6
   (ख) आचार्य हरिभद्र, 10 वीं विंशिका।
3. आयारदशा 6.18
4. पंचाणुव्वय धारित्तमण इयारं वएसु पडिबंधो।
   वयणा तदण इयारा वय पडिमा सुप्पसिद्धत्ति।।- विंशतिका- 10.5
5. आचार्य समन्तभद्र, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, 139
6. दशाश्रुत स्कन्ध, 6.4
7. लाटी संहिता, श्लोक-20
8. तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं, सूत्रकृतांग, 1.6.23
9. एगंमि बंभचेरं आराहियंमि आराहियं वयमिणं सव्वं।-प्रश्नव्याकरण सूत्र, संवरद्वार, अध्ययन 4
10. उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन 16, गाथा 17
11. एवं चियं आरंभं वज्जइ सावज्जमट्ठमासं जा।
    तप्पडिमा पेसेहि वि अप्पं कारेइ उवउत्तो।।-विंशतिका, 10.14
12. .....से णं खुरमुंडए वा सिहा-धारए वा तस्स णं आभट्ठस्सं सभाभट्ठस्स वा कप्पंति दुवे भासाओ भासित्तए.....।- दशाश्रुतस्कन्ध, 6.10
13. दशाश्रुतस्कन्ध, 6.11.
14. आचार्य हरिभद्र, विंशतिका, 10.18

अनमोल वचन

सुश्री लक्ष्मी जैन

1. अगर आप एक पेन्सिल बनकर किसी का सुख नहीं लिख सकते हो, तो कोशिश करो कि एक अच्छा रबर बनकर दूसरों के दुःख मिटा सको।
2. अन्य के दोष देखते हो और उनकी दिल खोल के बुराइयाँ करते हो, यह हानिकारक प्रवृत्ति है, क्योंकि इसमें तुम बुराइयों का भण्डारण करते हो।
3. सहज भाव से दिया गया एक मुट्ठी चावल, मान प्राप्त करने के लिये दिये गये एक मुट्ठी सुवर्ण से ज्यादा श्रेष्ठ है।
4. अगर आप चाहते हो कि लोग आपकी बात सुनें तो भाषा नहीं आचरण, दिखावा नहीं दान, प्रस्ताव नहीं प्लान करो तो असर होगा और आपकी बात मानेंगे।
5. लाइट से अन्धकार हटता है, फाइट से क्लेश बढ़ता है।
   जो एवरी डे 'प्रभु' का नाम रटता है, उसके दिल से दुर्भाव मिटता है।

-सुपुत्री श्री मुकेश कुमार जैन, रेलवे स्टेशन के पास, सोसायटी बैंक के सामने, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर-322702 (राज.)

शोधालेख

उपांगसाहित्य : एक विश्लेषणात्मक विवेचन

प्रो. सागरमल जैन

उपांग साहित्य का सामान्य स्वरूप

जैन आगम साहित्य के वर्गीकरण की प्राचीन पद्धति के अनुसार आगमों को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया जाता है- 1. अंगप्रविष्ट और 2. अंगबाह्य।

प्राचीनकाल में जहाँ अंग बाह्यों का वर्गीकरण आवश्यक और आवश्यकव्यतिरिक्त इन दो भागों में किया जाता था और आवश्यकव्यतिरिक्त को पुनः कालिक और उत्कालिक रूप में वर्गीकृत किया जाता था, वहीं वर्तमान काल में अंग बाह्य ग्रन्थों को- 1. उपांग, 2. छेदसूत्र, 3. मूलसूत्र, 4. प्रकीर्णकसूत्र और 5. चूलिकासूत्र- ऐसे पाँच भागों में विभक्त किया जाता है। वर्तमान में उपांग वर्ग के अन्तर्गत निम्न बारह आगम माने जाते हैं- 1. औपपातिकसूत्र, 2. राजप्रश्नीयसूत्र, 3. जीवाजीवाभिगमसूत्र, 4. प्रज्ञापनासूत्र, 5. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, 6. चन्द्रप्रज्ञप्ति, 7. सूर्य प्रज्ञप्ति, 8. कल्पिका (निरयावलिका), 9. कल्पावंतसिका, 10. पुष्पिका, 11. पुष्पचूलिका और 12. वृष्णिदशा।

ज्ञातव्य है कि इन बारह उपांगों में अन्तिम पाँच कल्पिका से लेकर वृष्णिदशा तक का संयुक्त नाम निरयावलिका भी मिलता है। आगमों के वर्गीकरण की जो प्राचीन शैली है, वह हमें नंदीसूत्र में उपलब्ध होती है, जबकि आगमों के वर्तमान वर्गीकरण की जो शैली है, वह लगभग 14 वीं शताब्दी के बाद की है। वर्तमान में अंगबाह्यों के जो पाँच वर्ग बताए गए हैं, इन वर्गों के नामों के उल्लेख जिनप्रभ के विधिमार्ग प्रपा में नहीं हैं, किन्तु उसमें प्रत्येक वर्ग के आगमों के नाम एक साथ पाए जाने से यह अनुमान किया जा सकता है कि उपांग, छेद, मूल, प्रकीर्णक, चूलिका आदि के रूप में नवीन वर्गीकरण की यह शैली लगभग 14 वीं शताब्दी में अस्तित्व में आई होगी।

जहाँ तक 'उपांग' शब्द के प्रयोग का प्रश्न है, वह सर्वप्रथम हमें उपांग वर्ग के ही कल्पिका आदि पाँच ग्रन्थों के लिए मिलता है। उसमें कल्पावंतसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका और वृष्णिदशा में उपांग (उवंग) शब्द का प्रयोग हुआ है। नवें उपांग कल्पावंतसिका के प्रारम्भ में "उवंगाणं पढमस्स वग्गस्स" ऐसा स्पष्ट उल्लेख है। इस आधार पर यह माना जा सकता है कि सर्वप्रथम उपांग वर्ग के अन्तिम पाँच ग्रन्थों, जिनका सम्मिलित नाम निरयावलिका है, को उपांग नाम से अभिहित किया जाता रहा होगा।

नन्दीसूत्र के रचना काल (पाँचवी शती) तक कल्पिका से लेकर वृष्णिदशा तक के इन पाँच ग्रन्थों को उपांग संज्ञा प्राप्त थी। यदि हम यह मानें कि आगमों की अन्तिम वाचना वीर निर्वाण के 980 वर्ष पश्चात् लगभग विक्रम की 5 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुई तो हमें इतना तो स्वीकार करना पड़ेगा कि उपांग वर्ग के निरयावलिका के अन्तर्भूत कल्पिका से लेकर वृष्णिदशा तक के पाँच आगमों को विक्रम की 5 वीं शताब्दी में उपांग संज्ञा प्राप्त थी। चाहे बारह उपांगों की अवधारणा परवर्तीकालीन हो, किन्तु वीर निर्वाण संवत् 980 या 993 में वल्लभीवाचना के समय निरयावलिका के पाँचों वर्गों को उपांग नाम से अभिहित किया जाता था। सम्भवतः पहले निरयावलिका श्रुतस्कन्ध के कल्पिका, कल्पावंतसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका और वृष्णिदशा को उपांग कहा जाता था, किन्तु जब बारह अंगों के आधार पर उनके बारह उपांगों की कल्पना की गई तब निरयावलिका के इन पाँच वर्गों को पाँच स्वतंत्र ग्रंथ मानकर और उसमें निम्न सात ग्रंथों, यथा- 1. औपपातिक, 2. राजप्रश्नीय सूत्र, 3. जीवाजीवाभिगम, 4. प्रज्ञापनासूत्र, 5. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, 6. चन्द्रप्रज्ञप्ति और 7. सूर्य प्रज्ञप्ति को जोड़कर बारह अंगों के बारह उपांगों की कल्पना की गई और इस आधार पर यह माना गया कि क्रमशः प्रत्येक अंग का एक-एक उपांग हैं। जैसे- आचारांग का उपांग औपपातिकसूत्र है, सूत्रकृतांग का उपांग राजप्रश्नीय है, स्थानांग का उपांग जीवाजीवाभिगम है, समवायांग का उपांग प्रज्ञापना है, भगवती का उपांग चन्द्रप्रज्ञप्ति है, इसी प्रकार आगे ज्ञाताधर्मकथा का उपांग जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति है और उपासकदशा का उपांग सूर्यप्रज्ञप्ति है। अन्तकृद्दशा, अनुत्तरौपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरणदशा, विपाकसूत्र और दृष्टिवाद के उपांग निरयावलिका के पाँच वर्ग हैं। जहाँ तक दिगम्बर परम्परा का प्रश्न है, उसमें भी बारहवें अंग दृष्टिवाद के पाँच विभाग किये गये हैं। उसके परिकर्म विभाग के अन्तर्गत चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, द्वीपसागरप्रज्ञप्ति और जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार उपांग साहित्य के ये ग्रन्थ प्राचीन ही सिद्ध होते हैं। यद्यपि द्वीपसागरप्रज्ञप्ति का उल्लेख स्थानांगसूत्र और दिगम्बर परम्परा में दृष्टिवाद के परिकर्म विभाग में मिलता है, किन्तु उसे उपांग में अन्तर्भूत नहीं किया गया है। यद्यपि नन्दीसूत्र में अंग बाह्य ग्रंथों के कालिक और उत्कालिक नामक जो भेद हैं, उसमें भी कालिक वर्ग के अन्तर्गत द्वीपसागरप्रज्ञप्ति का उल्लेख मिलता है। किन्तु नन्दीसूत्र के वर्गीकरण की यह एक विशेषता है कि उपांगों में वह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति को कालिक वर्ग के अन्तर्गत रखता है और सूर्यप्रज्ञप्ति को उत्कालिक वर्ग के अन्तर्गत रखता है। जहाँ तक उपांगों के रूप में मान्य इन बारह ग्रंथों का प्रश्न है, इन सबका उल्लेख नन्दीसूत्र के कालिक और उत्कालिक वर्ग में मिल जाता है। उत्कालिक वर्ग के अन्तर्गत औपपातिक, राजप्रश्नीय, जीवाजीवाभिगम,

प्रज्ञापना और सूर्यप्रज्ञप्ति ऐसे पाँच आगमों का उल्लेख है जबकि कालिक वर्ग के अन्तर्गत जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, निरयावलिका, कल्पिका, कल्पावंतसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका और वृष्णिदशा का उल्लेख है। इस संदर्भ में विशेष रूप से दो बातें विचारणीय हैं- प्रथम तो यह कि इसमें निरयावलिका को तथा कल्पिका आदि पाँच ग्रंथों को अलग-अलग माना गया है, जबकि वे निरयावलिका के ही विभाग हैं। इसी प्रकार चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति को दो अलग-अलग ग्रंथ मानकर दो अलग-अलग वर्गों में वर्गीकृत किया है, जबकि उनकी विषय-वस्तु और मूलपाठ दोनों में समानता है। ऐसा क्यों हुआ, इसका स्पष्ट उत्तर तो हमारे पास नहीं है, किन्तु ऐसा लगता है कि सूर्यप्रज्ञप्ति को ज्योतिष सम्बन्धी ग्रंथों के साथ अलग कर दिया गया और चन्द्रप्रज्ञप्ति को लोक स्वरूप विवेचक ग्रन्थों जैसे- द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के साथ रखा गया। वास्तविकता चाहे जो भी रही हो, किन्तु इतना निश्चित है कि उपांग वर्ग के अन्तर्गत जो बारह ग्रंथ माने जाते हैं उन सबका उल्लेख नन्दीसूत्र के वर्गीकरण में उपलब्ध हैं।

उपांग साहित्य का रचनाकाल

उपांग साहित्य के सभी आगमों का नन्दीसूत्र में उल्लेख होने से यह सिद्ध होता है कि उपांगों के रचनाकाल की अन्तिम कालावधि वीर निर्वाण संवत् 980 या 993 के आगे नहीं जा सकती। इस सम्बन्ध में विचारणीय यह है कि तत्त्वार्थसूत्र की स्वोपज्ञटीका में अंगबाह्य ग्रंथों के जो नाम मिलते हैं, उनमें उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, दशाश्रुतस्कन्ध, कल्प व्यवहार, निशीथ और ऋषिभाषित के नाम तो मिलते हैं, किन्तु इसमें उपांगवर्ग के एक भी ग्रन्थ का नामोल्लेख नहीं है, इस कारण विद्वत् वर्ग की यह मान्यता है कि उपांग साहित्य के रचना की पूर्वावधि ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी और उत्तरावधि ईसा की पांचवी शताब्दी के मध्य रही है। उपांग वर्ग के अन्तर्गत प्रज्ञापना सूत्र के रचयिता आर्य श्याम को माना जाता है। आर्यश्याम निश्चित रूप से उमास्वाति से पूर्ववर्ती हैं। पट्टावलियों के अनुसार इनका काल ईस्वी पूर्व द्वितीय-प्रथम शताब्दी माना गया है। ये वीर निर्वाण संवत् 376 तक युगप्रधान रहे हैं। ऐसी स्थिति में उपांग साहित्य के सब नहीं तो कम से कम कुछ ग्रन्थों का रचनाकाल ईस्वी पूर्व द्वितीय शताब्दी माना जा सकता है, किन्तु विषय-वस्तु आदि की अपेक्षा से विचार करने पर हम यह पाते हैं कि उपांग साहित्य के कुछ ग्रंथों की कुछ विषयवस्तु तो इससे भी पूर्व की है। उपांग साहित्य में निरयावलिका के कल्पिका वर्ग की विषय वस्तु में राजा बिम्बिसार श्रेणिक और उसके अन्य परिजनों का विस्तृत विवरण है, जो भगवान महावीर के समकालिक रहे हैं, चाहे उस विवरण को ग्रन्थ रूप में निबद्ध कुछ काल पश्चात् किया गया हो। कुणिक-अजातशत्रु और वैशाली गणराज्य के अधिपति चेटक के मध्य हुए

रथमूसल संग्राम का उल्लेख भगवती सूत्र एवं निरयावलिका में उपलब्ध होता है, इससे भी उपांग साहित्य की प्राचीनता सिद्ध होती है। इसी प्रकार सामान्यतया विषय-वस्तु की अपेक्षा हम उपांग साहित्य को ईसा पूर्व पांचवीं शताब्दी से लेकर ईसा की चतुर्थ शताब्दी के मध्यकाल तक में निर्मित मान सकते हैं। यद्यपि स्पष्ट निर्देश के आधार पर उपांग साहित्य में प्रज्ञापनासूत्र को ही प्राचीनतम माना जा सकता है, किन्तु विषय वस्तु आदि की दृष्टि से विचार करने पर उसके अन्य ग्रंथांश भी प्राचीन सिद्ध होते हैं। उदाहरणार्थ राजप्रश्नीयसूत्र का राजा प्रसेनजित और आचार्य केशी के मध्य हुए संलाप का भाग भी अधिक प्राचीन सिद्ध होता है, क्योंकि बौद्ध परम्परा में पयासीसुत्त में भी यह संवाद उल्लिखित है मात्र नाम का कुछ अन्तर है। बौद्ध परम्परा में भी पयासीसुत्त को प्राचीन माना गया है। इस अपेक्षा से राजप्रश्नीय का कुछ अंश अति प्राचीन है, किन्तु राजप्रश्नीय के सूर्याभदेव से सम्बन्धित भाग में जिनप्रसाद का जो स्वरूप वर्णित है तथा नाट्यविधि आदि सम्बन्धी जो उल्लेख हैं, वे विद्वानों की दृष्टि में ईसा की दूसरी-तीसरी शताब्दी से पूर्ववर्ती नहीं हो सकते हैं, क्योंकि उसमें जिनप्रसाद के शिल्प का विवेचन किया है, पुरातात्त्विक दृष्टि से वह शिल्प पूर्व गुप्तकाल या गुप्तकाल में ही पाया जाता है। इसी प्रकार औपपातिकसूत्र में विभिन्न प्रकार के तापसों, परिव्राजकों आदि का जो उल्लेख मिलता है, वह महावीर के समकालीन ही है, किन्तु उसमें भी परिव्राजकों की कुछ शाखाएँ परवर्तीकालीन भी हैं। इसी प्रकार चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति में ज्योतिष-ग्रहों की गति सम्बन्धी जिस पद्धति का विवेचन किया गया है वह आर्यभट्ट और वराहमिहिर से बहुत प्राचीन है। उसकी निकटता वेदकालीन ज्योतिष से अधिक है। पुनः उसमें नक्षत्र भोजन आदि को लेकर जो मान्यताएँ प्रस्तुत की गई हैं, उनका भी जैन धर्म के गुप्तकालीन विकसित स्वरूप से विरोध आता है। वे मान्यताएँ भी प्राचीन स्तर के आगमों की मान्यताओं के अधिक निकट हैं। अतः सूर्यप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति का काल निश्चित ही प्राचीन है। आचार्य भद्रबाहु (आर्य भद्र) ने जिन दस निर्युक्तियों की रचना करने का निश्चय प्रकट किया है, उसमें सूर्यप्रज्ञप्ति की निर्युक्ति भी है।

मेरी दृष्टि में निर्युक्तियों का रचनाकाल ईसा की दूसरी शताब्दी से परवर्ती नहीं है, अतः सूर्यप्रज्ञप्ति का अस्तित्व उससे तो प्राचीन ही सिद्ध होता है। इसी क्रम में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति को भी बहुत अधिक परवर्तीकालीन नहीं माना जा सकता है। इसी क्रम में निरयावलिका के अन्तर्भूत पाँच ग्रन्थों का रचनाकाल भी ईसा पूर्व की दूसरी-तीसरी शताब्दी से परवर्ती नहीं है, इसी प्रकार उपांग साहित्य में उल्लिखित कोई भी ग्रन्थ ईसा की प्रथम-द्वितीय शताब्दी से परवर्ती सिद्ध नहीं होता है। उपांग साहित्य में प्रज्ञापना जैसे गंभीर ग्रन्थ में भी लगभग चौथी-पाँचवी शती में विकसित गुणस्थान सिद्धान्त का उल्लेख नहीं होना भी यही सिद्ध

करता है कि उपांग साहित्य ईसा की प्रथम-द्वितीय शताब्दी से पूर्व की रचना है। अंगबाह्य ग्रन्थों के रचयिता पूर्वधर आचार्य माने जाते हैं। पूर्वधरों का अन्तिम काल भी ईसा की दूसरी-तीसरी शताब्दी से परवर्ती नहीं है, अतः इस दृष्टि से भी उपांग साहित्य को ईसा की प्रथम-द्वितीय शताब्दी से पूर्व की रचना मानना होगा।

उपांग साहित्य की विषय-वस्तु

उपांग साहित्य में प्रज्ञापना, जीवाजीवाभिगम, चंद्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति के अतिरिक्त शेष सभी ग्रंथ कथापरक ही हैं। जहाँ जीवाजीवाभिगम और प्रज्ञापना की विषय वस्तु दार्शनिक है, वहीं चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति का सम्बन्ध ज्योतिष से है। जम्बूद्वीप का कुछ अंश भूगोल तथा कालचक्र से सम्बन्धित है, वहीं शेष अंश कथा परक ही है। औपपातिक सूत्र में चम्पानगरी के विस्तृत विवेचन के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के श्रमणों, तापसों एवं परिव्राजकों के उल्लेख मिलते हैं। इन संन्यासियों में गंगातट निवासी वानप्रस्थ तापसों, विभिन्न प्रकार के आजीवक शाक्य आदि श्रमणों, ब्राह्मण परिव्राजकों, क्षत्रिय परिव्राजकों आदि के उल्लेख हैं। इस प्रकार से औपपातिकसूत्र भगवान महावीर के समकालीन श्रमणों, तापसों और परिव्राजकों तथा उनकी तपविधि का विस्तार से उल्लेख करता है। इसमें मुख्य कथा अंबड परिव्राजक की है। इस कथा में यह बताया गया है कि अंबड नामक परिव्राजक अन्तिम समय में संलेखना पूर्वक समाधिमरण को प्राप्त कर ब्रह्म लोक नामक कल्प में उत्पन्न होगा और वहाँ से च्युत होकर महाविदेह क्षेत्र में दृढ़प्रतिज्ञ के रूप में उत्पन्न होगा और वहाँ से मोक्ष को प्राप्त करेगा। ज्ञातव्य है कि औपपातिकसूत्र और राजप्रश्नीयसूत्र दोनों में ही 'दृढ़प्रतिज्ञ' के जीवन का जो विवरण उपलब्ध होता है, वह लगभग शब्दशः समान है, अन्तर मात्र यह है कि जहाँ औपपातिकसूत्र में अंबड परिव्राजक का दृढ़प्रतिज्ञ के रूप में महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होना लिखा है वहीं राजप्रश्नीयसूत्र में राजा प्रसेनजित (पएसि) का सूर्याभदेव के भव के पश्चात् महाविदेह क्षेत्र में दृढ़प्रतिज्ञ के रूप में उत्पन्न होकर अन्त में मुनिधर्म स्वीकार कर मोक्ष प्राप्त करने का उल्लेख है। औपपातिकसूत्र की विषय वस्तु की विशेषता यही है कि उसमें श्रमणों एवं तापसों के द्वारा किये जाने वाले उन विभिन्न तपों एवं साधनाओं का विस्तार से उल्लेख हुआ है, जिनमें से कुछ साधनाएँ, तप विधियाँ और भिक्षा विधियाँ निर्ग्रंथ परम्परा में भी प्रचलित रही हैं। औपपातिकसूत्र के अन्त में सिद्ध-शिला के विवेचन सम्बन्धी जो गाथाएँ मिलती हैं, वे उत्तराध्ययन सूत्र और अनुयोगद्वार सूत्र में भी उपलब्ध होती हैं, किन्तु उत्तराध्ययन सूत्र की अपेक्षा औपपातिकसूत्र में सिद्ध-शिला आदि का जो विस्तृत विवरण है, उससे यही सिद्ध होता है कि उत्तराध्ययन की अपेक्षा औपपातिक सूत्र परवर्तीकालीन है।

उपांगसूत्रों का दूसरा मुख्य ग्रन्थ राजप्रश्नीयसूत्र है। इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम राजा प्रसेनजित और पार्श्वसंतानीय केशी श्रमण का आत्मा के अस्तित्व के सम्बन्ध में विस्तृत संवाद है। उसके पश्चात् प्रसेनजित के द्वारा संलेखनापूर्वक देह त्याग करके सूर्याभदेव के रूप में उत्पन्न होने का उल्लेख मिलता है फिर सूर्याभदेव के द्वारा भगवान महावीर के समक्ष विविध नाट्यादि प्रस्तुत करने का उल्लेख है। इसी प्रसंग में जिनप्रसाद के स्वरूप का एवं उसके द्वारा की गई जिनपूजा की विधि का भी विवेचन किया गया है। अन्त में जैसा हमने पूर्व में उल्लेख किया सूर्याभदेव द्वारा स्वर्ग की आयु पूर्ण करने के पश्चात् दृढ़प्रतिज्ञ के नाम से महाविदेह में उत्पन्न होकर मोक्ष प्राप्त करने का उल्लेख है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि औपपातिकसूत्र और राजप्रश्नीयसूत्र दोनों में दृढ़प्रतिज्ञ के प्रसंग में गृहस्थ जीवन सम्बन्धी लगभग सभी संस्कारों का उल्लेख भी पाया जाता है। वैदिक परम्परा में मान्य षोडशसंस्कारों में से लगभग पन्द्रह संस्कारों का उल्लेख इसमें उपलब्ध हो जाता है। वस्तुतः श्वेताम्बर परम्परा और वैदिक परम्परा में मान्य गृहस्थों के संस्कारों का उल्लेख करने वाले ये दोनों उपांग इस दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण हैं। इस प्रकार उपांग साहित्य में प्रथम दो उपांग राजा प्रसेनजित और अंबड परिव्राजक के जीवन की कथाओं को प्रस्तुत करते हैं।

इनके पश्चात् जीवाजीवाभिगम और प्रज्ञापना ये दो उपांग मूलतः जैन धर्म की दार्शनिक मान्यताओं से सम्बन्धित है। जहाँ जीवाजीवाभिगम में जीव और अजीव तत्त्व के भेद-प्रभेदों की विस्तृत चर्चा है, वही प्रज्ञापनासूत्र में छत्तीस पदों में जैन दर्शन के कुछ महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे- इन्द्रिय, संज्ञा, लेश्या, पर्याय, कर्म-आहार, उपयोग, पश्यता, समुद्घात आदि का गम्भीर विवेचन प्रस्तुत हुआ है। इस प्रकार ये दोनों उपांग मुख्यतः जैन दर्शन से सम्बन्धित हैं। प्रज्ञापनासूत्र में सर्वप्रथम चक्षुरिन्द्रिय और मन को अप्राप्यकारी बताया गया है, जबकि श्रवणेन्द्रिय को बौद्धों के विपरीत प्राप्यकारी वर्ग में रखा गया है। इन्द्रियों के प्राप्यकारित्व और अप्राप्यकारित्व सम्बन्धी यह चर्चा सम्भवतः ईसा की प्रथम शताब्दी में विकसित हुई। इस चर्चा के आधार पर कुछ लोगों का यह भी कहना है कि प्रज्ञापना का रचनाकाल ईस्वी की प्रथम-द्वितीय शताब्दी से पहले नहीं हो सकता। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि भगवतीसूत्र में स्थान-स्थान पर प्रज्ञापना का संदर्भ दिया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वानों का यह भी कहना है कि भगवती का वर्तमान स्वरूप प्रज्ञापना से भी परवर्ती है, किन्तु हमारी दृष्टि में वास्तविकता यह है कि भगवतीसूत्र में विस्तारभय से बचने के लिए वल्लभीवाचना के समय उसे सम्पादित करते हुए प्रज्ञापना आदि का निर्देश किया गया है।

इसके पश्चात् उपांग साहित्य में सूर्यप्रज्ञप्ति और चन्द्रप्रज्ञप्ति का क्रम है, इन दोनों ग्रन्थों की विषय वस्तु लगभग समान है और इनका विवेच्य विषय ज्योतिष से सम्बन्धित है। इनमें

ग्रह, नक्षत्र, तारा तथा सूर्य-चन्द्र की गति का जो विवेचन मिलता है, वह विवेचन वेदकालीन विवेचन से अधिक निकटता रखता है। ऐसा लगता है कि जैन आगमसाहित्य में ज्योतिष सम्बन्धी ग्रंथ की परिपूर्ति के लिए इन ग्रंथों का समावेश उपांग साहित्य में किया गया है। छठे उपांग के रूप में हमारे सामने जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति का क्रम आता है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति का मुख्य विषय तो भूगोल है। इसमें जम्बूद्वीप के विभिन्न विभागों तथा खण्डों का तथा भरतक्षेत्र एवं ऐरावत क्षेत्र में होने वाले उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी काल का विवेचन है, किन्तु प्रकारान्तर से इसमें भरत चक्रवर्ती और ऋषभदेव के जीवन चरित्र का भी विस्तृत उल्लेख उपलब्ध होता है। सम्भवतः अर्धमागधी आगम साहित्य में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ही एक ऐसा ग्रंथ है, जो भरत चक्रवर्ती और ऋषभदेव के जीवनवृत्त का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है।

उपांग साहित्य के अन्तिम पाँच ग्रन्थ कल्पिका, कल्पावंतसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका और वृष्णिदशा हैं। इन पाँचों का सामूहिक नाम तो निरयावलिका रहा है और उसके ही पाँच वर्गों के रूप में ही पाँचों का उल्लेख मिलता है। इसके प्रथम कल्पिका नामक विभाग में चम्पानगरी और राजा कूणिक का विस्तृत जीवनवृत्त वर्णित है। इसके साथ ही इसमें रथमूसलसंग्राम का विवेचन भी उपलब्ध होता है, जो मूलतः राजा कूणिक और वैशाली के गणाधिपति महाराजा चेटक के बीच हुआ था। इन पाँच ग्रंथों में प्रथम चार ग्रंथों का सम्बन्ध महाराजा श्रेणिक के राज परिवार के साथ ही रहा है, जबकि अन्तिम वृष्णिदशा कृष्ण के यादव कुल से सम्बन्धित है।

इस प्रकार उपांग साहित्य जैन आगम साहित्य का महत्त्वपूर्ण विभाग है और अपेक्षाकृत प्राचीन है। *-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, दुपाडारोड, शाजापुर (म.प्र.)*

रात्रिभोजन-विरति अंकों पर प्रतिक्रिया

डॉ. दिलीप धींग

जिनवाणी नवम्बर-2014 का रात्रिभोजन विरति अंक (प्रथम) बहुत अच्छा लगा। कोटा में पूज्य श्री हीराचार्य के सान्निध्य में रात्रिभोजन विरति पर हुई विद्वत्संगोष्ठी उद्देश्यपूर्ण तथा सफल रही। इस विषय पर कोई अकादमिक आयोजन संभवतः पहला ही हुआ होगा। इसके लिए संयोजक, आयोजक, प्रायोजक, प्रतिभागी एवं अन्य सभी सम्बन्धित महानुभाव हार्दिक बधाई के पात्र हैं। इस क्रम में जिनवाणी के नवम्बर व दिसम्बर 2014 के अंक रात्रिभोजन विरति पर केन्द्रित करके आपने इन अंकों को इस विषय के 'लघु विशेषांक' बना दिये हैं। जिनवाणी के ये लघु विशेषांक जिज्ञासु पाठकों, सन्तों, त्यागियों, स्वाध्यायियों, विद्वानों और शोधार्थियों लिए सदैव उपयोगी बने रहेंगे।

आचार्यपद रजत वर्ष

जैन आगमों में आचार्य पद की महिमा

श्री सम्पतराज चौधरी

आचार्य की परिभाषा

नमस्कार मंत्र में तीसरा पद है- 'णमो आयरियाणं' अर्थात् आचार्यों को नमस्कार हो। प्रश्न उठता है कि आचार्य कौन होते हैं और उनकी महत्ता क्या है? जैन साधना में आचार का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। संयम के पथ पर प्रयाण करते हुए पद-पद पर सावधानी और जागरूकता की अपेक्षा होती है। साधुजनों द्वारा जो आगमोक्त व्यवहार किया जाता है, उसे आचार कहते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जो आचरण करने योग्य हो, उसे आचार कह सकते हैं। जैन दर्शन में आचरण करने योग्य कार्य वही होता है जिसमें ऐसा सुख मिले, जिसके परिणाम में दुःख नहीं हो। एकान्त और नित्य सुख ही वास्तव में सुख कहलाता है। एतादृक् सुख देने वाले पाँच प्रकार के आचार[1] कहे गये हैं- 1. ज्ञानाचार, 2. दर्शनाचार, 3. चारित्राचार, 4. तपाचार एवं 5. वीर्याचार। ये पाँचों पंचाचार कहलाते हैं। पंचाचार का स्वयं पालन करने वाले तथा दूसरों से पालन कराने वाले मुनि 'आचार्य' कहलाते हैं। आवश्यक निर्युक्ति[2] में आचार्य की यही परिभाषा दी गई है-

पंचविहं आयारं आयारमाणस्स तहा पभासंता।
आयारं दंसंता आयरिया तेण वुच्चंति।।

अर्थात् जो ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार रूप पाँच आचार का स्वयं पालन करते हैं एवं अन्यों से पालन करवाते हैं, वे आचार्य होते हैं। जो स्वयं आचारनिष्ठ हैं और दूसरों में आचार की निष्ठा पैदा करते हैं, वे आचार्य हैं। विशेषावश्यक भाष्य[3] में जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने भी यही कहा है कि जो पंचविध आचार की स्वयं अनुपालना करते हैं, दूसरों को आचार का उपदेश देते हैं तथा जो आचार का क्रियात्मक रूप में प्रशिक्षण देते हैं, दूसरों से आचरण करवाते हैं वे आचार्य कहलाते हैं।

उपाध्याय अमरमुनि आचार्य को धर्मप्रधान श्रमणसंघ का पिता कहते हैं। "वह स्वयं अहिंसा, सत्य आदि आचार का दृढ़ता से पालन करता है, पर-परिणति से हटकर स्वपरिणति में रमण करता है, सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों पर विजय पाने के लिए प्रयत्नशील रहता है, साधु धर्म का उत्कृष्ट रूप अपने आचार व्यवहार से प्रमाणित करता है, तीव्र कषाय के उदय का अभाव होने से प्रशान्त, क्षमाशील, विनम्र, सरल एवं आत्म-संतुष्ट

रहता है। आचार्य संघ का शासन, धर्म शासन के लिये करता है। यह पद अधिकार का नहीं, साधकों के जीवन निर्माण का पद है। श्रावक अथवा साधु जब संयम यात्रा करते हुए भटक जाते हैं, अयुक्त आचरण कर बैठते हैं, तब आचार्य ही उन्हें सही मार्ग पर लाता है, योग्य प्रायश्चित्त देकर आत्मा की शुद्धि करता है। वह साधकों की आत्मा का चिकित्सक है। न वह स्वयं भटकता है और न दूसरों को भटकने देता है। वह अरिहंत की भूमिका की ओर बढ़ने वाला वह महाप्रकाश है, जो अपने पीछे चलने वाले चतुर्विध संघ का पथ प्रदर्शन करता है। आचार्य को दीपक कहा है, जो ज्योति से ज्योति जलाता हुआ दूसरे आत्म-दीपों को भी प्रदीप्त कर देता है।"[4]

दिगम्बर आगम साहित्य में भी आचार्य पद के इन्हीं अभिलक्षणों का वर्णन है। आचार्य का सीधा सम्बन्ध आचार से है, इसलिए शिवकोटि आचार्य ने मूलाराधना (अपरनाम भगवती आराधना) में कहा है कि जो पाँच प्रकार के आचार (दर्शन, ज्ञान, चारित्र, और तप)का निरतिचार पालन करते हैं तथा दूसरों में लगाते हैं और आचार का उपदेश देते हैं वे आचार्य हैं।[5] मूलाचार में भी कहा गया है कि जो सर्वकाल सम्बन्धी आचार को जानता है तथा आचरण योग्य का स्वयं आचरण करता है और अन्य साधुओं को आचरण में प्रवृत्त करता है, उसे आचार्य कहते हैं।[6] इसी तरह 'आचार्य' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ करते हुए आचार्य वीरसेन ने षट्खण्डागम की धवला टीका के आदि मंगल रूप नवकार मंत्र की व्याख्या में कहा है- 'पंचविधमाचारम् चरन्ति चारयन्तीत्याचार्या' अर्थात् जो पाँच आचारों का स्वयं पालन करते हैं और दूसरे साधुओं से पालन कराते हैं, उन्हें आचार्य कहते हैं।[7] आचार्य संघ के नायक होते हैं जो निरन्तर सावधान रहते हैं। उनके द्वारा जब साधु समूह को संस्कृत किया जाता है तब वे संसार रूपी महान् अटवी के दूसरे किनारे पर सुख से जा सकते हैं, अन्यथा नहीं। जिसमें समिति रूपी बैल जुते हैं, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति रूपी पहिये हैं, सम्यक्त्वरूपी नेत्र और सम्यग्ज्ञान जिसकी धुरा है, रात्रिभोजन से निवृत्ति रूप दो दीर्घ दण्ड हैं, ऐसी दीक्षा रूपी गाड़ी पर सवार होकर साधु समुदाय संसार रूपी महाजंगल के दूसरे किनारे अर्थात् सिद्धिपुरी को प्रस्थान करता है।"[8]

पंचाचार[9]

पंचाचार का स्वरूप बताते हुए श्री जशकरण जी डागा लिखते हैं कि मोक्ष के लिये किया जाने वाला ज्ञानादि आसेवन रूप अनुष्ठान-विशेष आचार कहा जाता है।[10] ये आचार पाँच कहे गए हैं- **1. ज्ञानाचार-** सम्यक्त्व का ज्ञान कराने के कारणभूत श्रुतज्ञान का आठ दोषों से रहित पठन करना ज्ञानाचार है। ज्ञान के आठ आचार हैं- **1 कालाचार-**

अस्वाध्याय के दोषों का निवारण करके यथोक्त काल में शास्त्र पठन करना। **2. विनयाचार–** गुरु के सान्निध्य में रहकर विनयपूर्वक ज्ञानाराधन करना। **3. बहुमानाचार–** ज्ञानदाता का आदर, आशातनाओं का त्याग करके करना। जिस क्रिया के करने से ज्ञान, दर्शन और चारित्र का ह्रास होता है, उसे आशातना-अवज्ञा कहते हैं। **4. उपधानाचार–** जैन दर्शन में ज्ञान साधना को तप साधना के साथ जोड़ा गया है, उसी को उपधान कहा जाता है। जिस शास्त्र का पठन करने के समय जिस तप का विधान किया गया है, वही तप उस समय करने को उपधानाचार कहते हैं। **5. अनिह्नवाचार–** विद्या देने वाले गुरु, वय अथवा दीक्षा पर्याय में छोटे भी हों अथवा अप्रसिद्ध हों तो भी उनके नाम को नहीं छिपाना एवं अपने अहंकार के पोषण के लिये सत्य को विकृत नहीं करना तथा आगम के पाठों को अपनी सुविधा के लिये तोड़-मोड़कर व्याख्या नहीं करना, अनिह्नवाचार है। **6. व्यंजनाचार–** शास्त्र के व्यंजन, स्वर, गाथा, अक्षर, पद, अनुस्वार, विसर्ग, लिंग, काल आदि को जानकर, अच्छी तरह समझकर न्यून, अधिक या विपरीत नहीं बोलना व्यंजनाचार है। व्यंजनों से सूत्र की रचना होती है- ''वंजणमिति भण्णते सुत्तं' इसलिए सूत्र के अक्षरों का शुद्ध उच्चारण होना चाहिए। अशुद्ध उच्चारण से अर्थभेद होता है, अर्थ-भेद से क्रिया-भेद होता है तथा क्रिया में भेद होने से निर्जरा नहीं होती। सूत्र का शुद्ध उच्चारण भाव समाधि का हेतु है। **7. अर्थाचार–** आगम में आए हुए प्रत्येक शब्द का उसके सन्दर्भ के अनुकूल सही अर्थ करना अर्थाचार है। **8. तदुभयाचार–** मूल पाठ और उसके सम्यक् अर्थ निर्धारण की प्रक्रिया तदुभयाचार है।

2. दर्शनाचार

जिस प्रकार ज्ञान को एक आचार अर्थात् साधना की प्रक्रिया के रूप में माना गया है, उसी प्रकार दर्शन को भी साधना की एक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है। दर्शन के कई अर्थ हैं, जैसे चक्षु से देखना, दृष्टि यानी पक्षपात रहित होकर देखना, जीवादि नवतत्त्वों में यथार्थ-श्रद्धा करना, देव-गुरु-धर्म के प्रति आस्था रखना, आत्म-साक्षात्कार या आत्मानुभूति होना, स्व-पर का भेद करना आदि। यहाँ दर्शनाचार के संदर्भ में संक्षेप में कह सकते हैं कि यह वह साधना है जिसके द्वारा सम्यक् दृष्टिकोण प्राप्त किया जा सके, मिथ्या मान्यताओं को छोड़कर सम्यक् मान्यताओं में स्थिर किया जा सके। सम्यग्दर्शन से सम्पन्न होने के लिये आठ तरह के आचार बताये गये हैं- **1. निःशंकित–** अल्पबुद्धि के कारण आगमों की बात समझ में न आये तो आगम-शास्त्रों में कही गई बातों पर शंका न करें। वीतराग भगवान ने अपने केवलज्ञान में जैसा वस्तुस्वरूप देखा, वैसा ही कथन किया है, जो

असत्य नहीं हो सकता, ऐसी दृढ़ आस्था रखना। 2. **निःकांक्षित**– मिथ्या-मतावलंबियों के चमत्कार या आडम्बर देखकर उनके मत को स्वीकार करने की अभिलाषा नहीं रखना, क्योंकि ये आडम्बर आत्म-कल्याण में सहायक नहीं होते हैं। 3. **निर्विचिकित्सा**– धर्म के फल पर संदेह नहीं करना। उर्वर भूमि में डाला हुआ बीज, पानी का संयोग मिलने पर कालान्तर में अवश्य फल देता है, उसी तरह धर्म-क्रिया रूपी बीज, शुभ परिणामरूपी जल का योग पाकर कालान्तर में अवश्य फल देता है। 4. **अमूढ़दृष्टि**– शुद्ध भेद दृष्टि रखना अमूढ़दृष्टि आचार है। वीतराग प्ररूपित स्याद्वादमय दयाधर्म सर्वोत्कृष्ट है, यह दृष्टि अमूढदृष्टि है। 5. **उपवृंहण**– सम्यग्दृष्टि साधर्मी के सद्गुणों की अन्तःकरण से प्रशंसा करना एवं सहयोग कर उसके उत्साह को बढ़ाना। 6. **स्थिरीकरण**– कोई धर्मनिष्ठ किसी कारण से सत्य से विचलित हो गया हो तो उसे उपदेश देकर या ज्ञानीजनों के सम्पर्क में लाकर पुनः धर्म में स्थिर करना। 7. **वात्सल्य**– स्व-धर्मीजनों पर प्रीति रखना, उनकी यथायोग्य सहायता कर साता उपजाना। 8. **प्रभावना**– यथाशक्ति साधना, उपदेश, साहित्य-सर्जन आदि से धर्म की प्रभावना करना एवं धर्म-सम्बन्धी अज्ञान को दूर करना।

3. चारित्राचार

चार कषायों से रहित होकर मोक्ष मार्ग में गतिमान होना, चारित्राचार है। ये आठ प्रकार के आचार हैं- 1. **ईर्यासमिति**– रत्नत्रय का आलम्बन रखकर शास्त्र विधानानुसार गमनागमन करे, पूरी यतना रखे। 2. **भाषा समिति**– यतनापूर्वक बोलना। 3. **एषणा समिति**– शय्या, आहार, वस्त्र और पात्र का निर्दोष ग्रहण करना। 4. **आदान-भाण्ड-पात्र निक्षेपणा समिति**– उपकरणों को यतनापूर्वक ग्रहण कर स्थापित करना। 5. **परिष्ठापनिका समिति**– मल, मूत्र आदि अनावश्यक वस्तुओं का यतनापूर्वक विसर्जन करना। 6. **मनोगुप्ति**– मन को सावद्य विचारों से हटाकर धर्म-ध्यान और शुक्ल-ध्यान में लगाना। 7. **वचन गुप्ति**– सावद्य वाणी को त्यागकर हितकर, परिमित वाणी बोलना एवं प्रयोजन न होने पर मौन धारण करना। 8. **कायगुप्ति**– सावद्य कार्यों से निवृत्त होकर काया को तप, संयम, ज्ञानोपार्जन आदि संवर निर्जरा के कामों में लगाना।

4. तपाचार

विकारों को समाप्त करने के लिए, आध्यात्मिक शक्ति को प्रकट करने के लिए तथा कर्म-मुक्ति के लिए शरीर, मन और इन्द्रियों को जिन-जिन उपायों से तपाया जाता है, उसे तप कहते हैं। तप तभी कर्मक्षय का कारण बनता है जब साधक हिंसा से विरत होकर, पाँच समिति, तीन गुप्ति से युक्त होकर, चार कषाय, तीन शल्य एवं तीन गौरव से रहित होकर

नये कर्मों के आगमन को रोके। तप दो प्रकार का होता है- बाह्य और आभ्यन्तर। बाह्य तप वह है जिसका सीधा प्रभाव शरीर पर दिखाई देता है तथा जो मोक्ष का बहिरंग कारण है। आभ्यंतर तप अन्तरंग परिणामों की मुख्यता से होता है, जिससे मन का नियमन होता है तथा वह मुक्ति का अंतरंग कारण है। बाह्य तप की अपेक्षा आभ्यन्तर तप से कर्मों की अधिक निर्जरा होती है। बाह्य तप इस प्रकार हैं- **1. अनशन-** अन्न, जल, खाद्य, स्वाद्य आदि चारों आहारों का काल की समय सीमा अथवा मारणान्तिक कारण उपस्थित होने पर जीवन पर्यन्त त्याग करना अनशन तप है। **2. ऊनोदरी-** आहार, उपधि और कषाय को न्यून करना ऊनोदरी तप है। **3. भिक्षाचर्या-** बहुत घरों से थोड़ी-थोड़ी भिक्षा लाकर शरीर को सहारा देना भिक्षाचर्या तप है। **4. रस परित्याग-** जीभ को स्वादिष्ट लगने वाली और इन्द्रियों को प्रबल व उत्तेजित करने वाली वस्तुओं का त्याग करना रसपरित्याग तप है। **5. कायक्लेश-** स्वेच्छापूर्वक धर्माराधना के हित काया को कष्ट देना कायक्लेश तप है। जैसे कायोत्सर्ग करना। **6. प्रतिसंलीनता-** कर्मास्रव के कारणों का निरोध करना प्रतिसंलीनता तप है। राग-द्वेष उत्पन्न करने वाले शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श को रोकना और कदाचित् इन विषयों की प्राप्ति हो जाए तो मन में विकार नहीं लाकर समवृत्ति में रहना इन्द्रिय प्रतिसंलीनता तप है। आभ्यन्तर तप इस प्रकार हैं- **1. प्रायश्चित्त-** आत्मसाधना में सावधान रहने पर भी कुछ दोष, जैसे- अहंकार, आलस्य, असावधानी, भय, द्वेष आ जाते हैं, उनका परिमार्जन करके आत्मा को पुनः विशुद्ध एवं निर्मल बनाने के उपक्रम को प्रायश्चित तप कहते हैं। **2. विनय-** नम्रता, आचार और अनुशासन इन तीनों से युक्त होकर गुरु एवं ज्येष्ठ मुनिजनों का, वयोवृद्धों एवं गुणवृद्धों का यथोचित सत्कार करना, खड़े होना, हाथ जोड़ना, आसन देना, भक्ति करना और भावपूर्वक शुश्रूषा करना विनय तप है। **3. वैयावृत्त्य-** आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, ग्लान, तपस्वी, स्थविर, स्वधर्मी, गुरुभ्राता, गण के साधु और संघ, इन सबको आहार, वस्त्र, पात्र, औषधि आदि आवश्यक वस्तुएँ लाकर देना और उनकी सेवा करना वैयावृत्त्य तप है। **4. स्वाध्याय-** आत्मा का हित करने वाले शास्त्रों का अध्ययन स्वाध्याय तप है। आगम में कहा गया है कि इसके समान न तो अन्य कोई तप है और न होगा। सम्यग्ज्ञान से रहित जीव करोड़ों भवों में जितने कर्म क्षय कर पाता है, ज्ञानी साधक तीन गुप्तियों से युक्त होकर उन कर्मों को अन्तर्मुहूर्त्त में क्षय कर देता है। यह पाँच प्रकार का होता है- **(1) वाचना-** यथाविधि स्वयं पठन करना और अन्य योग्य व्यक्तियों का पढ़ाना। **(2) पृच्छना-** अध्ययन किये गये विषय में सन्देह उत्पन्न होने पर विनय के साथ सन्देह निवारण करना। **(3) परिवर्तना-** सीखे हुए ज्ञान को

बार-बार दुहराना। **(4) अनुप्रेक्षा-** आगम तत्त्वों का अर्थ-परमार्थ की ओर उपयोग रखकर चिन्तन-मनन करना। **(5) धर्मकथा-** पढ़े हुए ज्ञान का दूसरों को लाभ देना अर्थात् श्रुतधर्म की व्याख्या कर उपदेश देना। **5. ध्यान-** एकाग्र चिन्तनात्मक दृष्टि से ध्यान चार प्रकार का होता है- आर्त्त, रौद्र, धर्म और शुक्ल। पहले के दो ध्यान अप्रशस्त हैं, अतः उनका त्याग करना। बाकी दो प्रशस्त है, अतः उनमें अपने को स्थिर करना। अप्रशस्त ध्यान धन-संपत्ति, परिवार, इन्द्रिय-विषय, यश-प्रतिष्ठा की प्राप्ति के लिये मन के संकल्प से जुड़ा है। ऐसा ध्यान मोह, मिथ्यात्व तथा तत्त्वों के विभ्रम से होता है। धर्म ध्यान वस्तु के सत्य स्वरूप, भगवद् आज्ञा, पापास्रव से दूर रहने के चिन्तन की एकाग्रता से होता है। ऐसे चिन्तन से भगवद् आज्ञा में रुचि होती है, जिनभाषित तत्त्वों पर श्रद्धा होती है, गुरु उपदेश में रुचि होती है और आगम-ग्रन्थों को सुनने की रुचि होती है। धर्म-ध्यान की चार अनुप्रेक्षाएँ कही गई हैं- आत्मा के एकत्व भाव का चिन्तन करना, शरीर, जीवन आदि की अनित्यता का चिन्तन करना, आत्मा की अशरण दशा का चिन्तन करना एवं संसार-परिभ्रमण का चिन्तन करना। ये चारों भावनाएँ धर्म-ध्यान का पोषण करती हैं। आत्मा के शुद्ध स्वरूप की सहज परिणति शुक्लध्यान है। शुक्लध्यानी के चार अवलम्बन होते हैं- सार तत्त्व ग्रहण कर असार को त्यागना और किंचित् मात्र भी क्रोध रूप परिणति न होने देना 'क्षान्ति' नामक अवलम्बन है। किसी वस्तु पर लेशमात्र भी ममत्व न रखना 'मुक्ति' अथवा 'निर्लोभता' नामक अवलम्बन है। भीतर-बाहर से सरल होना 'आर्जव' अवलम्बन है। द्रव्य-भाव से विनम्र रहना 'मार्दव' अवलम्बन है। **6. व्युत्सर्गतप-** छोड़ने योग्य वस्तु को छोड़ना व्युत्सर्ग तप है। व्युत्सर्ग तप दो प्रकार का होता है- द्रव्य से और भाव से। द्रव्य व्युत्सर्ग में गण के ममत्व का त्याग, देह और दैहिक ममत्व का त्याग, साधन सामग्री की ममता का त्याग और आहार-पानी की आसक्ति का त्याग होता है। भाव व्युत्सर्ग में कषाय का त्याग, संसार बन्ध के कारणों का त्याग और आठ कर्म पुद्गलों के बंधने के कारणों का त्याग होता है।

5. वीर्याचार

अपनी शक्ति का गोपन न करते हुए धर्म-कार्यों में यथा शक्ति मन, वचन एवं काया द्वारा प्रवृत्ति करना वीर्याचार है। आत्मा के परिणाम विशेष अथवा द्रव्य की अपनी जो शक्ति है, उसे वीर्य कहते हैं। मन, वचन, काया के साधन को करण कहते हैं। संसारी जीव सकरण वीर्य वाले होते हैं। सकरण वीर्य से उत्थान, बल, पुरुषकार एवं पराक्रम प्रगट होते हैं। भगवान ने कहा है- 'संजमम्मि य वीरियं' संयम के कार्य में सदा सतर्क रहना, पुरुषार्थ

करना साधक का कर्त्तव्य है। इस तरह वीर्याचार का अर्थ है ज्ञान, तप, संयम आदि में शक्ति को नहीं छिपाकर उसे प्रगट करना। जीव के सम्यक्त्व गुणयुक्त होने पर कर्म शत्रुओं को पराजित करने के लिए जो पुरुषार्थ किया जाता है, वह सम्यक्त्व पराक्रम है। उत्तराध्ययन सूत्र के 29 वें अध्ययन में ऐसे 73 बोल कहे गये हैं, जिनकी अप्रमादपूर्वक आराधना करता हुआ जीव सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

दिगम्बर ग्रन्थों में भी पंचाचार का यही स्वरूप प्रतिपादित किया गया है। पं. आशाधर 'सागार धर्मामृत' में कहते हैं कि अपनी शक्ति के अनुसार निर्मल किये गये सम्यग्दर्शनादि में जो यत्न किया जाता है, उसे आचार कहते हैं।[11] 'अनगार धर्मामृत' में आचारतत्त्व के आठ गुणों की व्याख्या करते हुए पं. बालचन्द्र शास्त्री लिखते हैं- ''आचार्य शब्द आचार से ही बना है। आचार पाँच हैं- ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपचार और वीर्याचार। जो इन पाँच आचारों का स्वयं पालन करता है, दूसरों से पालन कराता है और उनका उपदेश देता है, उसे आचार्य कहते हैं। भगवती आराधना और मूलाचार का यही आशय है।''[12] पंचाचार के स्वरूप में भी विभिन्न दिगम्बर ग्रन्थों में जो आया है वह वैसा ही है जैसा श्वेताम्बर ग्रन्थों के आधार पर कहा गया है।[13] **(क्रमशः)**

संदर्भः-

1. स्थानांग सूत्र, 5.2.147
2. आवश्यक निर्युक्ति, 994
3. विशेषावश्यक भाष्य, 3896, 3901
4. श्रमण सूत्र, उपाध्याय अमरमुनि, पृष्ठ 164 (द्वितीय संस्करण)
5. मूलाराधना (भगवती आराधना) 419 (भाषा टीका आदिमती माताजी)
6. मूलाचार 7,8,158
7. धवला 1.1, 48.8
8. मूलाराधना, 1288, 1289, 1290, 1291, 1292 (भाषा टीका आदिमती माताजी)
9. विशेष अध्ययन के लिए देखें - जैन तत्व प्रकाश (प्रकरण 3) - आचार्य अमोलऋषिजी म.सा.
10. जिनवाणी, जनवरी-2011, पृष्ठ संख्या 300
11. सागार धर्मामृत, 7.35
12. अनगार धर्मामृत, 9.77 (भारतीय ज्ञानपीठ)
13. देखिये - जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश भाग-1, आचार, पृष्ठ 240, 241

-14, वरदान अपार्टमेंट, 64, इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली-110001

अध्यात्म

आत्मा को जो अमर नहीं मानता वही मृत्यु से डरता है

आचार्य श्री विजय रत्नसुन्दरसूरिजी

शरीर,
मन एवं आत्मा इन तीनों का संगम,
इसी का नाम है वर्तमान जिंदगी।
पर मुश्किल यह है कि
इन तीनों का स्वभाव विचित्र है।
शरीर परतन्त्र है–
खुराक के बिना, पानी के बिना,
हवा के बिना और बीमार पड़े तो
दवाई के बिना यह टिक नहीं सकता
जबकि
आत्मा स्वतन्त्र है–
वह किसी भी वस्तु के बिना,
व्यक्ति के बिना,
सामग्री के बिना या संयोग के बिना
मजे से अपने अस्तित्व को टिका सकती है,
परन्तु मन?
वह स्वतन्त्र भी है और परतन्त्र भी है–
वह यदि आत्मा के पक्ष में है
तो स्वतंत्र है
और यदि शरीर के पक्ष में है
तो परतंत्र है।
अर्थात्?
अर्थात् यह कि मन यदि चौबीसों घण्टे शरीर के
विचारों में ही खोया रहता है तो वह रोग के,

वृद्धावस्था के और मृत्यु के
आगमन के विचारों से डरता ही रहेगा,
पर यदि उसे चौबीसों घण्टे आत्मा ही
दिखती रहती हो तो रोग,
वृद्धावस्था या मृत्यु की कल्पना तो क्या,
उन तीनों की वास्तविक उपस्थिति में भी
वह निर्भय ही रहेगा।
संदेश स्पष्ट है।
चाहे कितना भी ध्यान रखो,
कितनी ही सार-सँभाल करो,
शरीर को तुम स्वतन्त्र नहीं बना सकोगे।
उसकी मृत्यु होगी ही।
वह राख में रूपांतरित होगा ही।
दूसरी ओर,
तुम चाहे कितने भी लापरवाह रहो,
आत्मा परतंत्र नहीं ही बनेगी।
शरीर आग में जल रहा होगा तब भी
वह अखंड ही रहने वाली है।
इसलिए तुम्हें जो कुछ करना है- समझना है,
नियंत्रण करना है, ध्यान रखना है-
वह सब मन के साथ करना है,
मन के लिए करना है।
गलती से भी तुमने उसे शरीर की तरफ
मोड़ दिया तो 'भयभीत मनोदशा'
तुम्हारी निमित्त बन जाएगी।
और यदि बहादुरी के साथ तुमने उसे
आत्मा पर केन्द्रित कर दिया तो
''अब हम अमर भये न मरेंगे'' का
सूत्र तुम्हारे हृदय में स्पंदित होता ही रहेगा।

-'शिक्षा के दूध में संस्कार की शक्कर' पुस्तक से साभार

English-Section

SALLEKHANA*

Justice Sh. T.K. Tukol (Retd.)

Bhagavan Mahavira has said that there are two ways of ending life with death: death with one's will, and death against one's will. An ignorant man attached to pleasures and amusements, transgresses the law of Dharma and embraces unrighteousness, trembles in fear when death is at hand and dies in misery having lost his chance of making the best of life. The virtuous who control themselves and subdue their senses, face death full of peace and without injury to anyone; such a death falls to lot of every monk and some superior house-holder.[1]

Sallekhana is facing death (by an ascetic or house-holder) voluntarily when he is nearing his end when normal life according to religion is not possible due to old age, incurable disease, severe famine;[2] he should subjugate all his passions and abandon all worldly attachments, observe all austerities, gradually abstain from food and water and lie down quietly meditating on the real nature of the self until the soul parts from the body. The basic concept of this vow is that man, who is the architect of his own fortune, should face death in such a way as to prevent the influx of new Karmas and liberate the soul from the bondage of Karmas that may be still clinging to it.

Every soul is pure and perfect by nature; it is characterised by infinite perception or faith, infinite knowledge, infinite bliss and infinite power. It is associated with Karma and therefore becomes subject to numerous forms of existence subject to births and deaths. The supreme object of religion is to show the way for liberation of the soul from the bondage of Karmas. Those who adopt the vow immediately become self-reliant, self-composed and self-concentrated; they cease to be agitated by personal considerations and suffering, and rise above the cravings and longings of the flesh. The soul is lifted out of the slough of despondency and negativity. To be able to control one's conduct at the moment of death is the fruit (culmination) of asceticism.[3]

*In Shwetambar texts mostly 'Saṃlekhanā' word appears. Both the words are right.

A comprehensive exposition of this vow is to be found in the 'Ratnakaraṇḍa Srāvakācāra' by Ācārya Samantabhadra, who lived in the second century A.D. The vow is also called sanyāsa-maraṇa. He who adopts the vow should, with a pure mind, give up friendship, enmity, company and possessiveness. He should forgive his own relations, companions and servants, and should, with sweet words, ask for pardon of everybody. He should discuss frankly with his Guru (preceptor) all the sins committed by himself, or sins which he abetted others to commit, or consented to their commission by others, and abide by the great vow till death. During the period, he should wholly efface from his mind all grief, fear, regret, affection, hatred, prejudice etc. and with strength of mind and enthusiasm, he should keep his mind supremely happy with the nectar of scriptural knowledge. He should gradually give up food and take only liquids like milk, butter-milk etc.; later, he should give up milk also and take only warm water. Thereafter, he should give up even warm water gradually according to his capacity, continue his fast and quit the body while the mind is wholly occupied with the meditation of the **namokāra-mantra**.

During the period of observance of this vow, he must avoid the five kinds of transgressions:-

1. He should not entertain a feeling that it would have been better if death had come a little later.
2. He should not also wish for a speedy death.
3. He should entertain no apprehensions as to how he would bear the pangs of death.
4. He should not remember his relatives and friends at the time of death.
5. He should not wish for a particular kind of fruit as a result of his penance.[4]

According to Umāsvāmi or Umāsvāti, the vow of Sallekhanā should be adopted most willingly or voluntarily when death is very near.[5] A person adopting the vow can obtain his peace of mind by making a frank confession of his sins, either committed or abetted; when it is not possible to approach an Ācārya or Guru, one should sit calmly, meditate

upon the pañca-parameṣṭhis and recall to one's mind all types of sins and transgressions either committed by oneself or abetted by oneself. He should shut out all his evil thoughts. If he is suffering from deadly or serious disease, he should endure all the pangs with equanimity and tranquility without exhibiting any signs of suffering, with an inborn conviction that the disease itself is the result of his own Karmas. He should eliminate all his passions and mental weaknesses. The mind should be filled with the ambrosial knowledge of scriptures that gives him joy and strength.[6]

The body has to be protected so long as it is useful for attainment of Right faith, Right Knowledge and Right Conduct. The body is mortal; if it dies, you can have another body; but if you sacrifice your religion for the sake of your body, you cannot regain the sanctity of your religion which helps you in your spiritual realisation. When life is coming to an end by a natural cause or by some calamity like a disease, or attack from an enemy, it is proper to adopt the vow of death by fasting and meditation in fulfillment of the religious vows and practices.[7]

It is common knowledge that amongst the Jainas, the monks, nuns, house-holders and the house-ladies are accustomed to fasting during the course of their normal life. Hermann Jacobi says:-'Among the austerities, fasting is the most conspicuous; the Jainas have developed it to a kind of art and reached a remarkable proficiency in it.'[8] During the period of fast, one ought to acquire complete detachment and peace of mind not only by freeing the mind from passions of every kind like anger, greed, love and pride etc. but also by repentance for sins or lapses committed after making a frank and full confession of the same before his or her Guru. One should acquire mental and spiritual poise before adopting the vow.

The 'Ācārāṇga Sūtra' has explained the three kinds of Sallekhanā: Bhaktapratyākhyāna maraṇa, Ingita maraṇa and Pādapopagamana.[9] The first one is prescribed for a well-controlled and instructed monk. He should desist from doing, causing, or allowing to be done any movement of the body, speech or mind. The Second on which is still more difficult requires the monk not to stir from one's place and check all motions of

the body. The third one is still more difficult. The monk should examine the ground most carefully and lie down wholly unmindful of his body, putting up with all kinds of mortifications of the flesh. He should seek enlightenment in the contemplation of the eternal characteristics of the soul without any delusions of life. A monk or a pious layman should reach the end of his life without any attraction to external objects after having patiently chosen anyone of the three methods for attainment of Nirvāṇa.

Ācārya Kundakunda has referred to this vow and stated that death is of three kinds: Bāla-maraṇa, Bālapaṇḍita-maraṇa, and Paṇḍita-maraṇa.[10] Bāla-maraṇa is the death of an individual who has right faith but does not possess full self-control. The second is a kind of death which is faced by a house-holder who has reached the fifth stage of his spiritual progress, and who is unable to abstain from the hiṃsā of one-sensed beings and is still indecisive in the matter of self-restraint. Paṇḍita-maraṇa is the death of an ascetic who has attained pure knowledge about his own self. The death of Tirthankaras or Gaṇadharas is this kind.

Since the main object of all vows and austerities is the liberation of the soul from the bondage of Karmas, the objectives of the vow of Sallekhanā are: the Karmas obscure the inherent qualities of the soul; the mind and body should be led towards purity, and help the soul to live a life of compassion. While fasting purifies the body, meditation and introspection assist the soul in its purification, elevation and realization. When the body is to perish due to any of the causes mentioned above, a course of planned death is preferable to a life of irreligion. Before accepting the vow, the monk or the house-holder must conquer all his passions. He should achieve complete detachment from all ties of affections and be free from prejudice and ill-will. Supreme forgiveness towards all must govern his attitude of mind after having begged for forgiveness from everyone else for himself. The mind should be full of joy and equanimity. The acceptance of the vow is thoroughly voluntary with no faltering or lapse of any kind in mind or conduct. Death by Sallekhanā according to scriptural rules is the victory of the soul over Karmas and other infirmities of the mind and body. It is an act of

fulfillment and a fitting culmination to a life of piety and religion.

In spite of its religious character and austerity, some western and eastern scholars have characterised Sallekhanā as suicide or a form of suicide. Such a view overlooks the sociological and psychological distinctions that exist between the characteristics of Sallekhanā and of suicide. The psychology of a person committing suicide is marked by one or more of the following characteristics:

1. Ambivalence or a desire to die, which simultaneously creates a conflict in the mind.
2. A feeling of hopelessness or helplessness, with inability to handle the problem on hand.
3. A physical or psychological feeling of exhaustion, frustration or both.
4. The mind is full of anxiety, tension, depression, anger, or guilt or some of them.
5. There are feelings of chaos and exhaustion in the mind with inability to restore order or calm.
6. The mind is unable to see any solution to the situation causing the agitation.
7. There may be loss of interest or fear of life, with excitement, frustration or extreme depression.
8. In suicide, death is brought about secretly and suddenly by means of offence: hanging, cutting, poisoning, shooting etc.

A monk or a house-holder adopting the vow of Sallekhanā has none of these infirmities of the mind or emotional excitement, depression, or frustration. Suicide is committed to escape from certain situations from which the victim is unable to save himself. The idea is to put an end to life immediately by some violent or objectionable means. The suicide results in harm to the family or kith and kin of the person who commits suicide.

While suicide is committed in secrecy and by adoption of questionable devices, Sallekhanā is adopted when the mind is free from all passions with the full consent of the Guru and with an open mind of forgiveness and compassion towards all; death evokes devotion and religious feelings while in the case of suicide, death is attended with

horror or scorn.

There is thus difference between suicide and Sallekhanā as regards intention. situation, means adopted and the consequences of death. Jaina thinkers have addressed themselves to this question and have given cogent reasons for saying that Sallekhanā is not suicide. Amṛtacandra Sūri has defined suicide with such precision that his definition can stand the scrutiny of any modern jurist: 'He, who actuated by passions, puts an end to his life by stopping breath or by water, fire, poison or weapons is certainly guilty of suicide.'[11] In Sallekhanā, all desires and passions are subjugated and the body is allowed to wither away gradually by voluntary fasting with no bodily pangs or pains when the mind is blissfully peaceful. C.R. Jaini has summed up the position of Sallekhanā vis-a-vis suicide thus: "There is no question here of a recommendation to commit suicide or of putting an end to one's life, at one's sweet-will and pleasure, when it appears burdensome, or not to hold any charm worth living for. The true idea of Sallekhanā is only this, that when death does appear at last, one should know how to die, that is, one should die like a man and not like a beast, bellowing and panting and making vain efforts to avoid the unavoidable.... By dying in the proper way, will is developed and it is a great asset for the future life of the soul which is a simple substance, and will survive the bodily dissolution and death..... The Jaina Sallekhanā leaves ample time for further consideration of the situation, as the process which is primarily intended to elevate the will is extended over a period of days and is not brought to an end at once.[12]

In sum, suicide is an act of mental aberration due to some cause which the victim cannot control, while Sallekhanā is a well-planned death in pursuance of noble laws of religion inspired by the highest ideal of self-realisation or peaceful death to ward off further entanglement in the bondages of Karms. Hundreds of instances of Sallekhanā have been recorded in the inscriptions found in the different parts of the State of Karnataka and collected in the twelve volumes of Ephigraphia Carnatica published by the State Government.

The latest instance in that of the greatest modern saint by name Śri

Sāntisāgar Mahārāj who observed the vow in September 1955 on the Hills of Kunthalagiri in the Maharashtra State (India). (Acharya Hastimal is another instance, who observed this vow in April 1991 in Nimaj Village of Pali District in Rajasthan. Other instances also support this vow of samādhi Maraṇa.)

Bibliography and References

1. Sacred Books of the East. Vol.45, Lecture V. (English translation of Uttaradhyāyana Sutra by Hermann Jacobi) Dover Publication Inc., New York.
2. Samantabhadra Ācāraya: Ratnakaraṇḍa Srāvakācāra, Verse 122; Jaina Samskriti Saṃrakṣaka Sangha, Sholapur.
3. Jain C.R.; The House-holder's Dharma pp 56-58 (English translation of Ratnakaraṇḍa Srāvakācāra), The Jaina Parishad Publishing House, Bijnor (U.P.)
4. Ibid, Verse 129
5. Umāsvāmi: Tattvarthasutra (Reality) Chap. VII, Sutra 22 (English translation of Pujyapāda's Sarvārthasiddhi) Vira Sāsaṇa Sangha, 29 Indra Bisvas Road, Calcutta-37.
6. Viranandi: Ācārasāra, Canto X, Sri Śāntisāgar Digambara Granthamala, Baramati (Dist. Pune).
7. Asādhara: Sāgāra-dharmāmrita Canto VIII, Verse 5, Srutabhandara Va Granthaprakaśana Samiti, Phaltan, Dist. Satara, Maharashtra.
8. Jacobi, Hermann; Studies in Jainism pp 33, Jaina Sahitya Samsodhaka Kāryā laya, Ahmedabad (India).
9. Jacobi: Sacred Books of the East, Jaina Sutras, Vol XXII (Acaranga-sutra) pp 76-77. Dover Publication Inc. New York.
10. Kundakunda: Mulācāra with Hindi translation by Jindas Phadakule Śāstri. Canto X, Verse 31. Srutabhandāra Va Grantha-prākasana Samiti, Phaltan, Dist. Satara, Maharashtra.
11. Amṛtacandra Sūri; Purusartha Siddhyupāya, Verse 178 (Edited by Ajitprasad with commentary in English) The Central Jaina Publishing House, Ajitashrama, Lucknow.
12. Jain C.R.; Jainism and World Problems pp 178-179. The Jaina Parisad, Bijnor (U.P.)

-Justic T.K. Tukol Educational and Charitable Trust,
Bangalore-560011(Karnatka)

अध्यात्म

दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (4)

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

86. संकल्प-विकल्प करने से अर्थात् ऐसा होना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए इस प्रकार के मानसिक विकल्पों से दुःख होता है।
87. क्षणिक सुख को सत्य व स्थायी मानने वाला अविनाशी वास्तविक सुख का अनुभव नहीं कर सकता। क्षणिक सुख का भोगी शाश्वत सुख का पुजारी नहीं हो सकता।
88. सर्वांश में सुख का त्याग करते ही जगत से अतीत अलौकिक आनंद का अनुभव हो जाता है। फिर कुछ भी अभाव, पाना, करना, जानना आदि शेष नहीं रहता है।
89. अभाव शेष न रहना ही ऐश्वर्य संपन्न होना है।
90. अभाव का अभाव होना पूर्णता है।
91. पाना शेष न रहना ही चित्त का शान्त होना व प्राप्तकाम होना है। शान्ति का सुख प्रतिक्षण क्षीण नहीं होता है, अतः क्षतिरहित है।
92. जिस विषय-सुख का त्याग कर दिया जाता है, उस सुख के लिए प्राप्त होने वाले पदार्थ की पराधीनता से मुक्ति मिल जाती है।
93. जिसकी आवश्यकता नहीं रहती उसके संबंध में कुछ जानना, उसे पाने के लिए कुछ करना शेष नहीं रहता है।
94. आंशिक सुख व आंशिक दुःख सभी को होता है। यदि दुःख पूर्ण हो जाय अर्थात् संसार में सुख का दर्शन नहीं हो, सर्वत्र दुःख ही दिखे तो सुख पाना शेष नहीं रहेगा। वैषयिक सुख से मुक्ति होते ही दुःख से मुक्ति स्वतः हो जाती है। सुख-दुःख से मुक्त होना अतीत होना ही परमानन्द को प्राप्त करना है।
95. दूसरे के दुःख से करुणित होने वाला ही अपने सुख की दासता से मुक्त होता है।
96. सुख के प्रलोभन से किया गया कार्य आसक्ति ही पैदा करेगा और आसक्ति से अभाव, जड़ता, पराधीनता ही उत्पन्न होगी।
97. वियोग का दुःख उसे ही भोगना पड़ता है जिसने संयोग का सुख भोगा है।
98. अपने अधिकारों का त्याग करना और दूसरों के अधिकारों की रक्षा करना, संघर्ष, शोषण, द्वन्द्व व समस्याओं के दुःखों से छुटकारा पाना है।
99. आत्मीयता व प्रेम के प्रभाव से शरीर, इन्द्रिय, मन एवं बुद्धि के विकार मिटकर इनमें

स्वस्थता आती है।

100. कामना, ममता, अहंता आदि समस्त दोषों का त्याग करने से निर्दोषता स्वतः प्राप्त हो जायेगी, जिससे बंधनों व दुःखों से स्वतः मुक्ति हो जायेगी, प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा।

101. जैसे संचय व संग्रह में एकरूपता है, उसी प्रकार परिचय और परिग्रह एक हैं। अतः निजानन्द के साधक के लिए जैसे परिग्रह बाधक है वैसे ही परिचय भी बाधक है।

102. दोषों के त्याग में निर्दोषता और निर्दोषता में प्रसन्नता निहित है। दोषों के त्याग में किसी अभ्यास, अनुष्ठान व श्रम साध्य उपाय की आवश्यकता व किसी वस्तु, व्यक्ति आदि की अपेक्षा नहीं है। अतः दोषों के त्याग में, प्रसन्नता-प्राप्ति में मानव मात्र सर्वथा समर्थ व स्वाधीन है।

103. सुख-दुःख का भोगी प्राणी सुख-दुःख में आबद्ध रहता है। सुख-दुःख का बंधन सुख-दुःख के सदुपयोग से मिट सकता है। सुख का सदुपयोग सेवा में और दुःख का सदुपयोग भोगों के त्याग में निहित है। अतः सुख के बंधन से मुक्त होने के लिए सेवा को और दुःख से मुक्त होने के लिए दोषों के त्याग को अपनाना अनिवार्य है।

104. दुःख का भोग सुख की दासता को पुष्ट करता है और दुःख का प्रभाव (त्याग) सुख की दासता को नष्ट करता है। इस दृष्टि से दुःख का भोग अहितकर और दुःख का प्रभाव हितकर सिद्ध होता है।

105. कोई भी प्राणी सुख-दुःख से रहित नहीं है, किन्तु सुख-दुःख आने-जाने वाले हैं, सदा रहने वाले नहीं हैं। अतः वे जीवन नहीं हैं। इसलिए मानव को सुख-दुःख से अतीत के आनन्दमय जीवन के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए।

106. संकल्प पूर्ति के सुख का भोग नवीन संकल्प को उत्पन्न करता है। संकल्प उत्पत्ति, अपूर्ति व पूर्ति में आबद्ध मानव में अपने वास्तविक लक्ष्य की प्राप्ति की प्रेरणा नहीं जगती है।

107. 'संसार में जो कुछ मिला है वह मेरा नहीं है, मेरे सुख भोग के लिए नहीं है और मुझे संसार से कुछ नहीं चाहिए' यह त्याग है। जो कुछ मिला है उसे दूसरों के हित में लगा देना, उनके साथ सद्व्यवहार करना और बदले में कुछ न चाहना सेवा है। सेवा से संसार को प्रसन्नता होती है, सुन्दर समाज का निर्माण होता है और त्याग से स्वयं को प्रसन्नता होती है।

108. विषय-सुख का भोग इतना भयंकर विष है कि विष खाने से तो मनुष्य एक बार मरता है, परन्तु विषय सुख भोगने से अनेक बार जन्म-मरण करना पड़ता है।

-82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

परिवार-स्तम्भ

संस्कार-निर्माण

प्रो. सुमेरचन्द जैन

'संस्कार' संस्कृत भाषा का शब्द है। संस्कार, संस्कृति, संस्करण शब्द लगभग समानार्थक हैं। संस्कार का अर्थ है- सुसंस्कृत करना, सम्यक् रूप से करना। संस्कार शब्द का अर्थ हम किसी वस्तु को और किसी व्यक्ति को परिष्कृत करने में, उसका अलंकरण करने में, उसका शृंगार करने में प्रयोग करते हैं। हमारे अन्तःकरण में पहले से ही जो संस्कार (सूक्ष्म भाव) पड़े हुए हैं, उस अर्थ में भी संस्कार शब्द का प्रयोग किया जाता है। संस्कार का मुख्य ध्येय होता है कि हम अन्तःकरण को शुद्ध करते हुए आत्म-साक्षात्कार कर सकें।

प्रकृति, संस्कृति और विकृति- ये तीन स्थितियाँ हैं। मनुष्य मूलतः प्रकृति में जीता है। प्रकृतिजीवी होने के कारण उसकी आवश्यकताएँ सीमित होती हैं, इच्छाएँ नियंत्रित होती हैं और चेष्टाएँ संयत होती हैं। सामाजिक जीवन का धरातल बनने से पहले मनुष्य की यही स्थिति थी। जबसे मनुष्य ने समूह बनाकर जीना शुरु किया, उसने अपने प्राकृतिक जीवन को संस्कारी बनाने का लक्ष्य बनाया। संस्कारों का प्रभाव मनुष्य के खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, पर्व-उत्सव आदि सभी पहलुओं पर होता है। संस्कार निर्माण के लिए उपयुक्त वातावरण और समुचित प्रशिक्षण दोनों आवश्यक हैं।

संस्कारों की आवश्यकता

अच्छी आदतों व आदर्शों का निर्माण है- संस्कार। इससे व्यक्ति का जीवन सुख और शान्ति से परिपूर्ण होता है और यह स्वस्थ समाज व राष्ट्र के निर्माण का मुख्य आधार होता है। संस्कार का अर्थ है- अहिंसा, मैत्री, सत्य, सहिष्णुता, समता, मानवीय पक्ष आदि गुणों का जीवन में समावेश। वर्तमान युग में सारा विश्व संस्कारहीनता की भयंकर समस्या से जूझ रहा है। महानगरों में शराब, ड्रग्स, धूम्र-पान एवं अश्लील फिल्में देखना आधुनिक जीवन का अंग माना जा रहा है। एक सर्वे के अनुसार धूम्र-पान, मद्य-पान एवं अश्लील नाच गाने एवं फिल्में देखने में लड़कियाँ भी पीछे नहीं हैं। मनोवैज्ञानिकों के निष्कर्षानुसार अधिकांश बच्चे बुरी संगत की चपेट में हैं और खतरनाक स्तर तक पहुँच चुके हैं। जिन आदतों को सामाजिक दृष्टि से वर्जनीय माना जाता है, उनको वे बड़ी सहजता के साथ अपना लेते हैं। इनमें धूम्र-पान, मद्यपान, अश्लीलता प्रमुख है। इन सब गलत आदतों के लिए आधुनिक प्रचार माध्यम काफी हद तक जिम्मेवार हैं। छोटे बच्चे अनुशासनहीन, उद्दण्ड, क्रोधी, हिंसक होने के साथ मानसिक विकृतियों से ग्रस्त होते जा रहे हैं। वर्तमान में सुसंस्कारों के

अभाव के कारण ही संस्कार निर्माण की आवश्यकता है।

संस्कार-निर्माण बचपन से ही

संस्कार जन्म या गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाते हैं। गर्भ में जब बालक आठ माह का हो जाता है, तब से पहचानने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है, और उससे ही संस्कार निर्माण होने लगते हैं। लेकिन अधिकांश संस्कार जन्म के बाद प्रथम पाँच वर्षों में बनते हैं और बाद में भी बरकरार रहते हैं। बालक अपने वातावरण में जो भी सुनता है और देखता है, सबको चुपचाप आत्मसात् करता जाता है। छोटे बालक का मस्तिष्क एक कैमरे की तरह कार्य करता है जो चुपचाप सभी चित्रों का रेखांकन करता चला जाता है। मस्तिष्क इन चित्रों को वीडियो कैसट की तरह स्मृति में संगृहीत कर लेता है और इनमें से जिन चित्रों पर बालक ने प्रतिक्रिया की है, वे संस्कार के रूप में निर्मित हो जाते हैं।

बालकों में संस्कारों का बीजारोपण सहजता के साथ स्थायी रूप से किया जा सकता है। अगर माता-पिता, शिक्षक और धर्मगुरु जागरूक हैं तो अच्छे संस्कारों का निर्माण किया जा सकता है। प्रारम्भ में बच्चे का जो विकास होता है, वह संस्कारों की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। बचपन में ही चोरी, झूठ, मारपीट के जो संस्कार बच्चा सीखता है, वह गलत संगति से सीखता है। अभिभावक को विशेष रूप से इस पर ध्यान देना चाहिए। माता-पिता एवं परिवार में कोई भी ऐसा व्यवहार न करे जिसका बालक के अवचेतन मन पर नकारात्मक प्रभाव पड़े। परस्पर की कलह और अमर्यादापूर्ण आचरण बच्चे में एक मजबूत नींव बना देता है, उसकी दिशा गलत हो जाती है। बच्चे का मस्तिष्क बहुत ग्रहणशील होता है। वह हर बात को पकड़ लेता है। संस्कारों की खूंटी बहुत मजबूत होती है। आदमी का जीवन संस्कार से चलता है, पढ़ाई से नहीं चलता।

संस्कारों का बन्धन सबसे ज्यादा मजबूत होता है। वे माता-पिता, जो अपने पुत्र के लिए बहुत सम्पत्ति छोड़कर जाते हैं लेकिन संस्कारों की दृष्टि से उसे सम्पन्न नहीं बनाते, वे उसके शत्रु हैं। उनकी अपेक्षा वे माता-पिता कहीं श्रेष्ठ हैं जो धन-दौलत तो ज्यादा छोड़कर नहीं जाते, किन्तु सुसंस्कार देकर जाते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है-

''पूत सपूत तो क्यूं धन संचै, पूत कपूत तो क्यूं धन संचै?''

संस्कार-निर्माण का अभाव क्यों?

आखिर संस्कारों में कमी क्यों आती जा रही है? आधुनिक घरों में होटलों की तरह कमरों के दरवाजे एक गलियारे में खुलते हैं। इसमें आने-जाने वालों का पता बगल में रहने वालों को नहीं रहता। पहले परिवार कितना भी बड़ा हो, इकट्ठा रहता था। आज कितना

भी छोटा हो, एक जगह तो रहता है पर इकट्ठा नहीं रहता। उनका पता तो एक ही रहता है, पर उन्हें एक दूसरे का पता नहीं रहता। पता इसलिए नहीं रहता क्योंकि जब एक कमरे में नित्यकर्म से लेकर नहाने और खाने तक की सुविधा मिल जाए तो बगल में किसके साथ क्या बीत रहा है, कौन ध्यान देगा? बुजुर्गों ने दीवारें इसलिए बनवायी थी कि एक-दूसरे के बीच शर्म बनी रहे। किसी को क्या पता था कि दीवारें इतनी बेशर्म हो जाएँगी कि एक-दूसरे को देखना भी पंसद नहीं करेगी।

देखा जाए तो दीवार के बीच में एक ईंट ही तो है, जिस ईंट का एक कोना एक भाई का समर्थक है और दूसरा कोना दूसरे भाई का। समाज के विकास का एक रूप यह भी देख लीजिए कि माँ-बाप की पुण्यतिथि याद नहीं रहती और लोग बच्चों के जन्म-दिन को भूलते नहीं। ऐसा क्यों होता है? इसकी वज़ह यह है कि विवाह के समय जो लड़की संस्कार लेकर आती थी, वह अब कार लेकर आने लगी है। जिस लड़की को आप यह सोचकर नहीं लाए कि घर में लक्ष्मी आई है, बल्कि यह कि यह साथ में लक्ष्मी लाई है, तो गड़बड़ जरूर होगी।

संस्कार-निर्माण कैसे?

हम यह चिन्तन करें कि अच्छे संस्कारों का निर्माण कैसे हो जिससे जीवन शांति के साथ बीते। अच्छे संस्कारों का एक कारण है- अच्छी संगति। अगर सद्साहित्य पढ़ने को मिले, तो ही अच्छे संस्कारों का निर्माण हो सकता है। अध्यात्मवेत्ताओं ने इसीलिए सत्संगति की बड़ी महिमा गाई है। बिना सत्संग के विवेक नहीं होता। मानव समाज में सज्जन और दुर्जन दो प्रकार की कोटियाँ हैं। सज्जन स्वयं अच्छे आचरण वाला होता है और दूसरे को भी अच्छे आचरण का ही संबोध देता है। दुर्जन का स्वयं का तो आचरण अच्छा नहीं होता और दूसरों को भी वह गलत रास्ते पर ले जाता है। इतिहास में अंगुलिमाल की कथा, रोहिणिये चोर की कथा विख्यात है। उन सबके जीवन में सत्संग से ही अचानक बहुत बड़ा परिवर्तन आया।

संस्कार निर्माण के लिए आवश्यक है तोड़ने का नहीं जोड़ने का संस्कार विकसित हो। इसके लिए एक सूत्र स्मरणीय है- "मैं मानवीय एकता में विश्वास करता हूँ।" मानवीय एकता में विश्वास करने वाला तोड़ने की बात कभी नहीं सोच सकता। यदि अहिंसा का समुचित प्रशिक्षण दिया जाए तो संस्कार-निर्माण की दिशा में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

वर्तमान में जो सामाजिक परिवेश है, वह संस्कारों के निर्माण में सहायक नहीं है, भले ही वह पारिवारिक वातावरण हो, सामाजिक-स्थिति हो अथवा पाठ्यक्रम। इन तीनों से

संस्कारों का निर्माण नहीं हो रहा। अतः एक ऐसे अभिनव कार्यक्रम पर बल दिया जाए जिसके माध्यम से ऐसे स्वच्छ वातावरण का निर्माण हो सके जिससे भावी पीढ़ी स्वयं के जीवन का उत्तम निर्माण कर सके। समाज के सामने उच्च आदर्शों का प्रस्तुतीकरण कर देश के लिए उन्नत राष्ट्रीय चरित्र की स्थापना की जा सके। ऐसा उपक्रम हो सकता है बालक-बालिकाओं के लिए ज्ञानशालाएँ स्थापित करना, जिसके माध्यम से सद्संस्कारों का निर्माण अर्थात् त्याग की भावना का विकास, अच्छे आचरण का जीवन में प्रवेश, सेवा की भावना, कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा और स्वयं को अनुशासित करने की कला का निर्माण होगा।

-10, इण्डस्ट्रीयल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर-344001 (राज.)

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

अन्तर-नयन

बहुत किया मोह नींद में शयन
अब तो खोल अन्तर-नयन,
कर मोक्ष-मार्ग का चयन।।

आत्मा का स्वाद

विषय से विषाद,
कषाय से अवसाद,
और दुर्गति मरने के बाद,
अब तो ले आत्मा का स्वाद,
मत कर अपने को बरबाद।।

शील की महिमा

शील की महिमा को
सुन, समझ और चख,
स्वयं को दुःखद, दुःशील से
दूर ही रख।।

कर्तृत्व

त्याग दे कर्तृत्व,
यह पैदा करता है कृति का ममत्व।।

वह कैसा जैन

भोगों के पीछे दौड़ता है,
दिन-रैन, नहीं है चैन,
वह कैसा जैन।।

कारावास

जिसे होता है आत्मा में विश्वास,
उसी का छूटता है
काया का कारावास।।

प्रभुवाणी

तेरी वाणी, जग कल्याणी,
सुनकर प्राणी, होते णाणी (ज्ञानी)।।

पहचान

खूब जानो, पर
जानकारी को ही जीवन की
इतिश्री मत मानो,
स्वयं को पहचानो।।

-संकलित

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (11)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-**सम्पादक**

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(इक्कीसवाँ अध्ययन-समुद्रपालीय)

चम्पानगरी में रहता था, पालित एक व्यववयासी,
जिन प्रवचन का ज्ञाता भारी, प्रभु का था अनुयायी,
पालन कर आगार धर्म को, श्रावक श्रेष्ठ कहालो।।279।।
करने को व्यापार एक दिन, दूर देश में पहुँचा,
न्यायपूर्ण व्यवहार के कारण, नगरी में थी चरचा,
नैतिकता की महिमा न्यारी, बनकर नाम कमालो।।280।।
पिहुण्ड नगर में एक वणिक ने, योग्य समझ पालित को,
हर्षित होकर निज पुत्री को, सौंपा अभिलक्षित को,
चरित्रवान है सबका प्यारा, सद्गुण को विकसालो।।281।।
लौटा अपने देश को पालित, पत्नी संग सुहानी,
बीच सिन्धु में जन्म दिया था, पुत्र एक वरदानी,
समुद्रपाल था नाम धराया, उसकी महिमा गा लो।।282।।
क्षेम कुशल सब चम्पा आये, घर में बजी शहनाई,
यौवन खिलने लगा पुत्र का, कला-विद्वत्ता पाई,
अद्भुत उसका नीति कौशल, मन में खुशी बसालो।।283।।
परिणय किया समुद्रपाल का, अति सुन्दर एक नारी,
देवतुल्य सुख भोगे उसने, निर्भय बन रसधारी,
कामभोग में सार नहीं है, इसका बोध करालो।।284।।

महल से देखा एक वध्य को, वध स्थल ले जाते,
अपराधी की दशा देखकर, चिन्तन कण चेताते,
अशुभ कर्म का अशुभ अन्त है, कर्म का कर्ज चुकालो।।285।।
समुद्रपाल की प्रज्ञा जागी, कर्मों का यह फल है,
जैसी करनी वैसी भरनी, नियम सदा अटल है,
दुष्कर्मों को छोड़ के जल्दी, जीवन को महकालो।।286।।
मुक्ति की अभिलाषा उद्बुद्ध, विरति भाव गहराया,
प्रबुद्ध हुआ बंधन को तजने, आत्म धर्म ही भाया,
अनुमति लेकर मात-पिता की, मुनि का धर्म निभालो।।287।।
क्लेशकारी भयप्रद आसक्ति, बाह्य और आभ्यन्तर,
सर्व संग को तजते मुनिजन, परीषह सारे सह कर,
व्रत-पालन और शील धर्म में, अपनी रुचि जगालो।।288।।
धारण करते पंच महाव्रत, वीतराग पथ चलकर,
क्षमा दया संयम का पालन, पापकर्म को तजकर,
निर्भय होकर विचरण करके, अशुभ वचन को टालो।।289।।
करें उपेक्षा प्रतिकूलों की, पूजा और निन्दा की,
उपसर्गों को सहे शांति से, चर्या नहीं प्रमाद की,
रहें अडोल अकम्प निरन्तर, ऋजुता मन में बसालो।।290।।
नहीं घबरायें बाधाओं से, खिन्न कभी नहीं रहते,
भाव अकिंचन रहे सदा ही, परम पदों से सजते,
षट्कायी जीवों के रक्षक, परिजन संग भूलालो।।291।।
तत्त्वज्ञ बने श्रुतज्ञान सीखकर, चर्या रहे अनुत्तर,
ऐसे मुनिवर धर्म संघ में, आलोकित ज्यों दिनकर,
समुद्रपाल मुनि शोभित इनसे, उनको शीश नमालो।।292।।
निश्चल थे संयम में मुनिवर, निज के बने अधीश्वर,
सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हुए, पाप-पुण्य का क्षय कर,
भवसागर को तिर करके अब, आवागमन मिटालो।।293।।

(बाईसवां अध्ययन- रथनेमीय)

सौरीपुर में समुद्रविजय थे, राजा वैभवशाली,
महायशस्वी अरिष्टनेमि, सुत लक्षण गौरवशाली,
महादमीश्वर लोकनाथ के, दर्शन से सुख पा लो।।।294।।

अरिष्टनेमि सज्जित होकर के, पहुँचे जब परिणय को,
करने वरण राजीमती का, सुन्दर ज्योतिर्मय को,
वरमाला के ठाट निराले, शोभा मन में बसालो।।।295।।
इक बाड़े में बंदी देखे, पशु-पक्षी उत्पीड़ित,
चीख रहे थे डर के मारे, शरणहीन थे शंकित,
क्यों चिल्लाते हैं ये सारे, इसका राज निकालो।।।296।।
सरल प्रकृति के जीवों को, भोजन हित काटेंगे,
माँसभक्षी बरातीजन फिर, गो भोजन पायेंगे,
पशु-पक्षी के दारुण दुःख को, अन्तर्मन को सुनालो।।।297।।
व्यथित हुए सुन करके नेमि, आँख में आँसू आये,
निमित्त बनेगा मेरा परिणय, मैंने सब मरवाये,
श्रेयस्कारी काम नहीं है, इनको अभी छुड़ालो।।।298।।
मुक्त हुए हर्षित पशु-पक्षी, इधर-उधर को दौड़े,
करुणा से विगलित हो नेमि, रथ को पीछे मोड़े,
बन्धन मुक्त हुए वे प्राणी, खुद का बन्ध छुड़ालो।।।299।।
अरिष्टनेमि ने त्यागी अपनी, परिणय की अब इच्छा,
भावी अनिष्ट देखकर सोचा, दीक्षित होना अच्छा,
स्वर्ग से देव उतर कर आये, उत्सव आज मनालो।।।300।।
लोच किया फिर अरिष्टनेमि ने, पंचमुष्टि से खुद ही,
कर लिये धारण महाव्रतों को, पाने को निज पद ही,
इष्ट मनोरथ पूरा करने, रत्नत्रयी अपनालो।।।301।।
अरिष्टनेमि जब लौट पड़े तो, राजीमती घबराई,
मूर्च्छित होकर गिरी धरा पे, सखियों ने सहलाई,
त्याग दिया जब नेमि ने ही, अब उनके पथ चालो।।।302।।
राजीमती जब शांत हुई तो, चिन्तन का स्वर गूँजा,
मैंने नहीं तजा नेमि को, पथ नहीं अब दूजा,
दीक्षा लेकर व्यथा छोड़ दी, प्रभु से प्रेम जुड़ालो।।303।।
पर्वत पर वर्षा से भीगी, बीच राह में जाते,
गई गुफा में राजीमतीजी, अंधकार के आते,
वस्त्र सुखाने लगी साध्वी, निर्जनता को टालो।।।304।।

नग्न रूप से राजीमती को, ध्यानीमुनि ने देखा,
पता चला जब राजीमती को, मन में भय की रेखा,
समुद्रविजय के अंगजात के, मन को अभी सम्भालो।।।305।।
रथनेमि का मन ललचाया, राजीमती से बोला,
डरो नहीं है रमणी मुझसे, अपना परिचय खोला,
नारी का संसर्ग निषिद्ध है, चंचलता को टालो।।।306।।
वस्त्रों से तन ढक कर बोली, नहीं चाहती तुझको,
तू चाहे साक्षात् इन्द्र हो, मतलब नहीं है मुझको,
शील की रक्षा श्रेष्ठ धर्म है, शीलव्रतों को पालो।।।307।।
अगन्धन कुल के सर्प कभी भी, वमन किया नहीं खाते,
अग्नि में जल जाते हैं पर, कुल नहीं दाग लगाते,
भोग त्याग कर फिर ललचाना, शर्म से आँख गड़ालो।।।308।।
उच्च कुलों से आकर के भी, वमन किया तू पीता,
रथनेमि धिक्कार तुझे है, क्यों जग में तू जीता,
शोभा नहीं देता है तुझको, कुल की लाज बचालो।।।309।।
समुद्रविजय के हे सुत सुनलो, उग्रसेन की पुत्री,
उच्च कुलों से हैं हम दोनों, उजली हो यह रात्रि,
स्वस्थ चित्त होकर के अब तुम, संयम धन लौटालो।।310।।
सुंदर रूप देख नारी का, उसमें यदि ललचाना,
होगा नहीं पात्र मोक्ष का, बने दुःखद अफसाना,
भटके मन को अब समझा के, अपना धर्म बचालो।।।311।।
शीलवती के वचनों को सुन, रथनेमि फिर संभला,
आत्मधर्म में स्थिर होकर के, संयम के पथ निकला,
राजीमती के उद्बोधन से, अपना पाप धुलालो।।।312।।
तपश्चरण करके दोनों ने, सर्वज्ञ पद को पाया,
कर्म काट कर अपना नाता, सिद्धि संग रचाया,
संबोधि को पाना हो तो, विरति भाव जगालो।।।313।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बख्तसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

संघ-सेवा

अम्मा-पियरो का दायित्व निभाएँ

श्री आर. वीरेन्द्र कांकरिया

गत कुछ वर्षों से माह दो माह में संयमी आत्माओं के साथ विहार में कोई न कोई दुर्घटना हो रही है। हमारे कई संत-सती इन दुर्घटनाओं में देवलोक हो चुके हैं। ऐसी घटना की जानकारी मिलने पर मन दुःख, पीड़ा और आक्रोश से भर जाता है। कई बार ऐसा भी विचार आ जाता है कि किसी साजिश के अन्तर्गत जैन साधु-साध्वी को निशाना तो नहीं बनाया जा रहा है। कई बार सरकार पर भी रोष आ जाता है कि वह साधुवर्ग की सुरक्षा के लिये कुछ सार्थक कदम क्यों नहीं उठा रही?

विहार सुरक्षा हेतु राजनीतिक स्तर पर कुछ प्रयास भी हुए। पढ़ने में आया कि राजस्थान सरकार ने विहार सुरक्षा हेतु आवश्यकता पड़ने पर 'होम गार्डस्' की व्यवस्था की है। पर उनकी सेवा लेना साधु मर्यादा के अनुरूप नहीं है। फिर क्या उपाय हो सकता है? क्या गुरु भगवन्तों की सुरक्षा सरकार की ही जिम्मेदारी है? अथवा हमारा नैतिक कर्त्तव्य है कि इसके लिए कुछ किया जाए। सर्वोत्तम मार्ग तो यही प्रतीत होता है कि हर क्षेत्र में स्थानीय स्तर पर श्री संघ/श्रावक वर्ग जागरूक बने और विहार-सेवा सहयोगियों की टीम बनाये और सीमा बांधे कि इस क्षेत्र से अगले क्षेत्र तक विचरते हुए गुरु भगवन्तों की विहार सेवा का वे लाभ लेंगे। जैनी प्रायः पूरे भारत में बसे हुए हैं। अगर सभी क्षेत्रों के श्रीसंघ जागृत बनें और ऐसी टीम बनायें तो भविष्य में दुर्घटना की संभावना काफी कम हो सकती है। किन्तु दुःखद बात तो यह है कि हम स्थानक- मंदिर तो खूब बना लेते हैं, पर चलते-फिरते तीर्थ की सेवा नहीं करते। साधु-साध्वियों को भी चाहिए कि वे पदविहार सूर्योदय के पश्चात् एवं सूर्यास्त के पूर्व तक ही करें तथा सड़क के बांयी ओर न चलकर दांयी ओर चलें।

संतों, महासतियों को कई बार विहार में रात्रि में ऐसे सुनसान स्थलों पर रुकना पड़ता है, जहाँ दूर-दूर तक कोई इंसान भी नहीं दिखता। हम उनकी सेवा में एक कर्मचारी लगाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। क्या हमारी बहू-बेटियों को ऐसे स्थल पर हम छोड़ सकते हैं? नहीं तो फिर पंच महाव्रतधारी की कैसे उपेक्षा कर देते हैं? प्रायः विहार सेवा देने वाले विहार करवाकर निकल जाते हैं, रात में नहीं रुकते। रात्रि में सुरक्षा की ज्यादा आवश्यकता रहती है, कई बार मध्य रात्रि में शराबी आकर उपद्रव मचाने लग जाते हैं। विहार सेवा में जाने पर उपसर्ग-परीषह क्या होते हैं, ज्ञात होता है। गुरु भगवन्तों के जीवन को, उनकी हर चर्या-क्रिया को उनकी साधना को समीप से देखने का सुअवसर प्राप्त होता

है, तब उनके प्रति, संयम के प्रति अहोभाव की अंतर्मन से अनुमोदना होती है।

विहार सेवा देने वाले पूर्ण विवेक रखें कि उनके कारण गुरु भगवन्तों के संयम में दोष न लगे। कई बार देखा जाता है कि सेवा देने वाले भाई-बहन पूरे विहार में श्रमण वर्ग से चर्चा-वार्ता करते रहते हैं। चलते समय श्रमण वर्ग से बातें करना उनकी भाषा समिति में दोष लगाना है। हमें विहार सेवा देते समय एक नवकार का आगार रखकर मौन पच्चक्ख लेना चाहिये। तभी जीवों की यतना, वैयावृत्त्य का लाभ और जिनाज्ञा का पालन होगा। गुरु भगवन्तों की गोचरी निर्दोष हो, इसका पूरा विवेक रखें। गाँव में जाकर संत-सतियों के आहार लेने सम्बन्धी नियमों की जानकारी देना उचित है, ताकि उन्हें निर्दोष आहार मिल सके। शुद्ध भावों से की गयी विहार सेवा हमारे अनन्त कर्मों की निर्जरा करा सकती है, वह ही राग और प्रमादवश कर्मबंध का कारण बन जाती है।

प्रभु ने हमें 'अम्मा पियरो' की उपमा से सुशोभित किया है। यह बड़ा दायित्व है, जिनशासन के प्रति इस जिम्मेदारी को निभायें। सही अर्थों में 'अम्मा-पियरो' बनें, जिनशासन के सच्चे सेनानी बनें। जब भी विहार-सेवा में जाने का सुअवसर मिले, यथाशक्ति हम सभी पूर्ण लाभ लें।

-79, Audiappa Naicken Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.)

जिनवाणी पर अभिमत

सौ. शोभा छाजेड़

जिनवाणी मासिक पत्रिका परिपूर्ण है। इससे सभी जानकारी मिलती है। मार्च अंक में भगवान महावीर के बारे में बड़ी अच्छी जानकारी मिली। 'दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र', 'आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ' लेख बड़े अच्छे लगे। नारी-स्तम्भ के अन्तर्गत 'मर्यादा तोड़ न देना' काव्य में आज की बेटी के लिए बड़ा अच्छा उपदेश दिया गया है। जिनवाणी पत्रिका का हर अंक जन-जागरण का काम करता है। स्वास्थ्य दर्शन के अन्तर्गत 'महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन' स्वास्थ्य दर्शन की बड़ी अच्छी कुंजी है। मार्च-2015 की जिनवाणी में बाल-स्तम्भ द्वारा आज के बच्चों को 'मीठी वाणी बोलिए' द्वारा अच्छी सलाह दी गई है। मीठी वाणी से तो जग को भी जीता जा सकता है, उसके लिए तलवार को हाथ में लेने की जरूरत नहीं है। 'दिल से दुआ दो, सदा खुश रहे बेटियाँ' बहुत ही अच्छी लगी। 'मर्यादा तोड़ न देना' इस कविता को मैंने खुद तीन बार गाया। 'जिनवाणी पत्रिका' सर्वांग सुन्दर है। इसमें धार्मिक, सामाजिक, स्वास्थ्य आदि हर प्रकार की जानकारी रहती है। ऐसी एक ही मासिक पत्रिका 'जिनवाणी' है। उसका कोई दूसरा अल्टरनेटिव नहीं है। जिनवाणी परिवार को मेरी और मेरे परिवार की तरफ से ढेर सारी शुभकामनाएँ।

-भुसावल (महा.)

युवा-स्तम्भ

पारिवारिक संवाद व सम्बन्धों पर आभासी दुनिया का प्रहार

श्रीमती बीना जैन

इण्टरनेट पर सोशल मीडिया ने एक आभासी दुनिया एवं आभासी समाज को जन्म दिया है, जो उसे वास्तविक समाज से दूर कर रहा है। आभासी दुनिया का सम्मोहन आज बच्चों को ही तीव्रता से अपनी गिरफ्त में नहीं ले रहा है, वरन् युवा-वर्ग भी इस सम्मोहन से प्रभावित हो रहा है। आज का सच यह है कि वास्तविक समाजीकरण का प्रभाव लगभग मृतप्रायः है। आज इनका स्थान 'सोशल मीडिया', 'कम्प्यूटर', 'इण्टरनेट' आदि ने ले लिया है। तकनीक की रची इस दुनिया ने हमें मानो मनोवैज्ञानिक रूप से गुलाम बना लिया है। यही नहीं तकनीक ने यदि जीवन को सरल और सुविधाजनक बना दिया है तो उतना उलझा भी दिया है। यंत्रवत् हो चले जीवन से मानवीय संवेदनाएँ कुछ यूँ गुम हुई हैं कि हम अपने मन की बात अपनों से कहने व उनकी सुनने के बजाय आभासी उपस्थिति दर्ज करवाने के आदी होते जा रहे हैं। परस्पर संवाद की कमी और एकाकीपन की इस जीवन-शैली को बढ़ावा देने में हम अपनों से दूर होते जा रहे हैं व सारे संसार के साथ आभासी सम्बन्ध बना रहे हैं। इस नई जीवन-शैली ने सबसे अधिक पारिवारिक संवाद व सम्बन्धों पर प्रहार किया है।

आज हम सबने अपने वास्तविक परिवेश को छोड़ एक अलग ही दुनिया बसा ली है, जिसके कुछ परिणाम तो हमारे सामने हैं और कुछ आने वाले समय में सामने होंगे। आज आपसी रिश्तों में एक अघोषित अलगाव की स्थिति बन गई है। तकनीक अपनाना, आगे बढ़ना अनुचित नहीं है, लेकिन उपकरणों के मायावी संसार में मन मस्तिष्क को फंसाए रखना क्या उचित है? वास्तविक दुनिया में पारिवारिकजन, पड़ोस एवं समाज के लोग समय पर जो सहयोग कर सकते हैं, वह आभासी समाज से नहीं मिल सकता। जिस तरह ईंट-पत्थर से बने मकान को हम घर नहीं कह सकते, जब तक उसमें बसने वालों की भावनाएं, संवेदनाएं वहाँ अपना डेरा नहीं जमातीं, ठीक उसी तरह आपसी संवाद के बिना रिश्ते भी नाम मात्र के रह जाते हैं। आज तकनीकी संवाद ने परिवार और समाज की सामूहिकता को विखण्डित कर दिया है।

अड़ोस-पड़ोस और नाते-रिश्तेदारी का दायरा तो अब पूरी तरह सिमट ही गया है।

अगली पीढ़ी के लोग शायद सामाजिक-पारिवारिक सम्बन्धों के प्रत्यक्ष संवाद और उससे बनने वाले संसार से अपरिचित ही रहेंगे। रिश्तों की गरमाहट, निकटता-अपनापन, मर्यादा, हँसी-मजाक उनके लिए एक काल्पनिक दुनिया के किस्सों की तरह होंगे। व्यक्ति के जीवन में सामाजिक सौहार्द और उसके निजी सम्बन्धों का उसकी मानसिक सेहत पर गहरा असर पड़ता है। 'मेसाचूसेट्स यूनिवर्सिटी' में मनोविज्ञान की प्रोफेसर सूजन क्रॉस का कहना है - ''किसी के भी जीवन में कम से कम तीन व्यक्ति जरूर होने चाहिए, जिनके साथ उसका रिश्ता औपचारिकता के बंधन में न बंधा हो, जिनसे बात कर वह मानसिक तनाव से मुक्त हो सके।''

आज जिस तरह आभासी संसार में हम खो रहे हैं, तो जल्द ही विकसित देशों की तरह परिवार के लोगों का आपसी संवाद 'फेसबुक वॉल' से हुआ करेगा। आज हमें प्रत्यक्ष संवाद सुहाता ही कहाँ है? हमारी अपेक्षाएं अब आभासी संसार वाले कुनबे की तरह बात करने की रहती हैं, जिसमें खूबियां, 'लाइक्स' और 'कमेंट्स' सुनने के हम आदी हो गये हैं। अपनी कमियों को सुनने का धैर्य हम खो चुके हैं। 'स्टेटस अपडेट' के इस दौर में दूसरे को जानने समझने के साधनों में जितनी वृद्धि हुई है, उतने ही हम अजनबी हो गए हैं। आधुनिक जीवन प्रणाली व भौतिकता की अंधी दौड़ में हमारा व्यक्तित्व सिमटकर रह गया है। शान्ति हमसे कोसों दूर हो गई है। किसी भी चीज की अति अच्छी नहीं होती। किसी चीज़ का एक सीमा के अंदर उपयोग करना अथवा उस चीज़ को अपने ऊपर हावी करना दोनों में अंतर है।

आज की शब्दावली में संतोष हमारे लिए एक अनजाना शब्द बनकर रह गया है, जब कि हमारे पास हमारी आवश्यकता से कहीं अधिक है। अगर अभाव है तो विश्राम के कुछ पलों का, जिसमें व्यक्ति तनाव रहित होकर सुख चैन से अपने परिवार के साथ बात कर सके। हमारी पूरी जिन्दगी बनावटी हो गई है। इसमें सारा दोष आधुनिक विकास का नहीं है, किन्तु हमारी तृष्णा का है, जिसके कारण हम भौतिक वस्तुओं के स्वामी नहीं वरन् दास बन कर रह गए हैं। वर्तमान सभ्यता व प्रौद्यौगिक विकास का पक्षधर होते हुए भी, किसी कीमत पर मनुष्य को जीवन के आधारभूत मूल्यों के साथ समझौता नहीं करना चाहिए। हमें एक सादा सरल जीवन जीना चाहिए। अपने परिवार के सदस्यों की प्राथमिकताओं को समझते हुए पर्याप्त समय देना चाहिये, बच्चों की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होना चाहिये न कि संचार माध्यमों के खोखलेपन और बनावटीपन में बहना चाहिए, जिनका आधार लोभ, अज्ञान एवं मोह है और कुछ भी नहीं। अपने अंतर में सुख खोजने की बजाय बाह्य-जगत में सुख खोजने की कोशिशों में हमने अपनी उलझनें इस सीमा तक बढ़ा ली हैं कि लौटना सहज संभव नहीं है।

- *के/15, ज्ञानसरोवर कॉलोनी, अलीगढ़-202001 (उ.प्र.)*

आचार्यपद रजत वर्ष

आचार्य श्री हीरा पर भावाभिव्यक्तियाँ

ऐसे हीरा गुरुवर महान् हैं

व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.

(उत्तराध्ययन सूत्र के प्रत्येक अध्ययन के नाम के साथ आचार्यश्री के गुणगान)

अन्तर की है आवाज, सुनो मेरे गुरुराज,
प्रभु की है अन्तिम देशना, जीवन गुरुवर का इसके समान है।
ऐसे हीरा गुरुवर महान् हैं।।टेर।।
अभिमान को नहीं दिया आपने स्थान है।
जीवन जिनका **विनय** प्रधान है। ऐसे हीरा.....।।1।।
परीषहों को समभाव से सहकर, करते आत्मा का उत्थान हैं,
हर परिस्थिति में रहते, आप धैर्यवान् हैं। ऐसे हीरा.....।।2।।
चार अंग दुर्लभता का कराते सद्ज्ञान हैं, यही आपके जीवन का संविधान है। ऐसे हीरा।।3।।
असंस्कृत अध्ययन से किया अन्तर ज्ञान है,
गुरु चरणों में रहे समर्पित साधक प्रज्ञावान हैं। ऐसे हीरा.....।।4।।
जन्म-मरण का किया भेद-विज्ञान है, गुरु सेवा से पाया शास्त्रज्ञान है। ऐसे हीरा....।।5।।
क्षुल्लकनिर्ग्रंथ बन साधनापथ से किया आत्मज्ञान है,
इसलिए आप करते कर्मों का व्यवदान हैं। ऐसे हीरा.....।।6।।
उरभ्रीय की दशा का हुआ जिसे निज भान है,
अनासक्त भाव से बनाया जीवन समाधिवान है। ऐसे हीरा.....।।7।।
गुण-दोषों के स्वरूप का, करते अनुसंधान हैं।
कपिल के समान गुणग्राही बन आप संयमवान हैं। ऐसे हीरा.....।।8।।
नमिराजर्षि सी निर्लिप्तता से मुक्तिमार्ग में प्रवाहमान हैं,
परमार्थ की साधना में आप निष्ठावान हैं। ऐसे हीरा.....।।9।।
साधना में प्रमाद को रंचमात्र भी नहीं देते स्थान हैं,
समयं गोयम मा पमायए का जिनके जीवन में अवधान है। ऐसे हीरा.....।।10।।
बहुश्रुत सा जीवन जिनका, नहीं करते गुमान हैं,

जैसा जाना वैसा जीवन जीने वाले, आचारवान हैं। ऐसे हीरा.....।।11।।
'हरिकेशी' जैसे सद्भावी एवं प्रभावी सोपान हैं,
व्यसनमुक्ति का संदेश देते मूल्यवान हैं। ऐसे हीरा.....।।12।।
चित्त सा चमकाया चेतन, नहीं किया देहाभिमान है।
मोह-माया रूपी संसार को समझा आपने नाशवान है। ऐसे हीरा.....।।13।।
त्यागमय जीवन का करते गुणगान हैं,
इक्षुकार सा अध्यात्म योगी बन, रहें चिरायु पुण्यवान हैं। ऐसे हीरा.....।।14।।
जीवन आदर्श **भिक्षु** सा रत्नसंघ की शान हैं।
कष्टों से नहीं घबराते हैं, ऐसे शक्तिमान है। ऐसे हीरा.....।।15।।
ब्रह्मचर्य के तेज पुंज से आपका जीवन गरिमावान है।
वाणी का जादू चलता जन-जन पर ऐसे प्रतिभावान हैं। ऐसे हीरा.....।।16।।
शिथिलाचार का नहीं जिनके जीवन में अवस्थान है,
पापों को नहीं देते आप सम्मान हैं। ऐसे हीरा.....।।17।।
संयती सा बोध पा जीवों को दिया अभयदान है।
''दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं'' का करते आप आह्वान हैं। ऐसे हीरा.....।।18।।
मृगापुत्रीय सा वैराग्य जिनका बढ़ाते हस्ती की शान हैं,
संसार से निकलने का आप देते व्याख्यान हैं। ऐसे हीरा.....।।19।।
अशरण को सच्ची शरण प्रदान कर, देते संयम दान हैं।
महानिर्ग्रंथीय सी संयम चर्या ही जिनका फरमान है। ऐसे हीरा.....।।20।।
बहन के देहावसान से **समुद्रपाल** सा किया अन्तर ध्यान है,
संयोग का वियोग कर अयोगी बनना ही जिनका अवसान है। ऐसे हीरा.....।।21।।
रथनेमीय सी निर्भीकता से करते जीवों का कल्याण हैं,
अपनी अनमोल वाणी से करते जिनवाणी का अमृतपान है। ऐसे हीरा.....।।22।।
जन-जन की जिज्ञासा का आप करते समाधान हैं,
केशी गौतम सा आगम के सूत्रों का किया आपने गहन ज्ञान है। ऐसे हीरा.....।।23।।
स्वयं प्रवचनमाता का सजगता से पालन करने वाले योगवान हैं,
सभी साधक इसका पालन करे यही आपका अरमान है। ऐसे हीरा.....।।24।।
हेय का त्याग कर उपादेय में लीन रहने वाले प्रज्ञावान हैं,
ज्ञान की ज्योति जलाकर भाव यज्ञ को अपनाते उदयमान हैं। ऐसे हीरा.....।।25।।
समाचारी का समयाचारी सहित आचरण का रखते सदैव ध्यान हैं,

महाव्रतों का तेज ही आपके चेहरे की मुस्कान है। ऐसे हीरा.....।।26।।
खलुंक से शिष्यों पर अपनाते अनुशासन का परिधान है,
क्योंकि आपके हर अंग में संयम साधना का विज्ञान है। ऐसे हीरा.....।।27।।
रत्नत्रय की साधना ही आपका अनुष्ठान है,
मोक्षमार्ग की साधना ही जिसकी एक मात्र पहचान है। ऐसे हीरा.....।।28।।
सम्यक्त्व में पराक्रम ही जिनका धर्मध्यान है,
विभिन्न पृच्छाओं से जो जन-जन के लिए प्रज्ञान हैं। ऐसे हीरा.....।।29।।
तपो मार्ग से करते भगवत्-प्राप्ति का संधान हैं,
जन-जन जिनके चरणों में करते श्रद्धा से प्रत्याख्यान हैं। ऐसे हीरा.....।।30।।
हेय-ज्ञेय-उपादेय का कराते निजज्ञान हैं,
ऐसी **चरण विधि** का बताते हमें विधान हैं। ऐसे हीरा.....।।31।।
प्रमाद का जिनके जीवन में नहीं कोई स्थान है,
जिनशासन की नवीन उपलब्धियों में रहते गतिमान हैं। ऐसे हीरा.....।।32।।
कर्म की प्रकृति से बचने के लिए करते सावधान हैं,
भव रोगों को मिटाने का देते हमें सद्ज्ञान हैं। ऐसे हीरा.....।।33।।
अप्रशस्त **लेश्या** का नहीं करते बहुमान हैं,
प्रशस्त लेश्याओं में रहना जिनका अभियान है। ऐसे हीरा.....।।34।।
अनगार-धर्म मुक्ति मार्ग का वरदान है,
इसकी साधना से आप भक्तों के भगवान हैं। ऐसे हीरा.....।।35।।
जीव-अजीव का किया समग्र तत्त्वज्ञान है,
करें कहाँ तक गान गुणों का, आप गुणों की खान हैं। ऐसे हीरा.....।।36।।

मारवाड़ का हीरा

महासती श्री साधनाश्री जी

(तर्ज:- सावन का महीना....।)

मारवाड़ का हीरा, चमका है बहु जोर,
सच्चे जौहरी ने परखा है, इस हीरे का मोल।।टेर।।
मोहिनी माता ने, नंदन को जाया,
मोती पिता ने, लाड लडाया,
गाँधी कुल में चमकी, एक उजली-उजली भोर।।1।।

बुद्ध सी बुद्धि, बुद्ध सी काया,
सहजता सरलता है, नहीं मोह माया,
आगम के बड़े ज्ञाता, स्वाध्याय का है जोर।।2।।
गुरुवर हस्ती ने, तुझको सजाया,
पढ़ाया लिखाया फिर पाट बिठाया,
रत्नवंश के नायक, श्रीसंघ के सिरमौर।।3।।

(आचार्यप्रवर श्री विजयराज जी महाराज की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी, मैसूर)

सदा जय हो, सदा जय हो

श्री मगनचन्द जैन

श्री गुरुदेव हीरा की सदा जय हो, सदा जय हो।
मोहिनी-मोती के नन्दन की सदा जय हो सदा जय हो।।
तुम्हीं हो देव भक्तों के तुम्हीं प्रेरक सुमारग के।
तुम्हीं रक्षक हो जीवों के सदा जय हो सदा जय हो।।
श्री गुरुदेव हीरा.....।।टेर।।
तुम्हीं व्यसन निवारक हो, तुम्हीं फैशन सुधारक हो।
तुम्हीं सद्बोध दाता हो, सदा जय हो सदा जय हो।।
श्री गुरुदेव हीरा.....।।1।।
तुम्हारी दृष्टि में करुणा, तुम्हारी वाणी में वरुणा।
भाविक जन पालते शिक्षा, सदा जय हो सदा जय हो।।
श्री गुरुदेव हीरा.....।।2।।
तुम्हें स्वाध्याय प्यारा है, तुम्हारा ज्ञान गहरा है।
सदा समभाव में रहते, सदा जय हो सदा जय हो।।
श्री गुरुदेव हीरा.....।।3।।
तुम्हारी शरण में आकर, अनोखी शान्ति मिलती है।
मिटें सब कष्ट भक्तों के, सदा जय हो सदा जय हो।।
श्री गुरुदेव हीरा.....।।4।।
तुम्हीं 'रत्नसंघ' नायक हो, तुम्हीं शासन प्रभावक हो।
'मगन' हस्ती के पट्टधर की, सदा जय हो सदा जय हो।।
श्री गुरुदेव हीरा.....।।5।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, ग्राम-फाजिलाबाद (हिण्डौन), जिला-करौली (राज.)

हीरा जग का होय

श्री हनवन्तमल लोढ़ा

'हीरे' को 'जौहरी' पहिचाने और न जाने कोय।
'हस्ती' ने 'हीरा' पहिचाना 'हीरा' जग का होय।।1।।
'हीरा' मुनि को दीक्षा लिये हो गये वर्ष पचास।
जैन धर्म के महान् संत पर सबकी आस्था है विश्वास।।2।।
आचार्य-दिवस पर यही कामना, जियें वर्ष हजार।
महान संत से लाभ उठाये, यह सारा संसार।।3।।
हीरा मुनि ने जग में बढ़ाया, जैन धर्म का नाम।
ऐसे आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव को कोटि-कोटि प्रणाम।।4।।
हीरा मुनि ने जैन धर्म में लगाये हैं चार चाँद।
उपाध्याय मानमुनि, साध्वी मैनासुन्दरी का सम्बल महान्।।5।।
हस्ती मुनि ने तराश-तराश कर किया हीरा तैयार।
इस कोहिनूर से चमक रहा है, जैन धर्म संसार।।6।।
आओ मिलकर सभी मनायें, गणिदिवस तप-त्याग से।
पाप मिटायें, पुण्य कमायें स्वाध्याय-सामायिक से।।7।।

-न्याय-पथ, पावटा 'बी' रोड़, जोधपुर-342006 (राज.)

दया के सागर

श्री हमीरमल सुराणा

(तर्ज:- कसमे वादे प्यार वफा.....।)

दया के सागर, कल्पतरुवर, जय हो हीरा गुरु गुणवान।
मोहिनी माँ के आँख के तारे, तेरी शिक्षा सबसे महान्।।
मन की आत्मा, तूं ही मेरी, तूं ही सखा, तूं भ्राता है,
एक बार जो पाये दर्शन, वो तुझमें खो जाता है।
बड़ा गज़ब है तेरा आकर्षण, अनुपम योगी, दयानिधान।।
दया के सागर...।।1।।
करते हैं जब स्वाध्याय-सामायिक, दर्शन आपके पाते हैं,
गुण से भरी तेरी गीत मंजरी, श्रद्धामय हो गाते हैं।

मन-मन्दिर में, छवि सजाकर, पाया है मानो भगवान।।
दया के सागर...।।2।।
जैसी कथनी वैसी करनी, आत्म रमण के साधक हो,
आगम ज्ञान के अनुपम ज्ञाता, अनुशासित प्रशासक हो।
तेरे चर्चे घर-घर गूंजे, जैन जगत् की अद्भुत शान।।
दया के सागर...।।3।।
जिनवाणी श्री मुख से सुनाकर, जन मानस सरसाते हो,
मधुर-मधुर वाणी से गुरुवर, अमृत-रस बरसाते हो।
संतों में तूं संत निराला, जन-जन पर तेरे एहसान।।
दया के सागर...।।4।।

-सोनसिरी कुवे के पास, ताजियों की चौकी, बीकानेर-334005 (राज.)

जय गुरुवरा, जय गुरुवरा

श्री अभिषेक जैन

(तर्जः- मेरे हमसफर-2)

हे रत्नसंघ दिवाकरा, आगमज्ञ प्रवचन प्रभाकरा,
जय गुरुवरा, जय गुरुवरा, जय गुरुवरा, हीरा गुरुवरा।
अनुपम अखण्ड आराधना, जप-तप की ऐसी साधना,
जैसे स्थिर रहे तूफान के आगे, सुमेरु गिरिवरा।
जय गुरुवरा, जय गुरुवरा.....।।1।।
मुखकान्ति भी तेजोमयी, वाणी भी है अमृतमयी,
नयनों में छलके करुणा रस, जैसे हो क्षीर सरोवरा।
जय गुरुवरा, जय गुरुवरा.....।।2।।
फैलाते जन-जन चेतना, निर्व्यसनी हों सब कामना,
कल्याण हों सब जीवों का, मन में सदा यही भावना।
जय गुरुवरा, जय गुरुवरा.....।।3।।
'हीरे' सी उज्ज्वलता बसी, तप में 'हीरे' सी कठोरता,
'अभिषेक' करता भाव से, होकर मगन तेरी वंदना।
जय गुरुवरा, जय गुरुवरा.....।।4।।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

आदर्श माँ बनने के सूत्र

प्राणिमित्र श्री नितेश नागौता जैन

एक आदर्श माँ-

1. धार्मिक एवं संस्कारित होती है।
2. विवेकशील और व्यावहारिक होती है।
3. अपने बच्चों को सत्संस्कार देती है।
4. सही-गलत का बोध देती है।
5. व्यावहारिक ज्ञान के साथ- साथ आत्मिक ज्ञान भी देती है।
6. त्याग-व्रत-नियम के लिए प्रेरित करती है।
7. अपने बच्चों को पाप कार्यों से दूर करती है।
8. स्वयं मर्यादित व संयमित रहती है।
9. फैशनपरस्ती व होडा- होड से बचती है।
10. अपने बच्चों को प्रतियोगी परीक्षा में पास होने के साथ- साथ, जीवन की परीक्षा में भी पास होना सिखाती है।
11. प्रेरक कहानियाँ और आगमिक दृष्टान्त सुनाती व उसकी शिक्षा समझाती है।
12. बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए उनकी व्यवस्थित दिनचर्या बनाती है।
13. प्रतिदिन बच्चों की बात सुनने व उनकी गलतियों पर समझाइश के लिए नियमित रूप से उनके लिए समय निकालती है।
14. बच्चों की पाठ-शुद्धि एवं ज्ञान के कण्ठस्थीकरण पर ध्यान देती है।
15. धर्म का महत्त्व समझाती है।
16. स्वयं का जीवन प्रेरक व आदर्श बनाती है।
17. बच्चों में उत्साह उमंग जगाती है।
18. बच्चों की गलतियों पर उन्हें टोकती है। सदैव शिष्टाचार का पाठ पढ़ाती है।
19. छुट्टियों में बच्चों को आत्मार्थी संत- सतियां जी म.सा. की सेवा-सान्निध्य में ले जाती है।
20. बच्चों को प्रतिदिन धार्मिक पाठशाला भेजती है।

21. बिजली, पानी, ईंधन, अन्न के अपव्यय व दुरुपयोग रोकने हेतु बच्चों को समझाती है।
22. बच्चों के नैतिक, अध्यात्मिक, सामाजिक व राष्ट्रिय चरित्र का निर्माण करती है।
23. बच्चों को लाड-प्यार और दुलार के साथ-साथ स्वावलंबी व परिश्रमी बनाती है।
24. साहस,वीरता,स्पष्टवादिता और सत्यनिष्ठा के संस्कारों से उन्हें भावित करती है।

वर्तमान के भौतिकतावादी और फैशनपरस्ती के इस दौर में प्रत्येक माता को स्वयं अपने द्वारा अपना अवलोकन करने की आवश्यकता है। क्या सचमुच में आप आदर्श माँ की भूमिका निभा रही हैं.....? यदि आप आदर्श माँ हैं तो निश्चित ही आपके बच्चे भी आदर्श ही बनेंगे। आने वाले समय में वे भी निश्चित ही जिनशासन का गौरव बनेंगे।

ध्यान रहे यदि हम स्वयं भावित होंगे तो दूसरे हमसे निश्चित ही प्रभावित होंगे। माँ ही बच्चों की प्रेरणा व आदर्श है। अत: मॉल-मोबाइल कल्चर में स्वयं व पारिवारिक, सामाजिक शांति के लिए आदर्श माँ बनना समय की माँग है। सतयुग की तरह आज भी होनहार व आदर्श पुत्र-पुत्री समाज के समक्ष उपस्थित हो सकते हैं। किन्तु इससे पहले जरूरत है प्रेरक जीवन शैली वाली आदर्श माता की। प्रकृति का सीधा सरल सा नियम है- जैसा पेड़ वैसे फल। जैसी मशीन, वैसा निर्माण, जैसा कारीगर वैसा कार्य। ठीक उसी तरह एक बच्चे के लिए जिस तरह का पारिवारिक माहौल और माँ की मेहनत, बच्चे का वैसा ही निर्माण.....।

-कर सलाहकार, 175, जैन बोर्डिंग एरिया, भवानीमंडी (राज.)

ममता बनाम भ्रूण हत्या

श्रीमती माया कुम्भट

माँ और क्षमा दोनों एक हैं।
माफ करने में दोनों नेक हैं।
माँ ने भ्रूण हत्या कर माँ की ममता को कलंकित किया है।
समाज के सामने प्रश्नचिह्न उपस्थित किया है,
इसकी सजा इतनी कठोर हो कि रूह काँप जाय।
दहेज वेदी पर फिर बहू नहीं चढ़ाई जाय,
दहेज वेदी पर फिर बहू नहीं जलाई जाय।
माँ व उसका परिवार फिर भ्रूण हत्या नहीं करे।
जन्म कल्याणक (जन्म दिन) मनाये।
बेटी होने पर छत पर चढ़ दादी थाली बजाए।

-6-ए/1, राजमाया अम्बामाता स्कीम, उदयपुर (राज.)

गीत

दुनिया गाये यश तेरा

महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञा से उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा की सन्निधि में 25 अप्रेल 2015 को जोधपुर में मुमुक्षु श्री अविनाश जी सालेचा की दीक्षा के अवसर पर मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. एवं महासती मण्डल द्वारा गाया गया गीत।-**सम्पादक**

(तर्ज:- जिनशासन कहता है आओ.....)

संयम की महिमा क्या है, जी करके बता देना।
दुनिया गाये यश तेरा, इतिहास बना देना।।टेर।।
माता की गोद को छोड़ा, प्रवचन माता पायी,
शीतल छाया है माँ की, ममता है सुखदायी।
इसकी रक्षा में तेरी सुरक्षा का भान जगा देना।। दुनिया गाये....।।1।।
हर कदम उठे अब तेरा, आगम के इशारों पर,
हो आत्मसमर्पण पूरा, प्रभु के उद्‌गारों पर।
आगम वर्णित चर्या को, साकार बना देना।। दुनिया गाये....।।2।।
देवों को जो नहीं मिलता, वो तुमने पाया है,
संयम के आगे देवों ने भी, अपना शीश झुकाया है।
उत्कृष्ट भाव आराधन कर, भवचक्र मिटा देना।। दुनिया गाये....।।3।।
अनुस्रोत की अनुकूलता में, हर कोई चलते हैं,
प्रतिस्रोत की प्रतिकूलता में, विरले ही खिलते हैं।
तुम वीर हो, महावीर हो, चलकर के बता देना।। दुनिया गाये....।।4।।
पंचम काल दुषमा आरा, जड़वक्र बनी बुद्धि,
अति सरल हृदय बनकर के, करना आत्म-शुद्धि।
तुम ऋजुता से दुःखमा को भी, सुखमा बना देना।। दुनिया गाये....।।5।।
रणभूमि में वीर योद्धा, डरता न प्रहारों से,

महावीर के साधक भी तो, खेले अंगारों से।
घर छोड़ दिया फिर भय क्या, निर्भयता दिखा देना।। दुनिया गाये....।।6।।
समरांगण में उतरे हो, भिड़ जाओ कर्मों से,
इस भाव युद्ध को जीतो, तप संयम शास्त्रों से।
तुम धर्म से कर्म जगत में, कोहराम मचा देना।। दुनिया गाये....।।7।।
पत्थर को भी पसीना आ जाये, पुरुषार्थ करो ऐसा,
लोहा भी पिघल जाये, तुम फौलाद भरो ऐसा।
चट्टानों को भी चीर-चीर, झरना बहा देना।। दुनिया गाये....।।8।।
आँधी हो तूफां भले ही, रुकने का नाम नहीं,
दिन-रात निरन्तर चलना, शूरों का काम यही।
रग-रग में शौर्य जगाकर, कर्मों को धुजा देना।। दुनिया गाये....।।9।।
परवानों की ये टोली, रोके नहीं रुकती,
झुक जाये सारा जहां भी, पर ये तो नहीं झुकती।
तुम सोते को भी जगाकर, गतिमान बना देना।। दुनिया गाये....।।10।।
नहीं असंभव कुछ जग में, सब कुछ संभव होता,
पुरुषार्थी का साहस तो, हरदम आगे बढ़ता।
करके प्रयास हर जीत को, तुम दास बना देना।। दुनिया गाये....।।11।।
नहीं चिंता अगले क्षण की, वो मस्त फकीरी हो,
तेरे संयम के आगे फीकी, दुनिया की अमीरी हो।
शाश्वत धन से अपने को मालामाल बना देना।। दुनिया गाये....।।12।।
तुम सत्य को पाने निकले, बांधा कफन सिर पे,
अब कैसी भी विपदा हो, देखोगे नहीं फिरके।
कष्टों को अपना साथी, हमराह बना देना।। दुनिया गाये....।।13।।
वीरों के वंशज हो तुम, नस-नस में उबलता खून,
कर्मों से आजादी का सवार हो तुझमें जुनून।
मुक्ति मंजिल को पाने, जी जान लगा देना।। दुनिया गाये....।।14।।
है वक्त बदलने का तुम, सब काम बदल डालो,
आयाम बदल डालो तुम, अरमान बदल डालो।
नव युग में नव क्रांति का, उन्मेष जगा देना।। दुनिया गाये....।।15।।

गीतार्थ बहुश्रुत कोविद, सब पूजे जाते हैं,
विशिष्ट ज्ञान से अपने सम्मान को पाते हैं।
तुम विद्यावान प्रभावक बन, शासन को दीपा देना।।
दुनिया गाये यश तेरा....।।16।।
तू शासन का है सेवी, तेरी श्रद्धा हो ये गहरी,
कोई आँच न आये इस पर, बने रहना सजग प्रहरी।
तुम अपने आस्था बल से, देवों को झुका देना।। दुनिया गाये....।।17।।
क्रिया रुचि हो गहरी, संयम में दृढ़ चट्टान,
हर कदम पे सम्यक् यतना, आत्मार्थी बने पहचान।
तुम भरतक्षेत्र को महाविदेह का मान दिला देना।। दुनिया गाये....।।18।।
देह को तपाने वाले कई तापस हैं जग में,
तुम मन इंद्रिय को तपाना, वही श्रेष्ठ कहा सब में।
बाह्य तप को भी आभ्यंतर, भावों से सजा देना।। दुनिया गाये....।।19।।
तन तोड के सेवा करना, मन मोड समर्पण हो,
गुरु आज्ञा निर्देशों पर जीवन ये अर्पण हो।
तुम अपने त्याग विनय से, गुरुवर को रिझा देना।। दुनिया गाये....।।20।।
औरों पर निग्रह सरल है, मन निग्रह नहीं आसान,
ये मन तो बड़ा चंचल है, दौड़े है सारा जहान।
इस मन को गुरु चरणों में, अमन बना देना।। दुनिया गाये....।।21।।
अनन्त गुणी हो विशुद्धि, असंख्य गुणी निर्जरा,
तुम आत्मरमण जो करो तो, संयम भूमि है उर्वरा।
नित नव उत्साह जगाकर, गुणश्रेणी कर देना।। दुनिया गाये....।।22।।
जागी हैं उम्मीदें तुमसे, आशा के बने तारे,
अरमान जुड़े कई तुमसे, पूरे करना सारे।
अंधकार भरे पथ में तुम, आलोक बिछा देना।। दुनिया गाये....।।23।।
हर कदम पे पाओ सफलता, अरमान हमारा है,
चहुँ दिशा में चमके तेरा, सौभाग्य सितारा है।
तुम नयी कहानी रचकर, कीर्तिमान बना देना।। दुनिया गाये....।।24।।
सुविधावादी जग सारा, सुविधा ही चाहे है,

इनसे बचकर के रहना तेरी विपरीत राहे हैं।
मजबूत इरादों से तुम, युगधारा बदल देना।। दुनिया गाये....।।25।।
लघुवय में संयम लेकर, शासन को चमकाया,
साधक की साधना क्या थी, संथारे ने बतलाया।
उस 'हस्ती' की मस्ती को तुम, फिर से दोहरा देना।। दुनिया गाये....।।26।।
संघशास्ता हैं संघनायक, शिर छत्र हमारे हैं,
गणमाली गुरुवर 'हीरा', गण के रखवारे हैं।
तुम गुरु चरणों में, नौका की पतवार थमा देना।। दुनिया गाये....।।27।।
संयम के निर्मल पज्जवे, उपशांत कषायें हैं,
अति सरल स्वभावी, सहज सुगम गुरु मान पाये हैं।
तुम 'मान' गुरु के मान का, सम्मान बढ़ा देना।।दुनिया गाये....।।28।।
आशुकवि हैं हमारे, बेजोड़ प्रभावक हैं,
निर्मल प्रज्ञा है जिनकी, पुरुषार्थी साधक हैं।
उन गौतम के गौरव का, तुम गीत गूँजा देना।। दुनिया गाये....।।29।।
लघुवय में लघुक्षपणा का, पुरुषार्थ किया भारी,
मुनि 'लोकचन्द्र' की महिमा, फैली जग में सारी।
तुम 'दर्शन' और 'जितेन्द्र मुनि' की, सेवा दिखा देना।। दुनिया गाये....।।30।।
कितना गौरवशाली यह इतिहास हमारा है,
ये तपी तपायी धरती, कइयों ने निखारा है।
तुम रत्नसंघ की गरिमा में, चार चाँद लगा देना।। दुनिया गाये....।।31।।

पाठक अभिमत

प्राणिमित्र श्री नितेश नागोरा जैन

जिनवाणी के माध्यम से एक ओर जहाँ आपश्री के गहनतम व दिशाबद्ध पुरुषार्थ की सुन्दर झांकी नज़र आती है, वहीं दूसरी ओर हर वर्ग के लिए संयोजित, प्रेरक, पठनीय एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्री के प्रभावी प्रकाशन से अशान्त मन को शान्ति और समाधान मिलता है। जैसे प्यासे की प्यास बुझाने में जल का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, ठीक इसी प्रकार से जिनवाणी को पढ़कर नैतिकता, आध्यात्मिकता, मौलिकता, संस्कार, जीवदया व विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक ज्ञान के साथ-साथ प्रभावी सम्पादन का भी दिग्दर्शन होता है।

-175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी-326502 (राज.)

अनुभव

आत्मस्वरूप को पहचानने का साधन

सुश्री प्रतीक्षा जैन

(भरतपुर में 28 मार्च से 7 अप्रेल 2015 तक आयोजित वीतराग ध्यान-साधना शिविर में 14 वर्षीया प्रतीक्षा जैन का अनुभव)

क्षण-प्रतिक्षण शरीर नष्ट हो रहा है, किन्तु यह अनुभव में क्यों नहीं आता है? क्यों यह जीव अंहकार में जीता है? क्यों यह जीव दूसरों से आदर की कामना करता है? क्यों यह स्वयं की दृष्टि में आदर योग्य नहीं है? पूनम के चाँद की पूर्णता, स्निग्धता, पवित्रता सभी को प्रिय है, किन्तु मनुष्य के भीतर यह विचार क्यों नहीं आता कि वह भी चाँद की भाँति शीतल, निर्मल (निर्+मल = बिना मल के) बन सकता है? क्यों यह जीव पुद्गलों की माया नगरी में भटक रहा है? जीव क्यों पुद्गल में सुख खोज रहा है, जबकि स्वयं उसके भीतर अनन्त सुख का सागर हिलोरें ले रहा है।

इसी तरह के अनेक प्रश्नों के उत्तर, अनेक गुत्थियों के समाधान, मुझे वीतराग ध्यान साधना शिविर में, गुरु की अमृतवाणी द्वारा प्राप्त हुए। वीतराग ध्यान-साधना शिविर द्वारा जाना कि "जीवन की सच्चाई को स्वीकारने की क्रिया, समता साधने की प्रक्रिया, पुद्गलों की पराधीनता को छोड़, स्वाधीन बनने की राह पर चलकर मुक्ति दिलाने का माध्यम है यह ध्यान साधना।"।

Dhyāna Sādhanā is just like a game of hide and seek जहाँ हम Hide and Seek खेल में छिपे हुए व्यक्ति को खोजते हैं, वहीं ध्यान साधना में हम भीतर छिपे हुए स्व को खोजते हैं, परम आनन्द और परम शान्ति को स्वतः पाते हैं। जिस प्रकार Hide and Seek के खेल में छिपे व्यक्ति को खोजने में समय लगता है, उसी प्रकार यहाँ भी स्व को परमात्मा (परम+आत्मा = श्रेष्ठ आत्मा) को खोजने-जानने में समय लगता है। दोनों ही प्रक्रिया में परिश्रम करना पड़ता है, किन्तु अंत में सफल होने पर अकथनीय 'प्रमोद भाव' की प्राप्ति होती है। दोनों की खोज-क्रिया में यह अन्तर है कि व्यक्ति खोज के खेल में छिपे व्यक्ति को ज्यादा से ज्यादा 10 मिनिट में खोज लेता है, वहीं स्व की, स्व में छिपे परमात्मा की, परम सत्य की खोज के लिए 10 दिन, 10 महीने, 10 साल की अवधि भी कम पड़ सकती है, यदि हमने सम्यक् पुरुषार्थ नहीं किया तो।

इस वीतराग ध्यान साधना शिविर को करने के पश्चात् भीतर में ध्वनि गूँजती रहती है-

'रे जीव! अब तो जग जा, किसकी प्रतीक्षा कर रहा है, दूसरों का क्यों उपहास कर रहा है? तेरे भीतर अनन्त प्रकाश है, क्यों तमस से घबरा रहा है, क्या कर रहा है तू अपने जीवन के साथ....। अनन्त पुण्यवानी से मिला है यह मानव भव..... अब पुरुषार्थ करने से क्यों घबरा रहा है? जग जा... जग जा.... अब तो जग जा.....।

This is a wake up call now. We are just being hypnotized by attraction of this world. Break it. Wake up!!

-22, गीजगढ़ विहार कॉलोनी, हवा सड़क, सिविल लाइन्स, जयपुर (राज.)

अनमोल उपहार देने की अभिनव योजना

हम जन्मदिन, विवाह, शादी की सालगिरह और अन्य अवसरों पर भेंट व उपहार देना चाहते हैं। आप द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न उपहारों के बीच सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-जयपुर द्वारा एक अभिनव उपहार प्रदान करने की योजना बनायी गई है। इस योजना के अन्तर्गत आप **'जिनवाणी'** पत्रिका उपहार के रूप में दे सकते हैं। आपके निर्देशानुसार मण्डल आपकी ओर से उपहार प्राप्तकर्ता को एक शुभकामना संदेश भेजेगा। उनको जिनवाणी की प्रथम प्रति विशेष Gift wrapper में भेजी जाएगी। उपहार प्राप्तकर्ता को बीस वर्षों तक प्रतिमाह जिनवाणी प्रेषित की जाएगी।

हमारे अधिकतर उपहार कुछ ही दिनों के लिये होते हैं और उनकी उपयोगिता भी सीमित होती है, लेकिन 'जिनवाणी' का यह उपहार सिर्फ एक हजार रुपये में आने वाले बीस वर्षों तक आपकी याद दिलाता रहेगा। 'जिनवाणी' में बच्चों, बुजुर्गों, युवक और युवतियों सबके लिए पठनीय सामग्री का ख़जाना होता है। 'जिनवाणी' सुसंस्कारों से सज्जित एक ऐसा गुलदस्ता है जिसकी सौरभ सारे परिवार में हमेशा फैलती रहेगी।

मेरा निवेदन है कि 'जिनवाणी' की इस अभिनव उपहार योजना को अपनाकर अपने उपहार को अमरत्व से सजाइये। *-कैलाशमल दुग्गड़, अध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल*

उपहार राशि जमा कराने की विधि

इस योजना के लिए आप तीन तरह से 1000/- रुपये या उसके गुणकों में राशि जमा करा सकते हैं- 1. नगद राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय में, 2. 'जिनवाणी' के नाम से चैक बनाकर, 3. 'जिनवाणी' के बैंक खाते **SBBJ 51026632986, IFSC No. SBBJ 0010843** में राशि जमा कर।

राशि जमा करने के साथ उपहारकर्ता एवं जिनवाणी प्राप्तकर्ता का पता एवं फोन नं. सहित विवरण से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.) को 0141-2575997/ 2570753 अथवा **Email-sgpmandal @yahoo.in** को अवश्य सूचित करें। *-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)*

बाल-स्तम्भ

ब्रह्म मुहूर्त्त में उठिए

श्रीमती कमला सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जुलाई 2015 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

तजिए आलस्य प्रमाद को
ब्रह्म मुहूर्त्त में उठिए
मिलेगी असीम सम्पदा
जगालो श्रम पुरुषार्थ को।
साधना का समय मिलेगा
शान्ति का साम्राज्य होगा
बचेंगे व्यवधान से
चित्त एकाग्र होगा।
करें सामायिक प्रतिक्रमण
लाभ, स्वाध्याय-ध्यान का
चिन्तन करें तीन मनोरथ का
आनन्द लें भजन-प्रार्थना का
लुटा रही है प्रकृति हमें
स्फूर्ति, पुष्टता, प्रबुद्धता
बिना क्रय विशेष रसायन मिलेगा
जो ऊर्जा का है महाभंडार
बाल सूर्य आया ताम्र वर्ण में
लालिमा छा गई व्योम में

स्वागत करते पक्षी-गण
गा-गा कर मृदु स्वर में
सुहानी भोर खड़ी है।
लिए नव किरणों का हार हाथ में।

श्रेयांस- दादाजी, आप आई.ए.एस. ऑफिसर हैं।

दादा- हाँ बेटा!

श्रेयांस- मुझे भी आई.ए.एस. ऑफिसर बनना है।

दादा- अवश्य बनो बेटा।

श्रेयांस- आई.एस. एस. ऑफिसर को क्या करना पड़ता है?

दादा- उसे भारत के प्रशासन सम्बन्धी कार्य करने होते हैं।

श्रेयांस- तभी मैं देखता हूँ, दिन में कितने ही फोन आते हैं। लोग आपके आगे-पीछे घूमते हैं, खूब रौब है आपका। इसके लिए मुझे क्या करना होगा?

दादा- इसके लिए एक विशेष पढ़ाई करनी होगी।

श्रेयांस- विशेष पढ़ाई मेरे से नहीं होगी।

दादा- सुनो श्रेयांस! किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए मनुष्य में रुचि, पुरुषार्थ और लगन आवश्यक है। तीनों बातों का संगम होने से व्यक्ति को अवश्य सफलता मिलती है।

श्रेयांस- मेरे पास रुचि, लगन और श्रम तीनों ही गुण नहीं हैं।

दादा- तुम कैसे कह सकते हो कि तुम्हारे अन्दर ये तीनों गुण नहीं हैं, रुचि है तभी तो आई.ए.एस. बनना चाहते हो। श्रम, लगन के लिए मनोबल बढ़ाना पड़ता है।

श्रेयांस- मेरा मन खेलने और टी.वी देखने में लगता है।

दादा- टी.वी. देखने में तुम्हारी लगन है, तीन-चार घण्टे टी.वी. कार्यक्रम देखने में चले जाते हैं, तुम्हें समय का भान नहीं रहता है। खेलने में श्रम लगाते हो यानी सभी बातें तुम्हारे अन्दर है, केवल उन्हें सही दिशा देने की आवश्यकता है। सबसे पहले समय-विभाग-चक्र बनाना होगा। उसके अनुसार चलने से किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं आएगी और सारे कार्य समय पर पूर्ण हो जाएँगे। कब उठना, कब सोना है? स्कूल जाने का समय निश्चित है। गृह-कार्य, टी.वी. देखने, खेल खेलने के समय को बाँटना होगा।

श्रेयांस- दिन बहुत छोटा होता है, मैं इतना काम करने में असमर्थ हूँ। मैं आई.ए.एस. ऑफिसर कभी नहीं बन सकता।

दादा– अरे बालक! निराश नहीं होना है। बुझदिल होना तुम्हें शोभा नहीं देता है। सफलता पाने के लिए आशावादी और महत्त्वाकांक्षी होना चाहिए। दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सभी अपनी दिनचर्या निश्चित करते हैं और दैनन्दिनी भी बनाते हैं, तभी उन्हें सफलता मिलती है। हाँ! ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर वे अपने दिन को बड़ा कर, अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। जल्दी उठने वाले स्वस्थ रहते हैं। शरीर में ताजगी बनी रहती है और बुद्धि तीव्र होती है।

श्रेयांस– मैं तो टी.वी. देखकर देर से सोने वाला हूँ, फिर देर से उठता हूँ। जल्दी उठने से मेरी नींद पूरी नहीं होती है।

दादा– जल्दी उठने के लिए जल्दी सो जाओ। एक बार जल्दी उठकर देखो। जल्दी सोने और जल्दी उठने वालों के शरीर में एक रसायन बनता है वह कुशाग्रता और स्फूर्ति बढ़ाता है।

श्रेयांस– तो मुझे खेलना और टी.वी. देखना छोड़ना पड़ेगा।

दादा– नहीं, ऐसा नहीं है। उनकी समय-सीमा तुम्हें तय करनी होगी। खेलना बहुत आवश्यक है उससे शारीरिक और मानसिक विकास होता है। टी.वी. देखने से देश-विदेश के समाचारों से अवगत रहोगे। कुछ कार्यक्रम अपनी रुचि के देखने से थकान महसूस नहीं होगी।

श्रेयांस– मुझे कब उठना होगा?

दादा– तुम्हें ब्रह्म मुहूर्त्त में उठना होगा। जल्दी आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर दिन का शुभारम्भ ईश प्रार्थना से करना होगा, जिससे पूरा दिन शांतिमय निकले।

श्रेयांस– ब्रह्म मुहूर्त का समय कब से प्रारम्भ होता है?

दादा– रात्रि का अंतिम प्रहर यानी चार बजे से सूर्य उदय तक का समय ब्रह्म मुहूर्त्त का माना गया है।

श्रेयांस– ईश-प्रार्थना मुझे नहीं आती है।

दादा– मैं तो हमेशा जल्दी उठता हूँ और सामायिक करता हूँ, उस समय तुम मेरे पास बैठना। दोनों धर्म-चर्चा करेंगे। तुम्हें नवकार मंत्र भी सिखाऊँगा।

श्रेयांस– नवकार मंत्र मुझे आता है।

दादा– यह तो आश्चर्य की बात है। अमेरिका में रहकर भी महामंत्र सीख गए।

श्रेयांस– अमेरिका में हम जहाँ रहते हैं वहाँ महावीर भवन बना हुआ है, उसमें एक बड़ा हॉल बना हुआ है उसकी दीवारों पर नमस्कार मंत्र लिखा हुआ है, उसको पढ़कर सीख गया। रविवार को धार्मिक कक्षाएँ लगती हैं। तीन-चार सप्ताह से मैं भी जा

रहा हूँ। कक्षा में नमस्कार मंत्र का अर्थ भी करवाया गया। एक दीवार पर 'आगम' के बारे में लिखा हुआ है, पर मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया।

दादा– आगम जैन शास्त्र हैं। आगम बत्तीस (32) हैं। पहले तुम जैन धर्म की सामान्य जानकारी कर लो, फिर 'आगम' शास्त्र की चर्चा करेंगे।

श्रेयांस– अमेरिका में तो सभी ईसाई रहते हैं तो हम जैन कैसे हुए?

दादा– जिन के उपासक जैन कहलाते हैं।

श्रेयांस– अरे दादा! जिन तो भूत-प्रेत होते हैं।

दादा– जिन तो राग-द्वेष के विजेता होते हैं। अर्थात् जो राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया-लोभ आदि विकारों को घटाने के लिए प्रयत्नशील रहता है वह 'जैन' है।

श्रेयांस– आपको यह सब ज्ञान कैसे हुआ?

दादा– मैं जल्दी उठता हूँ, नित्य सामायिक करता हूँ उसमें स्वाध्याय करता हूँ और धार्मिक जानकारी करता हूँ। सुनो श्रेयांस! आई.ए.एस. बनने वालों को अन्य ज्ञान के साथ सभी धर्मों की जानकारी होनी चाहिए और अपने धर्म का तो विशेष ज्ञान होना चाहिए।

श्रेयांस– दादाजी! मैं आपकी बात समझ गया, मैं आज ही अपनी दैनिक समय-सारणी बनाता हूँ।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

मैं हूँ निडर साहसी बालक

डॉ. दिलीप धींग

मैं हूँ निडर साहसी बालक, ऊँचे पर्वत चढ़ जाऊँगा।
सभी देखते रह जाएँगे, मैं आगे बढ़ जाऊँगा।।

मेरे मन में जोश भरा है, तन है ऊर्जा का भण्डार।
मात-पिता और गुरुजनों के, आशीषों का है आधार।
जिन राहों में कदम बढ़ाऊँ, उनमें फूल खिलाऊँगा।
मैं हूँ निडर साहसी बालक, ऊँचे पर्वत चढ़ जाऊँगा।।1।।
मस्तिष्क जिज्ञासु है मेरा, मन सपनों का सौदागर है।
मुझमें जब-तब रहे उमड़ता, कल्पनाओं का सागर है।
लगा-लगाकर गोते उसमें, अद्भुत चीज़ें लाऊँगा।
मैं हूँ निडर साहसी बालक, ऊँचे पर्वत चढ़ जाऊँगा।।2।।
इच्छा शक्ति, अथक परिश्रम, निष्ठा, अपने पर विश्वास।

मन एकाग्र किये जो बढ़ते, बने सफलता उनकी दास।
मिट्टी से, प्रस्तर खण्डों से, सोना-चाँदी उपजाऊँगा।
मैं हूँ निडर साहसी बालक, ऊँचे पर्वत चढ़ जाऊँगा।।3।।
राहों में गर आए संकट, उनसे बल-संबल पाना है।
साँसों की सरगम से हर पल, गीत जीत का ही गाना है।
मेरी जीत प्रीत की होगी, सबको गले लगाऊँगा।
मैं हूँ निडर साहसी बालक, ऊँचे पर्वत चढ़ जाऊँगा।।4।।
अपनी रेखा लम्बी करना, औरों का करना सहयोग।
अच्छी राह चलूँ, नहीं सोचूँ, 'अरे! मुझे क्या कहेंगे लोग।'
स्पर्धा-रहित विजय-यात्रा का, नव-इतिहास बनाऊँगा।
मैं हूँ निडर साहसी बालक, ऊँचे पर्वत चढ़ जाऊँगा।।5।।

-अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

प्रश्न:-

1. कौनसे गुणों का पालन कर व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है?
2. दिनचर्या को सही रूप देने के लिए क्या करना चाहिए?
3. जितने भी महापुरुष हुए हैं उनके उठने का समय क्या रहा?
4. ब्रह्ममुहूर्त में उठने के लाभ लिखिए।
5. जैन कौन कहलाते हैं? आगम कितने हैं?
6. ''मैं हूँ निडर साहसी बालक'' से क्या प्रेरणा मिलती है। (पाँच पंक्तियों में लिखिए)

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-2015] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'उत्तराध्ययन सूत्र से सम्बद्ध संक्षिप्त कथाएँ' के प्रश्नों के उत्तर 44 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अतिका मेहता-जोधपुर (राज.)	26.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	महक कोठारी-बूँदी(राज.)	26
तृतीय पुरस्कार- 200/-	प्रणत धींग-चेन्नई (तमिलनाडु)	24.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	श्रेया मेहता-जोधपुर (राज.)	24
	प्रियदर्शना जैन-सवाईमाधोपुर (राज.)	23
	अंशुल संजय कचोलिया-बैंगलुरु (कर्नाटक)	23
	अर्पित जैन-जोधपुर(राज.)	22
	आयुषी आहूजा-जयपुर (राज.)	22

गीत

महापुरुषों के जीवन से लें सीख

श्री नेमीचन्द जैन (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य)

(पाठकों से निवेदन है कि प्रस्तुत काव्य में वर्णित महापुरुषों के संयम-तप पूर्ण जीवन के घटना प्रसंगों की विस्तार से स्वाध्याय व अनुप्रेक्षा करें। जिससे पंच महाव्रतधारी महापुरुषों के संयम, तपोमय जीवन की उत्कृष्टताओं से आत्मसात् हो संयम धर्म की ओर अग्रसर हुआ जा सके।)

(तर्जः- हाँ सिर जावे तो जावे.....।)

तन जावे तो जावे, प्रण पूर्ण अटल निभ जावे।
शासन नायक महावीर स्वामी, की वाणी हम पायें।।1।।
उपसर्गों में भगवान महावीर, मेरु सम बण जावे।।2।।
शिथिलाचार विरुद्ध लौंकाशाह, धर्म क्रांति कर जावे (विष सहर्ष पी जावे)।।3।।
परम प्रतापी पाँचों गणीवर, क्रियोद्धारक कहलाये।।4।।
जीवराज जी लवजी ऋषिवर, हरजी के गुण गावें।।5।।
दुष्ट यक्ष श्री धर्मसिंह के, चरणों शीष नमावे।।6।।
धर्मदास निज शिष्य के खातिर, खुद संथारा ठावे।।7।।
निर्मल अतिशय ज्ञानी भूधर, क्षमाशूर कहलाये।।8।।
रघु, जय, जेत, कुशल ये चारों भूधर शिष्य कहावे।।9।।
अतुल आत्मबली रघुपत गणिवर, घोर परीषह सह जावे।।10।।
भीष्म प्रतिज्ञाधारी जयमल, इक मास संथारा आवे (आत्मा में रम जावे)।।11।।
हुक्मीचंदजी गणिवर प्रतिदिन, दो सौ (200) नमोत्थुणं ध्यावे।।12।।
अभिग्रहधारी बालचंद्र मुनि, घोर अभिग्रह ठावे।।13।।
जल छाछ सिवाय वेणीचंद, वर्षों तक अन्न नहीं खावे।।14।।
आत्मारामजी श्रमण संघ के, आदि आचार्य कहलाये।।15।।
महाप्रभावक ज्येष्ठ मुनि की महिमा चहुँ दिशि छावे।।16।।
जगवल्लभ श्री जैन दिवाकर, जैन का झंडा लहराये।।17।।
प्राज्ञ मुनि स्वाध्याय संघ के, आदि प्रवर्तक कहलाये।।18।।
तपो केसरी गणेशीलाल जी खादीधारी कहलाये।।19।।
बहुश्रुत पंडित समरथ मुनिवर निर्मल संयम पाले।।20।।
हस्ती गणि दृढ़ संथारे में, आत्मलीन (देहातीत) हो जावे।।21।।
जिनशासन के संत-सतीवर, तारे और तिर जावे।।22।।
'नेम' सभक्ति महापुरुषों के हर्षित हो गुण गावे।।23।।

-सुभाष चौक, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.)

युवक परिषद्

आओ स्वाध्याय करें (पंचम प्रतियोगिता)

'राजप्रश्नीय' के राजा बन जाओ – पढ़कर आत्मज्ञाता बन जाओ'

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 'आओ स्वाध्याय करें' शीर्षक से 'द्विमासिक आगम प्रश्नोत्तरी' प्रतियोगिता के अन्तर्गत इस बार 'राजप्रश्नीयसूत्र' पर प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का स्वरूप इस प्रकार है–

1. इस प्रतियोगिता का आयोजन पाँच संभागों के आधार पर किया जाएगा– 1. मारवाड़, गुजरात क्षेत्र, 2. पल्लीवाल क्षेत्र, दिल्ली, पंजाब क्षेत्र, 3. कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश क्षेत्र, 4. जयपुर, पोरवाल क्षेत्र, मध्यप्रदेश क्षेत्र, 5. महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र।
2. प्रत्येक संभाग में 15–45 वर्ष तक एवं 45 वर्ष से अधिक के दो आयु वर्ग के ग्रुप रहेंगे, जिनमें प्रत्येक ग्रुप में प्रथम विजेता को– 1100/– रुपये, द्वितीय को– 500/–रुपये, तृतीय को–250/– रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी।
3. इस प्रतियोगिता में कम से कम एक व्यक्ति एवं अधिकाधिक पाँच व्यक्तियों तक का ग्रुप भाग ले सकता है। प्रत्येक व्यक्ति एवं ग्रुप होने पर ग्रुप के प्रत्येक सदस्य का नाम एवं आयु का उल्लेख अपने उत्तर पत्रक के साथ करना आवश्यक है।

आशा है आप इसमें पूर्ण उत्साह से भाग लेकर अपने आगम–ज्ञान का वर्धन करेंगे। उत्तर–पत्रक प्राप्त होने की अंतिम तिथि 5 अगस्त, 2015 है।

उत्तर भेजने का पता– श्री अनिल जी, कार्यालय प्रभारी, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्, घोड़ों का चौक, वर्द्धमान अस्पताल के पीछे, जोधपुर–342001 (राज.) मोबाइल नं. 094141–40373

प्रश्न–पत्र सम्बन्धी समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क सूत्र– श्री राजीव जी नाहर, सूरत– 093751–65765

विशेष– Whatsapp पर भी युवक–परिषद् के सदस्यों द्वारा जिज्ञासा–समाधान का कार्य किया जा रहा है।

प्रश्न संख्या 1 से 15 तक के प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (प्रश्न संख्या 1 से 15 के उत्तर राजा पएसि से लेकर सूर्याभ देव के द्वारा पूछे गए जिज्ञासा के समाधान तक के वर्णन में से)

1. सूर्याभ देव स्वर्ग में बैठकर कौनसे द्वीप को देख रहा था?
2. सूर्याभ देव ने देवों को समवसरण के चारों ओर की कितनी भूमि की सफाई करने के

लिए कहा?

3. सूर्याभ देव के विमान के आगे कितने मंगल चलने लगे?
4. राजप्रश्नीय सूत्र संबंधी पृच्छा कौनसी नगरी में हुई?
5. सूर्याभ देव का विमान कौनसी सभा में स्थित है?
6. देवों द्वारा अरिहंतों को वंदन कौनसी परम्परा या कल्प व्यवहार है?
7. सूर्याभ देव के विमान के आगे कितने सेनापति (अनीकाधिपति) चलते हैं?
8. सूर्याभ देव चरम शरीरी है अथवा अचरम शरीरी?
9. भगवान महावीर के दर्शन-वंदन सूर्याभ देव ने कौनसे चैत्य या उद्यान में किये थे?
10. एक प्रकार का राजचिह्न जिसे पैरों में धारण किया जाता है?
11. समवसरण में जाने के विमान में आत्मरक्षक देवों हेतु कितनी दिशाओं में भद्रासनों की स्थापना की गई?
12. सूर्याभ देव कौनसे देवलोक में है? नाम बताइए।
13. सूर्याभ देव के अग्रमहिषियों और परिषदा की संख्या कितनी-कितनी है?
14. अभियोगिक देवों ने विमान रचना में कितने सोपान की रचना पश्चिम दिशा में की?
15. कौनसे पर्वत पर आकर सूर्याभ देव ने विमान की दिव्य ऋद्धि को संकुचित और संक्षिप्त किया?

प्रश्न संख्या 16 से 30 तक के प्रश्नों के उत्तर संख्या में दीजिए। (प्रश्न संख्या 16 से 30 के उत्तर सूर्याभ देव की नाटक रचना से लेकर सूर्याभ देव की विमान संरचना तक के वर्णन में से)

16. सूर्याभ देव ने आज्ञा रूप में कितने प्रकार की नाट्यविधि दिखलाने को कहा?
17. रिभित नाटक बत्तीस नाटकों में कौनसे क्रम पर है?
18. सूर्याभ देव ने भगवान महावीर को नाट्यविधि प्रदर्शन के लिए कितनी बार पूछा?
19. सौधर्मकल्प में कुल कितने विमान बताए गए हैं?
20. सूर्याभदेव ने अपनी दोनों भुजाओं से कुल कितने देवकुमारों की विकुर्वणा की?
21. सूर्याभदेव ने कितने प्रकार के वाद्यों की विकुर्वणा की?
22. सौधर्मकल्प के ठीक मध्य में कुल कितने अवतंसक हैं?
23. बत्तीस प्रकार की नाट्यविधियों में से भगवान महावीर के जीवन संबंधी नाटक विधि का कौनसा क्रम है?
24. सूर्याभ देव के विमान में कुल कितने द्वार हैं?
25. नाट्यविधि में कुल कितने अक्षर वर्गों का अभिनय करके दिखाया गया?

26. सुधर्मा सभा के द्वार कितने योजन ऊँचे एवं चौड़े हैं?
27. नाट्यरचना में सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के वर्णन की कितनी नाट्यविधियाँ हैं?
28. सिद्धायतन की मणिपीठिका पर कितनी जिनप्रतिमाएँ विराजमान हैं?
29. सूर्याभदेव ने जिनप्रतिमाओं के सम्मुख कितने छन्दों की स्तुति की?
30. सूर्याभविमान और पूर्व दिशा के अशोक वन में कितना अन्तर अथवा दूरी है?

प्रश्न संख्या 31 से 45 तक के प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (सूर्याभदेव की पूर्वभव विषयक जिज्ञासा से लेकर राजप्रश्नीयसूत्र के समापन तक के वर्णन में से)

31. राजा प्रदेशी का जनपद कौनसा था?
32. राजा प्रदेशी की रानी और आत्मज का क्या नाम था?
33. कितने कारणों से जीव केवली प्ररूपित धर्म सुनता है और कितने कारणों से नहीं?
34. किस देश के घोड़ों की सवारी का कहकर चित्त सारथी ने राजा प्रदेशी को भ्रमित किया?
35. केशी श्रमण से सेयविया नगर की ओर आने की विनति किसने की?
36. सूर्याभदेव के सामानिक परिषद् के देवों की स्थिति कितने काल की है?
37. केशी श्रमण और चित्त सारथी सर्वप्रथम कौनसे चैत्य या उद्यान में मिले?
38. राजा प्रदेशी ने केशी श्रमण को आत्मा-शरीर के ऐक्य के सम्बन्ध में सर्वप्रथम किसका उदाहरण दिया?
39. राजा प्रदेशी ने जीव को शरीर से बाहर लाकर हथेली पर रखी किस वस्तु के समान देखना चाहा?
40. केशी श्रमण ने लोहे की कुंभी के उदाहरण के समक्ष कौनसी शाला का दृष्टान्त दिया?
41. सूर्यकान्ता रानी ने किसे राजा प्रदेशी को मारकर राजलक्ष्मी भोगने को कहा?
42. राजा जितशत्रु के जनपद का क्या नाम था?
43. चित्त सारथी माह में कितने दिवस पौषध करते थे?
44. चित्त सारथी के पास किस जानवर का रथ था?
45. सूर्याभदेव के उस भव का नाम क्या होगा जिसमें वह सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बनेगा?

प्रश्न संख्या 46 से 50 तक के प्रश्नों के उत्तर दो-चार पंक्तियों में दीजिए। (सम्पूर्ण राजप्रश्नीय सूत्र में से)

46. पाँच प्रकार के राजचिह्नों के नाम लिखिए।

47. आभिनिबोधिक ज्ञान के भेदों के नामों का उल्लेख कीजिए।
48. आठ मंगल के नाम बताइये।
49. चातुर्यामों के नाम बताइये।
50. परिषदाएँ कितनी प्रकार की हैं? नाम बताइये।

आओ स्वाध्याय करें

श्री सुखविपाक सूत्र पर आधारित प्रतियोगिता का परिणाम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में आगम अध्ययन के लक्ष्य से जिनवाणी के माध्यम से प्रारम्भ की गई श्री सुखविपाकसूत्र की प्रतियोगिता (फरवरी-2015) में 320 प्रतियोगियों ने भाग लिया। परिणाम संभागक्रम से इस प्रकार रहा-

संभाग/क्षेत्र	15 से 45 वर्ष	45 वर्ष से ऊपर
1. कर्नाटक/तमिलनाडु	(1) एन. मनीषा कांकरिया-चेन्नई	(1) पी. आशा दुग्गड़-चेन्नई
/आंध्रप्रदेश	(2) संजय कचोलिया-बैंगलुरु	(2) बसंता गुगलिया-हैदराबाद
	(3) ललिता जैन-राजकोट	(3) चंचल बरडिया-बैंगलुरु
2. पल्लीवाल/दिल्ली	(1) चिराग जैन-गंगापुर	(1) मंजू जैन-हिण्डौनसिटी
/पंजाब	(2) ऋषभ जैन-भरतपुर	(2) माधुरी जैन-आगरा
	(3) पूनम जैन-भरतपुर	(3) बीना जैन-दिल्ली
3. मारवाड़/गुजरात	(1) नीरा भण्डारी-ब्यावर	(1) कालूचन्द कानूंगा-सिवाना
	(2) ऋतु जैन-जोधपुर	(2) मुन्नालाल भण्डारी-जोधपुर
	(3) मंजू जैन-पीपाड़	(3) उपमा चौधरी-अजमेर
4. जयपुर/पोरवाल/	(1) अक्षतकुमार जैन-जयपुर	(1) पदमा नाहर-भोपाल
मध्यप्रदेश	(2) विशाखा जैन-जयपुर	(2) चित्रा डागा-बूँदी
	(3) मोनिका मारू-बारां	(3) अनिलकुमार जैन-कोटा
5. महाराष्ट्र एवं अन्य क्षेत्र	(1) स्नेहा तातेड़-लासलगाँव	(1) सरला जैन-भुसावल
	(2) ममता राखेचा-बुलढाणा	(2) तारामती ओस्तवाल-द्वारका
	(3) तनुजा कोठारी-धुलिया	(3) उषा टाटिया-शिंदखेड़ा

6. ग्रुप में- (1) बलवंतसिंह चोरडिया, निर्मला चोरडिया-झालरापाटन
(2) सरोज गोलेच्छा, साधना डोसी-सनावद
(3) हेनीत जैन, नवीन जैन-जलगाँव

परिणाम के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- श्री गौतम जी जैन, पचाला-090010-17837

कविता

लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाना है

श्रीमती अरुणा कर्णावट

नहीं अटकना, नहीं भटकना, लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाना है,
गुरु कृपा की ज्योति लेकर तम को दूर भगाना है।
देह रमणता को तजकर आत्म रमणता को जगाना है,
विभाव दशा को दूरकर स्वभाव दशा में रमण करना है।
नहीं अटकना, नहीं भटकना.....।।1।।
पुद्गल की आसक्ति को तोड़ आत्म-रुचि को प्रकटाना है,
देह इन्द्रिय सुख को तजकर भेद-विज्ञान को जीना है।
नहीं अटकना, नहीं भटकना.....।।2।।
कामवासना को दूरकर वीतराग-स्वरूप को पाना है,
अशाश्वत पुद्गल पर्यायों को तज, शाश्वत स्वरूप में रमना है।
नहीं अटकना, नहीं भटकना.....।।3।।
पर-परिचय को दूरकर, आत्म-साक्षात्कार करना है,
अनन्त पर्यायों के दुःख को तजकर, अव्याबाध सुख में रमना है।
नहीं अटकना, नहीं भटकना.....।।4।।
साता की आसक्ति से निर्लिप्त हो, निरासक्त बनना है,
अहं-भाव को तजकर समता भाव जगाना है।
नहीं अटकना, नहीं भटकना.....।।5।।
हीरा सम मानव भव को प्रस्तर-सम नहीं तजना है,
चौरासी के चक्कर को विराम लगा अक्षय-सुख को पाना है।
नहीं अटकना, नहीं भटकना.....।।6।।
देह से परे हो, देहातीत बनना है,
अनन्त आत्म-भाव में लीन बनकर, शिव-स्वरूप में स्थित होना है।
नहीं अटकना, नहीं भटकना.....।।7।।

-एफ-30-बी, लाल बहादुर नगर (पश्चिम), जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर(राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

चिन्तन के आयाम- डॉ. धर्मचन्द जैन, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2575997, ***पृष्ठ***-168+8, ***मूल्य***- 40 रुपये मात्र, सन् 2015

जैन जगत् में 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका की अपनी अनूठी पहचान है और उसके 'प्रवेश द्वार' के रूप में प्रकाशित प्रत्येक सम्पादकीय नित नये विचार एवं चिन्तन के आयामों से पाठकों को आकर्षित करता रहता है। सम्पादकीय के ये सरस विचार एक साथ पुस्तक के रूप में पढ़ने के लिए पाठकों को प्राप्त हों, इस लक्ष्य से कुछ चुनिन्दा सम्पादकीयों का समवाय रूप यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। प्रतिभाशाली लेखक के चिन्तन पटल पर उभरे ये विचार जीवन की विभिन्न समस्याओं के समाधान में उपयोगी हो सकते हैं। यह पुस्तक आज की दिशाहीन युवा पीढ़ी के लिए जीवन-दिग्बोधक यंत्र की तरह सहयोगी हो सकती है। जैन विद्वानों में लब्ध प्रतिष्ठित प्रो. जैन ने 35 विषयों पर अपने महत्त्वपूर्ण विचारों को इसमें संजोया है। इस पुस्तक की विशेषता है कि व्यस्ततम व्यक्ति भी किसी एक लेख के सार को बाक्स में लिखे बिन्दुओं द्वारा 3 से 5 मिनिट में पढ़ सकता है।

वॉट्सएप/फेसबुक के माध्यम से भी प्रतिदिन एक सुविचार अपने मित्र को भेजा जा सकता है। जैसे- 1. जीवन के वर्तमान क्षण का सदुपयोग ही वरदान है। 2. जब भी कोई व्यक्ति किसी से सुख लेना चाहता है तो वह उस वस्तु एवं व्यक्ति के पराधीन हो जाता है। 3. सुविधा और स्वतन्त्रता में भेद है। यह देखा गया है कि जो अधिक सुविधा सम्पन्न है वह दुःखी एवं पराधीन है। 4. अधिकार की अपेक्षा कर्त्तव्यपालन को अधिक महत्त्व दें तो पारस्परिक कलह एवं तनाव दूर हो सकते हैं। 5. विनाश कुछ पलों में हो जाता है, किन्तु निर्माण में वर्षों का श्रम लगता है। 6. मनुष्य के मन में जो असीमित आकांक्षाएँ होती हैं, वे ही दुःखदायी होती हैं। 7. पुरुषार्थ या श्रम का परिणाम साक्षात् दिखाई न पड़ने पर या असफल होने पर मनुष्य नियतिवादी बन जाता है। 8. पदार्थवादी दृष्टि व्यक्ति को पराधीनता, जड़ता, अशान्ति एवं दुःख की ओर ले जाती है। 9. हम आग्रह बुद्धि का त्याग करें, दूसरों के विचारों को भी सुनें और समझें, शान्ति के साथ सही तथ्यों के आधार पर निर्णय लें। 10. धन का सदुपयोग ही लक्ष्य की पूजा है। 11. वस्तुओं के बढ़ने के साथ सुख

बढ़ता हो ऐसा कोई आनुपातिक सम्बन्ध नहीं है। 12. अविवेक से आपदाएँ उत्पन्न होती हैं तथा विवेक मनुष्य के मनोभावों पर नियन्त्रण करता है।

पुस्तक में लौकेषणा, प्रशंसा, प्रयोगधर्मिता, वर्तमान है वरदान, धन और धर्म, आत्म-चिकित्सा, संयोग-वियोग, स्वागत मृत्यु का, प्रव्रज्या : दुःख की शय्या, लक्ष्मी-पूजा, नारी-स्वातन्त्र्य जैसे समसामयिक विषयों पर चिन्तन प्रस्तुत हुआ है। यह पुस्तक जन्मदिन, वैवाहिक वर्ष-गांठ जैसे शुभ अवसरों पर भेंट स्वरूप दी जा सकती है। स्वाध्यायियों के लिए भी उपादेय है।

विशेषावश्यकभाष्य के गणधरवाद और निह्नववाद की दार्शनिक समस्याएँ और समाधान- साध्वी विचक्षणश्रीजी, ***मार्गदर्शक***- डॉ. सागरमल जैन, ***सम्पादक***- डॉ. दलपतसिंह बया, ***प्रकाशक***- प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (मध्यप्रदेश) एवं तारक गुरु ग्रंथालय, उदयपुर (राज.), ***पृष्ठ***-454+16, ***मूल्य***- 400/- रुपये, सन्-2015

प्रस्तुत कृति पी-एच्.डी. उपाधि हेतु स्वीकृत शोध प्रबन्ध का पुस्तकीय रूप है। इसमें तीन खण्डों में विभाजित एवं प्राकृत भाषा में अनूदित विशेषावश्यक भाष्य के गणधरवाद एवं निह्नववाद को केन्द्र में रखकर दार्शनिक समस्याओं पर चिन्तन हुआ है। गणधरवाद में गणधर की शंकाओं का और उसके समाधान का विवरण है तथा निह्नववाद में उन निह्नवों की चर्चा है, जो भगवान महावीर की दार्शनिक मान्यताओं को अस्वीकार कर उनके स्थान पर एक नये दार्शनिक मतवाद की स्थापना करते हैं। अतः यहाँ दो भिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत कर दार्शनिक समस्याओं का विशेष मंथन किया गया है। प्रथम अध्याय में जैनागम व व्याख्या साहित्य का परिचय दिया गया है, द्वितीय अध्याय में आत्मा के अस्तित्व पर चिन्तन, तृतीय अध्याय में कर्मों के अस्तित्व एवं प्रकारों का अध्ययन, चतुर्थ अध्याय में आत्मा और शरीर की भिन्नता का प्रतिपादन, पंचम अध्याय में शून्यवाद की समीक्षा, षष्ठ अध्याय में इहलोक-परलोक सम्बन्धी तत्कालीन मान्यताएँ, सप्तम अध्याय में बन्धन-मुक्ति का स्वरूप, अष्टम अध्याय में पुण्य-पाप की चर्चा, नवम अध्याय में पुनर्जन्म, परलोक सम्बन्धी चिन्तन, दशम अध्याय में निह्नवों के व्यक्तिगत वादों की समीक्षा तथा एकादश अध्याय उपसंहार रूप है। महावीरकालीन दर्शनों को समझने में यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। शोधार्थी तत्त्व-जिज्ञासु, स्वाध्यायी, जैन धर्म के पिपासु हेतु यह पुस्तक संग्रहणीय है।

पुस्तक समीक्षा हेतु जिनवाणी कार्यालय के पते पर दो प्रतियाँ भिजवानी आवश्यक है।

-सम्पादक

रिपोर्ट

आचार्य श्री हीरा : आचार्य पदारोहण रजत साधना वर्ष का सामूहिक एकाशन एवं शीलव्रत की आराधना से हुआ शुभारम्भ

नदबई में 36 आजीवन शीलव्रती बने

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का आचार्य पदारोहण के 25वें वर्ष में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, 9 मई 2015 को प्रवेश हो गया है। पदारोहण रजत साधना वर्ष के अन्तर्गत ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन के साथ संघोन्नति के विविध आयामों पर रचनात्मक एवं सकारात्मक कार्यक्रमों की क्रियान्विति किए जाने हेतु अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा निर्णय किया गया है। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का वि.सं. 2048 की ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी रविवार तदनुसार 02 जून, 1991 को जोधपुर में चादर महोत्सव के माध्यम से गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा को संघनायकत्व प्रदान किया गया था। यशस्वी परम्परा के अष्टम पट्टधर ने परम्परा के पोषण, मर्यादाओं के रक्षण के साथ चतुर्विध संघ में ज्ञान-दर्शन-चारित्र के सम्यक् संवर्धन में गुरु हस्ती की सद्-सीख को न केवल चरितार्थ किया, अपितु आपश्री गौरवशाली परम्परा की यश-कीर्ति को निरन्तर विस्तृत कर रहे हैं, अत: जैन-जैनेतर जन समुदाय की आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रति अनन्य आस्था और अगाध भक्ति है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार आचार्य पदारोहरण दिवस घर-घर और ग्राम-ग्राम ही नहीं, नगरों व महानगरों तक में सामूहिक सामायिक साधना एवं एकाशन-तप की आराधना के साथ मनाया गया है। गुरु के व्यक्तित्व-कृतित्व एवं संघ-समाज को उनकी देन जैसे विषयों पर भक्ति भावना से विचाराभिव्यक्ति की गई है। वर्ष पर्यन्त व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित करने का आह्वान किया गया है।

आचार्य श्री हीरा पंच महाव्रत पालक हैं, पंचाचार आराधक हैं, पंचेन्द्रिय विजेता हैं, बाल ब्रह्मचारी हैं, अष्ट प्रवचन माता के समाराधक हैं। आचार-विचार-व्यवहार से सरल गुरु हीरा में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की रमणता का सुन्दर रूप जैन-जैनेतर सबको आकर्षित एवं प्रभावित करता है। आचार्यश्री के कुशल नेतृत्व में संघ सर्वोन्मुखी प्रगति की ओर

अग्रसर है।

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने नदबई संघ की पुरजोर विनति स्वीकार करते हुए ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष में नदबई पहुँचने की स्वीकृति कुछ दिन पूर्व फरमा दी थी, अत: श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नदबई ने उत्साह के साथ गुरु हीरा के रजत-साधना वर्ष के शुभारम्भ पर सामूहिक सामायिक-साधना, एकाशन-आराधना एवं शीलव्रत के खंद का कार्यक्रम भावना पूर्वक सम्पादित किया।

पल्लीवाल क्षेत्र के अलावा समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों से गुरुचरण-सन्निधि में पहुँचने वाले भक्तों की संख्या का अनुमान करते हुए नदबई संघ ने 9 मई, 2015 के दिन प्रवचन की व्यवस्था अग्रवाल धर्मशाला में रखी। प्रवचन के पूर्व आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.अपने मुनिपुंगवों के साथ सामायिक-स्वाध्याय भवन, नदबई से विहार कर अग्रवाल धर्मशाला के समीप मकान पर पधारे। विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 8 का भी प्रवचन-सभा में सान्निध्य प्राप्त हुआ। रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना, उपाध्यक्ष श्री अमिताभजी हीरावत, महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा, संयुक्त महामंत्री श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल के अलावा जयपुर, जोधपुर ही नहीं चेन्नई तक के गुरुभक्त गुरुचरण सेवा में पहुँचे। पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र के कई ग्राम-नगरों के श्रद्धालुओं ने भी नदबई पहुँचकर आचार्य श्री हीरा के प्रति अपनी-अपनी शुभकामना-मंगलकामना श्रीचरणों में रखी।

प्रात: लगभग 8.30 बजे प्रवचन का शुभारम्भ **महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से किया। **श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.** ने गुरु हीरा गुणगान, आपकी जय-जय हो गीत के माध्यम से गुणगान किए तो उपस्थित विशाल जनमेदिनी भी समवेत स्वर में गुरु-गुणगान में भक्ति-भावना से तल्लीन हो गई। जहाँ स्थान सुलभ हुआ शांति के साथ बैठकर प्रवचन-सभा में श्रद्धालुओं ने अपनी भागीदारी निभाई। अधिकतर भाई-बहिनों ने प्रारम्भ में तीन-तीन सामायिक के प्रत्याख्यान अंगीकृत कर लिए थे, अत: सामायिक-साधना में वे अपूर्व शांति के साथ संत-सतीवृन्द के पीयूष प्रवचनामृत का पान करने में उत्साहित रहे। प्रारम्भ में **श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.** ने पंचाचार के पालक गुरुवर्य के एक-एक आचार का विवरण-विवेचन रखते हुए कहा कि लक्ष्मी भाग्य से मिलती है, पर आचार्य-पद पुरुषार्थ और सौभाग्य से मिलता है। मुनिश्री ने सश्रद्धा-सभक्ति अपनी मंगल मनीषा व्यक्त कर वाणी को विराम दिया।

श्रद्धेय **श्री विनम्रमुनिजी म.सा.** ने गुरु-गुणगान स्वरूप चार पंक्तियों में वंदना अर्ज

करने के पश्चात् आचार्य श्री के ज्ञान-दर्शन-चारित्र की विशेषताओं का विश्लेषण किया। सरलता में धर्म कैसे निवास करता है, कतिपय उदाहरण प्रस्तुत कर मुनिश्री ने कहा कि हमारे आचार्यश्री स्थानकवासी परम्परा के सबसे ज्येष्ठ आचार्य हैं, पर आपश्री की सरलता बेजोड़ है। रत्नसंघ रूपी फुलवारी का माली संघोन्नति में सक्रिय है। मैं पूज्य गुरुदेव के आचार्य पदारोहण के रजत वर्ष के शुभारम्भ पर अन्तर्मन से श्रद्धा समर्पित करता हूँ।

वयोवृद्धा **महासती श्री प्रभावतीजी म.सा.** ने भक्तिभावपूर्वक भजन के माध्यम से गुरु गुणगान किए। **महासती श्री पूनमजी म.सा., महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. महासती श्री रक्षिताजी म.सा. व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.** ने भी गद्य-पद्य भाषा-भाव में आचार्य श्री हीरा की प्रमुख विशेषताओं का चित्रण करते हुए अपनी-अपनी ओर से शुभकामना व्यक्त की। विदुषी **महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.** ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य तीर्थंकर भगवन्तों की अनुकृति-प्रतिकृति होते हैं। आपश्री ने गुरु हस्ती की चरण-सन्निधि में रहते हुए सेवा और विनय से सबका मन मोह लिया था, गुरु हस्ती ने भी आपकी योग्यता-क्षमता-पात्रता जान-समझकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, हम-सब हृदय की असीम आस्था से आपश्री की शतायु-दीर्घायु की कामना तो करते ही हैं, आचार्य पद के पदारोहण के पावन प्रसंग पर अपेक्षा रखते हैं कि आप-हम सबको ज्ञान-दर्शन-चारित्र में आगे बढ़ाते रहेंगे।

संत-सतीवृन्द के प्रवचन में काफी समय गुजर गया, परन्तु आचार्यश्री प्रवचन-सभा में नहीं पधारे। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आचार्यश्री की सेवा में पहुँचे और निवेदन किया- भगवन् ! विशाल जनमेदिनी आपश्री के सान्निध्य के लिए काफी लम्बे समय से प्रतीक्षारत है। जनभावना की अपेक्षा तो तभी साकार होगी जबकि आप प्रवचन-सभा में पधारें।

आचार्यश्री प्रवचन-सभा में पधारे तो जनसमुदाय ने हर्षित-पुलकित हो जय-जयकार के जयनाद किए और आबाल-वृद्ध सबकी भावना साकार होने पर प्रचलित जयघोष-गुरु हस्ती के दो फरमान, सामायिक-स्वाध्याय महान्.....गुरु हीरा का है आह्वान, निर्व्यसनी हो हर इंसान....., जैन जगत् के दिव्य सितारे, हस्ती-हीरा-मान हमारे.....गुंजायमान हुए। आचार्यश्री को मुनिमण्डल एवं महासती मण्डल ने वंदन किया तब तक जय-जयकार के गगनभेदी जयनाद अनवरत चलते रहे।

प्रवचन-सभा का संचालन करने वाले **युवारत्न श्री नरेशचन्दजी जैन** ने कतिपय सूचनाओं का प्रसारण किया, साथ-ही-साथ जनसमुदाय से अपेक्षा रखी की आपने जिस

शांति से गुरु-गुणगान श्रवण किए हैं, आप उसी शांति से वक्ताओं के हृदयोद्गार श्रवण करें। प्रवचन-सभा में अनेक दम्पती शीलव्रत के खंद करेंगे, आप-हम-सब तपों में श्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य की अनुमोदना करें। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री के नदबई पधारने पर अग्रवाल समाज ने गुरुभक्ति का परिचय तो दिया ही है, युवकों ने रविवारीय सामूहिक सामायिक धर्म स्थान में आकर करने का संकल्प किया हैं, मैं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नदबई की ओर से व्रत-नियम की श्रद्धा समर्पित करने वाले सभी भाई-बहिनों का आभारी हूँ।

प्रवचन के क्रम को आगे बढ़ाते हुए **श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.** ने संक्षेप में अपने मनोभाव व्यक्त किए। भाषा-भाव और प्रभावी प्रस्तुतीकरण से जनसमुदाय एकाग्रता पूर्वक श्रवण में ऐसा तल्लीन हो गया कि मुनिश्री अपनी बात कहते ही रहे, रुके नहीं। मुनिश्री ने आचार्य की महिमा में कहा- जिनके जीवन में शास्त्र खुद व्याख्या पा जाए, सिद्धान्त सत्य बनकर उभर आए, पूर्व-अपूर्व श्रुत-सा नजर आए, ज्ञान-विज्ञान बनकर केवलज्ञान में समा जाए, वे आचार्य होते हैं। "छत्तीस गुण जिनकी अन्तर-चेतना बन चुकी हो, जिनका जीवन छह काया का रक्षक हो, समिति का शरण-स्थल हो, 17 भेदे संयम के जो सारथि हों, तीन गुप्तियों से गुप्त मानस के जो महारथी हों वे होते हैं आचार्य।" और कहूँ आज्ञा-आचार-आराधना की धड़कन जिनके श्वास-श्वास में हो, जिनके प्रवचन आदेय और सौभाग्य अप्रतिहत हो, शुद्धाचरण और प्रामाणिकता की कसौटी में तपकर जिनके संयम में स्वर्ग-सा निखार आया हो, वे होते है आचार्य। आचार्य के रोम-रोम से आचार झलकता हो, मात्र काया से ही नहीं, मात्र वचन से ही नहीं, मात्र मन से ही नहीं, अपितु आत्मा के हर प्रदेश से आचार प्रकट होता हो, वे होते हैं आचार्य। ऐसे अक्षत और अभिन्न आचार के पालक हैं आचार्य भगवन्त (आचार्य श्री हीरा)।

हे बोधि बीजदाता ! आपकी रजत जयन्ती पर हम यही मनोकामना करते हैं कि चक्रवर्ती के चक्र की तरह आपका चतुर्विध शासन सदैव गतिमान रहे। अशोक वृक्ष की तरह आपका संघ ज्ञान-दर्शन-चारित्र से हरा-भरा रहे। देवदंदुभि की तरह आपके श्रीमुख से जिनवाणी का दिव्यघोष सदैव गुंजायमान रहे। आपका सान्निध्य कल्पवृक्ष की तरह संघ में लहलहाता रहे। आपका यशस्वी जीवन युगों-युगों तक अमर रहे। इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर आपका व्यक्तित्व-कृतित्व सदा जयवन्त हो, यही मंगल मनीषा है।

सभा संचालक श्री नरेशचन्दजी जैन के आह्वान पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने अपनी विचाराभिव्यक्ति में कहा कि आज का दिन हमारे लिए श्रद्धा का दिन है, समर्पण का दिन है और हम-सब गौरवान्वित हैं। आचार्य श्री हीरा के चादर महोत्सव पर जोधपुर में साधक श्रावक एवं प्रबुद्ध

चिन्तक श्री जौहरीमलजी पारख ने कहा था कि आचार्य-पद कांटों का ताज है। किन्तु आप यशस्वी गुरु हस्ती की यश-कीर्ति संभाल कर तो रखे हुए ही हैं, बढ़ाते भी जा रहे हैं। आचार्य श्री हीरा गाँधी कुल की शान हैं। आचार्य श्री हमीरमलजी म.सा. भी गाँधी कुल गौरव थे। कुशलवंश परम्परा के एक-एक आचार्य के विशिष्ट गुणों को संक्षेप में रखते हुए संघाध्यक्ष महोदय ने कहा कि आपश्री का धैर्य हमने कई अवसरों पर कई बार देखा है। आप दीर्घद्रष्टा हैं, संघहितैषी-संघहितचिन्तक हैं और कहना चाहिये चतुर्विध संघ की सुरक्षा के आप प्रहरी हैं। संघाध्यक्ष महोदय ने आचार्य श्री हीरा के व्यक्तित्व पर विचार तो रखे ही, कृतित्व की झांकी रखते हुए कहा कि आपश्री संघ-समाज के उन्नयन में प्रबल पुरुषार्थ कर रहे हैं। रात्रि भोजन त्याग, सामूहिक भोज में रात्रि भोजन नहीं करने का आह्वान, व्यसनों से दूर रहने की प्रेरणा, शीलव्रत के खंद आपके प्रमुख आयाम हैं। मैं अपनी ओर से एवं सकल संघ की ओर से आपश्री के पदारोहण के रजत वर्ष के शुभारम्भ पर मंगल कामना करते हुए सभी भाई-बहिनों से अपेक्षा रखता हूँ कि रजत-साधना वर्ष में ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में अपनी श्रद्धा-भक्ति समर्पित करें। नदबई संघ ने जिस उत्साह से कार्यक्रम का आयोजन किया हैं, मैं नदबई संघ को धन्यवाद-साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

संघाध्यक्ष महोदय के विचार अभिव्यक्ति के अनन्तर नदबई संघ ने एक-एक करके उपस्थित 30 दम्पतियों के नाम लेकर उन्हें शीलव्रत के खंद करने के लिए खड़ा किया। आचार्यश्री ने **30 दम्पतियों को शीलव्रत के प्रत्याख्यान करवाये।** जन समुदाय ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के जयनाद कर शीलव्रतियों का स्वागत-सत्कार-बहुमान किया।

नदबई संघ की ओर से यह भी सूचना की गई कि अभी 5-6 दम्पती और शीलव्रत ग्रहण करेंगे। आचार्यश्री के यहाँ पधारने के पश्चात् 72 खंद हो चुके हैं। हम सौ खंद करवाने का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं अत: गुरुदेव कुछ दिन यहाँ विराजने की कृपा करें।

महान् **अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** ने कहा कि गुरु हस्ती से प्राप्त पद पर प्रतिष्ठित होकर आचार्य श्री हीरा ने स्व-निष्ठा से पद की गरिमा बढ़ाई है। चतुर्विध संघ द्वारा प्रदत्त धवल चादर को संभाल कर रखने वाले आगम महोदधि, रत्नसंघ के शिरोमणि आपने अपने कृतित्व से संघ को आगे बढ़ाया है, इसका हम-सबको प्रमोद है। मुनिश्री ने भगवती सूत्र के माध्यम से गौतम स्वामी द्वारा भगवान महावीर स्वामी से की गई पृच्छा का उल्लेख करते कहा कि जिनशासन 21 हजार वर्ष तक प्रवर्तमान रहने वाला है। आपश्री में आचरण की आभा है, प्रवचन की प्रभा है और चारित्र की चमक से शासन दीप्तिमान हो रहा है। कहना होगा आचार्य सुधर्मा के शासन को सुरक्षित रखने में आपश्री का योगदान है। आप आचार्य-पद को 24 साल से संरक्षित कर रहे हैं। मैं आपश्री के स्थापित

आयामों की क्या चर्चा करूँ, जोधपुर से उपाध्यायश्री सहित मुनिमण्डल की मंगल मनीषा का पत्र नौरतनजी लेकर आए हैं, उसमें लिखा है कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि में नित-नए आयाम स्थापित हो रहे हैं, इसका प्रमोद है।

आचार्य का काम आचार पालना और पलवाना होता है। आप बोलते हैं- आचार्य पंचाचार पलाते, संघ शिरोमणि संघ दीपाते, सकल संघ रखवाल, परमेष्ठी करते हैं नमस्कार। आचार्य श्री स्वयं आचार पालते हैं, संघ के प्रत्येक घटक से आचार पलवाते हैं। आपको ज्ञात ही है कि आचार्य श्री हीरा ने ज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण बोर्ड की स्थापना हेतु प्रेरणा की और उसका सुपरिणाम भी सामने है। रत्नसंघ संख्या की दृष्टि से भले ही छोटा है, परन्तु संघ का नाम मोटा है। संघ में कई संत-सतियाँ हैं जिन्हें बीस-बीस, पच्चीस-पच्चीस आगम कण्ठस्थ हैं। उनका ज्ञान मात्र रटन नहीं, सीखे ज्ञान को आचरण में उतारा जा रहा है। ज्ञान की तरह दर्शन-विशुद्धि भी संघ की पहचान है। मैं चारित्र की क्या बात कहूँ ? चारित्र के चितेरे आपके सामने विराजमान हैं। आचार्यश्री स्वयं साधना में लीन रहते हैं। तो संघ की साधना के माध्यम से तेजस्विता बढ़ाने में सक्रिय हैं। आचार्य श्री हस्ती से प्राप्त संस्कारों एवं आचार-संहिता को आपश्री नियमों-उपनियमों में कठोरता के साथ नई दिशा दे रहे हैं। संत-सतीवृन्द से प्राप्त आचार-पालना की रिपोर्ट का आप अवलोकन करते हैं, निरीक्षण और परीक्षण करके चारित्र की पालना में कठोरता से अनुशासन करने में सजग हैं। आप मक्खन की तरह मुलायम हैं, किन्तु अनुशासन के मामले में वज्र से भी अधिक कठोर हैं। सिद्धान्तों से समझौता नहीं करने की आपश्री की वृत्ति हमें हर समय प्रेरणा करती रहती है। तपाचार के सम्बन्ध में मुझे संक्षेप में इतना ही कहना है कि आपश्री के शासन में मासखमण जैसी दीर्घ तपश्चर्याएं निरन्तर चल रही हैं।

आप-हम-सब भाग्यशाली हैं, जो गुरु हस्ती की प्रतिकृति रूप आपश्री के पावन सान्निध्य में ज्ञान-दर्शन-चारित्र का विकास कर रहे हैं। गुरु हस्ती जरूर चले गए, लेकिन आप जैसा सारथी देकर गए हैं, जिस पर हमको नाज़ है। आप संघ-दीप्ति में आन-बान-शान से ही नहीं, प्राण-प्रण से लगे हुए हैं।

आप-हम गुणगान कर रहे हैं। गुणगान करने के लिए समय चाहिए। प्रवचन का समय नियत होता है, फिर धूप चढ़ गई है। नीचे से जमीन तप रही है, आपके ऊपर कपड़ा जरूर है पर तपन भी कम नहीं है, इसलिए अभी अधिक कहने के बजाय मैं केवल इतना संकेत करना चाहूँगा कि आप आचार्य श्री हीरा जैसे दूरदर्शी महापुरुष की चरण-सन्निधि में व्रत-नियम अंगीकार करके स्वयं का जीवन तो बनाएं ही, संघ-समाज में त्याग-तप का आदर्श भी उपस्थित करें। नदबई संघ ने एकाशन का अभियान चलाया है, सामायिक का अनुष्ठान

स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है, अभी-अभी आपने 30 शीलव्रत के खंद होते देखे हैं। 5-6 खंद और हो सकते हैं। 40 खंद आज के पूर्व हो चुके हैं। पल्लीवाल क्षेत्र में जहाँ-जहाँ भी आचार्यश्री पधारे हैं, जैन-जैनेतर जनसमुदाय में श्रद्धा-भक्ति का सुन्दर रूप देखने का मिल रहा है। आचार्य श्री हीराचन्द्रजी महाराज के कुशल शासन में संघ उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे, यही मंगल मनीषा है।

नदबई संघ के आग्रह-अनुरोध पर **संघनायक आचार्य श्री हीरा ने** संक्षेप में अपने हृदयोद्गार रखते फरमाया कि तीर्थंकर भगवान महावीर का शासन सदा जयवन्त है, रहेगा। शासन में अनेकानेक महान् आचार्य हुए हैं जिन्होंने एक-एक दिन में हजार-हजार व्यक्तियों को दीक्षित किया। ऐसे-ऐसे तपस्वी संत हुए, जिन्होंने छः छः माह तक लगातार तप किया। चार-चार माह तक कुंए की पाल पर, सिंह की गुफा में, वेश्या के घर पर साधना-आराधना करने वाले महापुरुषों के बारे में आपने सुना है। राजा-महाराजाओं को समझाकर साधना में जोड़ने का काम कइयों ने किया है। मैं दूसरे-दूसरे उदाहरण क्या रखूँ, इस परम्परा में क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने 60 हजार अजैनों को जैनी बनाया। ज्ञान करने वालों में ऐसे-ऐसे महापुरुष हुए जिन्होंने एक-एक दिन में हजार-हजार गाथाएं याद करके सुना दी। जो लोग, शिकार करने वाले थे उन्होंने शिकार करना छोड़ दिया। मांस खाने वालों ने मांसभक्षण को तिलाजंलि दे दी। शराब पीने वालों ने शराब खराब है, समझकर शराब छोड़ दी। प्रेरणा और समझाइश से क्या नहीं होता? एक माँ अपने बच्चे को प्रेम के साथ समझाकर पालने में झूलते बच्चे को संस्कार देती है। बच्चा चाहे गूंगा है, बहरा है, काला-कलूटा है, कुरूप है या सुरूप है मां के मन में कोई भेद नहीं, वह बच्चे का हित-रक्षण करती है। एक पिता पेट भरने की नहीं, घर चलाने की विद्या सिखाता है। गुरु ज्ञान देता है, अक्षर ज्ञान सिखाने वाला गुरु भी आदर पाता है तो धर्म-गुरु जो हर आने वाले को अव्रत से व्रत में लाता है, उसका कहना ही क्या? धर्म-गुरु व्यक्ति में रहे अज्ञान-अंधकार को दूर करता है। आप आचार्य भगवन्त (आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज) के शासन की प्रभावना करना चाहते हैं तो **धर्म के नाम पर हिंसा नहीं करें।** व्यसन विपत्ति का घर है आप इसे सही मानते हैं तो **व्यसनों को तिलाजंलि दे दें।** विनोबाभावे हों या जॉर्ज बर्नाडशाह उनसे जब पूछा गया कि आप अगले जन्म में कहाँ पैदा होना चाहते हैं तो उनका उत्तर था- हमें जैन के घर में जन्म मिले। क्यों? तो **जैनी का जीवन निर्व्यसनी होता है। वह न गुटखा खाता है, न शराब पीता है।** हम जब भी गुरुमंत्र करवाते हैं, सप्त-कुव्यसन का त्याग करवाते ही हैं।

आप-सब जैनी हैं। आप भगवान महावीर के शासन की दीप्ति बढ़ाना चाहते हैं तो इस

चौकीदार को अपने व्यसन दें दें। मैं मात्र चौकीदार हूँ। मुझे मेरे और आपके आत्म-धन की रक्षा करनी है। मैं आपसे खुले मन से व्यसन मांग रहा हूँ। आप अपने व्यसन छोड़ें, पाप से किनारा करें, जीवन में सद्गुणों की वृद्धि करें।

आचार्यश्री के हृदयोद्गार जनसमुदाय ने श्रवण कर अपने-आपको धन्य-धन्य माना। प्रवचन-सभा में उपस्थित जनसमुदाय का आभार व्यक्त करते हुए **मंच संचालक श्री नरेशचन्दजी जैन** ने कहा कि आज ही चेन्नई से आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के प्रेरक जीवन पर आधारित पुस्तक 'गुण सौरभ-गणिहीरा' खुली प्रतियोगिता पुस्तक प्राप्त हुई है। इस प्रतियोगिता का शुभारम्भ रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना अपने कर-कमलों से करें, इस निवेदन के साथ उन्होंने बाफना साहब को आमंत्रित किया। बाफना साहब ने गुणसौरभ-गणिहीरा खुली पुस्तक प्रतियोगिता के शुभारम्भ की घोषणा की। आचार्यश्री के आचार्य पदारोहण के रजत साधना वर्ष में दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं मंगल मनीषा व्यक्त करने हेतु रसीदपुर, महवा, मण्डावर, मौजपुर, हरसाना, खेरली, हिण्डौनसिटी, भरतपुर, पहरसर, जयपुर, जोधपुर, चेन्नई, दांतिया, कठूमर, खोह, गंगापुर, अलवर, मोलोनी, जलगाँव, लक्ष्मणगढ़, इत्यादि ग्राम-नगरों से श्रद्धालु नदबई पहुँचे।

श्री नरेशचन्दजी जैन ने उपवास-एकाशन के प्रत्याख्यान करवाये। प्रवचन-सभा में उपस्थित सैंकड़ों भाई-बहिनों ने एकाशन का नियम लिया। मंच की ओर से निवेदन किया गया कि श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नदबई ने एकाशन करने वालों के साथ बाहर से पधारे सभी भाई-बहिनों की भोजन की व्यवस्था इसी धर्मशाला में रखी गई है। कृपया संघ को सेवा का सुअवसर प्रदान करें। सामूहिक वन्दन के अनन्तर आचार्यश्री ने मंगल पाठ सुनाया और प्रवचन-सभा विसर्जित हुई। -*नौरतनमल मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी*

आगामी पर्व तिथि

प्रथम आषाढ़ कृष्णा 14, सोमवार	15.06.2015	चतुर्दशी
प्रथम आषाढ़ कृष्णा 30, मंगलवार	16.06.2015	पक्खी
प्रथम आषाढ़ शुक्ला 6, सोमवार	22.06.2015	आर्द्रा नक्षत्र प्रारम्भ
प्रथम आषाढ़ शुक्ला 8, बुधवार	24.06.2015	अष्टमी
प्रथम आषाढ़ शुक्ला 14, बुधवार	01.07.2015	चतुर्दशी, पक्खी
द्वितीय आषाढ़ कृष्णा 8, गुरुवार	09.07.2015	अष्टमी
द्वितीय आषाढ़ कृष्णा 14, बुधवार	15.07.2015	चतुर्दशी,पक्खी
द्वितीय आषाढ़ शुक्ला 8, शुक्रवार	24.07.2015	अष्टमी
द्वितीय आषाढ़ शुक्ला 14, गुरुवार	30.07.2015	चतुर्दशी, चातुर्मास प्रारम्भ

कविता

धर्म की शक्ति है महान्

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

धर्म की महिमा क्या गाऊँ मैं, शब्द नहीं है पास मेरे,
जिसने इसको अपनाया है, उसके सारे कष्ट टरे।
धर्म की शक्ति है महान, पग-पग रक्षा करता है,
मन का सारा बोझ हटाकर, समभावों से भरता है।।1।।
धर्म नहीं है जिस जीवन में, वहाँ अशांति रहती है,
धर्म बिना जीवन सूना है, जिनवाणी यह कहती है।
धर्म आचरण करो सदा ही, प्रभु का यह संदेश है,
प्रेम भाव रखना आपस में, नहीं रहता कोई क्लेश है।।2।।
धर्ममय जीवन जीने से, विनय भावना आती है,
शुभ भावों की निर्मल ज्योति, दूर कषाय हटाती है।
अन्तर पावन हो जाता है, धर्म ध्यान के होने से,
जीवन सफल हो जाता है, आराधक बन जाने से।।3।।
दुर्गतियों से बचना है तो, सदा धर्म को अपनाओ,
सुख-साधन के भंवर में पड़कर, मत धर्म को विसराओ।
धर्म हमारा सच्चा साथी, भव-भव साथ निभाता है,
धन दौलत सब रहे यहीं पर, धर्म साथ में जाता है।।4।।
अगर चाहना है मोक्ष की, धर्म की राह पकड़ लेना,
आये चाहे कष्ट हजारों, अपने धैर्य को मत खोना।
विपदाएँ सब हट जाती हैं, धर्म के तेज प्रताप से,
छुटकारा मिल जाता हमको, जीवन के संताप से।।5।।
हम बड़ भागी हैं सचमुच में, ऐसा ऊँचा धर्म मिला,
हर पल, हर क्षण अपने मन में, शुभ भावों का चमन खिला।
जिनशासन की शान बढ़ेगी, अपने सद् व्यवहारों से,
रहे सुरक्षित धर्म हमारा, सच्चे पहरेदारों से।।6।।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

समाचार विविधा

आचार्यप्रवर का नदबई होते हुए भरतपुर पदार्पण

नदबई में आचार्य पद रजत साधना-दिवस पर 36 शीलव्रती बने

पल्लीवाल क्षेत्र में अब तक 425 शीलव्रती बन चुके हैं

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, शीलव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनिजी म.सा. आदि सन्तवृन्द का पल्लीवाल क्षेत्र के ग्राम-नगरों में प्रभावी विचरण चल रहा है। भीषण गर्मी में भी पूज्यप्रवर का विहार एवं धर्माराधन का क्रम निरन्तर बना हुआ है। जब कठूमर के श्रावकों ने अप्रेल माह में पूज्यप्रवर से पदार्पण हेतु विनति की तो पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आप लोग सामायिक करने का नियम लो तो नदबई सीधा नहीं जाकर कठूमर होते हुए जाने पर चिन्तन कर सकता हूँ। पूज्य आचार्यप्रवर की भावना सुनकर **कठूमर** वासी गद्‌गद् हो गये। कठूमर में धर्मस्थान नहीं है अतः गुरुदेव धर्मशाला में विराजे। यहाँ के पाँचों परिवारों के लगभग 35 भाई-बहिन प्रतिदिन सामायिक करने लगे हैं। गुरुदेव स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि जहाँ पर एक भाई भी सामायिक करने का नियम लेगा तो फेर (चक्कर) लगते हुए भी वहाँ पहुँचने का लक्ष्य रखता हूँ। सामायिक का शंखनाद हो, इस भावना से आगत दर्शनार्थी को पर्याप्त समय देकर आपश्री सामायिक की पाटियाँ एवं विधि सिखाने की भी कृपा कर रहे हैं।

पूज्य आचार्यप्रवर 2 मई को कठूमर से विहार कर मसारी पधारे। यहाँ दांतियाँ का संघ दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। 3 मई को कटारा होते हुए 4 मई को पूज्य प्रवर का **नदबई** की धरा पर मंगलमय पदार्पण हुआ। प्रवेश के समय नदबई का समूचा संघ अत्यधिक उल्लास के साथ जयनाद कर रहा था। प्रवचन में बालक-बालिका, युवावर्ग व भाई-बहन सभी सामायिक वेश में विराजे। 9 मई को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 25 वाँ चादर महोत्सव (आचार्य पदारोहण) तप-त्याग के साथ मनाया गया। (रिपोर्ट अलग से प्रकाशित है।) समूचे भारत में सामूहिक एकाशन तप साधना के रूप में मनाने का लक्ष्य था। अनेक स्थानों पर अच्छी संख्या में एकाशन व्रत हुए। **नदबई में 450 के लगभग एकाशनों का अर्घ्य अर्पित किया गया। एकाशन आराधना की शृंखला में पल्लीवाल व पोरवाल क्षेत्र में पृथक-पृथक 2500 के लगभग एकाशन हुए हैं।**

नदबई वालों ने **छत्तीस गुणों के धारक पूज्य आचार्यप्रवर के चादर महोत्सव पर छत्तीस शीलव्रत के खंध करवाकर, शीलव्रत की शृंखला में एक नवीन अध्याय जोड़ दिया।**

पूज्य आचार्य भगवन्त के 25 वें चादर महोत्सव पर रसीदपुर, महवा, मण्डावर, मौजपुर, हरसाना, लक्ष्मणगढ़, खेड़ली, दांतिया, पहरसर, खोह, अलवर, कठूमर, मोलोनी, डहरा, हिण्डौन, भरतपुर, गंगापुर, जयपुर, जोधपुर, जलगांव, चेन्नई आदि विविध क्षेत्रों से 800 के लगभग भाई-बहन अपनी श्रद्धा-भक्ति के अर्घ्य अर्पित करने पावन श्रीचरणों में उपस्थित हुए। नदबई संघ की आतिथ्य सत्कार भावना प्रमोदजन्य रही। सर्वश्री सुरेशचन्द जी बागपतिया, मुकेशजी जैन, महेश जी जैन, सतीशजी जैन, पंकज जी जैन, मनीष जी जैन, सचिन जी जैन, अमितजी जैन की सेवाएँ उल्लेखनीय रहीं।

पूज्य गुरुदेव ने 10 मई को सायं नदबई से विहार किया, जिसमें सभी श्रद्धालु भक्त श्री ज्ञान रत्न विद्यालय तक जयघोष के साथ सम्मिलित हुए। 11 मई को पूज्य श्री **खटोटी** पधारे। यहाँ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा-5 पूज्यश्री के दर्शनार्थ पधारे। 12 से 14 मई तक पहरसर विराजना हुआ। यहाँ भरतपुर संघ दर्शनार्थ व विनति लेकर पावन श्री चरणों में उपस्थित हुआ। 15 मई को वांसी एवं 16 मई को लुधावई पधारना हुआ, जहाँ हिण्डौन संघ सेवा में रहा। पूज्यप्रवर 17 मई को ग्राम सेवर पधारे। यहाँ संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत व भरतपुर जिला कलक्टर श्री रविजी जैन ने चरण सन्निधि का लाभ लिया।

18 मई को सेवर में स्थित जैन मंदिर में रात्रि साधना की तथा 19 मई को **बासनगेट, भरतपुर** में स्थित स्वाध्याय भवन में प्रमोदजन्य उपस्थिति में पूज्य गुरु भगवन्त का पावन पदार्पण हुआ। बालिका मण्डल व महिला मण्डल भिन्न-भिन्न गणवेश में थे। जयनिनाद के समवेत स्वर समूचे विहार मार्ग में गुंजायमान रहे। बासनगेट संघ का उत्साह देखते ही बनता था। प्रार्थना-प्रवचन के अतिरिक्त दोपहर समय भी अच्छी उपस्थिति रही। 21 मई को पूज्य आचार्य भगवन्त ने **सवाईमाधोपुर शहर के लिये व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास की स्वीकृति** साधु मर्यादा के समस्त आगारों के साथ फरमाई। 22 मई को जयपुर शिविर से ज्ञानार्थी भाई-बहिन, आध्यात्मिक शिक्षा समिति के समस्त पदाधिकारियों व अध्यापकों के साथ पूज्य गुरु भगवन्त की पावन सन्निधि में पधारे। पूज्य श्री ने ज्ञानार्थी भाई-बहिनों को संयमारूढ़ होने से पहले अपने क्षयोपशम व योग्यतानुसार ज्ञान-ध्यान में रत रहने, संस्कृत, प्राकृत, आगम अध्ययन व प्रवचन की शैली में सामर्थ्यानुसार पुरुषार्थ करने रूप कल्याणकारी प्रेरणाप्रद उद्‌बोधन

फरमाया। इसी दिन बैंगलोर, चेन्नई, जयपुर, जोधपुर से श्रद्धालुओं का आना हुआ। 24 मई को श्रावकों के प्रयास से **बासन गेट में पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से 53 शीलव्रत के खंध हुए।** शीलव्रत की शृंखला में गत मास मई में प्रकाशित हुई संख्या के अनन्तर विचरण विहार के दौरान अलीपुर से खेड़ली के मध्य मार्गस्थ गाँवों में 4, खेड़ली में 30, दारोदा में 5, कठूमर में 7, मसारी में 9, कटारा मार्ग में 5, नदबई मार्ग में 2, नदबई में 72, पहसर में 6, बांसी में 2, लुधावई में 7, सेवर ग्राम में 16, सेवर मंदिर में 4 व बासन गेट में कुल 66 खंध हुए। पल्लीवाल क्षेत्र के गंगापुर में प्रवेश-समय 14 जनवरी से लेकर अब तक 425 से अधिक शीलव्रत के खंध पूज्य आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से हो चुके हैं, जो पल्लीवाल क्षेत्र की श्रेष्ठ उपलब्धि है। बासन गेट संघ द्वारा समागतों का सुन्दर आतिथ्य सत्कार किया गया। राहुल जी जैन, जो विचरण विहार में पहरसर से बराबर सेवा दे रहें हैं, उन्होंने गुरु भगवन्त को तिक्खुत्तो के पाठ से 1008 बार उनकी दोनों बहिन व अन्य 2 बालिकाओं ने 108 बार विधिवत् वन्दना की। प्रवासकाल में श्री धर्मेन्द्र जी जैन संघाध्यक्ष, श्री प्रकाशजी जैन मंत्री, श्री राहुल जी जैन, श्री अशोक जी जैन आदि ने तत्परता से समयदान के साथ सेवा का लाभ लिया।

पूज्य आचार्यप्रवर 25 मई को बासनगेट से विहार फरमाकर **मौहल्ला गोपालगढ़** पधारे। विहार में श्रद्धालु भाई-बहनों ने भक्तिभाव से जयनिनाद कर मार्ग को गुंजायमान कर दिया। 26 मई को मंदिरमार्गी सम्प्रदाय से महासती श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्याएँ पूज्य गुरु भगवन्त के दर्शन लाभ लेने पधारीं। इन दिनों तापमान पराकाष्ठा पर है। फिर भी *प्रार्थना एवं प्रवचन का सभी श्रद्धालु* बराबर लाभ ले रहे हैं। श्री प्रेमचन्दजी जैन, श्री पारसचन्दजी जैन, श्री विनोदजी जैन, श्री बाबूलालजी जैन, श्री राजेन्द्र जी जैन, श्री वीरेशजी जैन, श्री राजूजी जैन, श्री अभयजी जैन, श्री मनीष जी जैन सेवा का विशेष लाभ ले रहे हैं। संघ द्वारा आगत दर्शनार्थियों की यथोचित सार संभाल व आतिथ्य सेवा का प्रमोद भाव से लाभ लिया जा रहा है।

उपाध्यायप्रवर का पावटा से घोड़ों का चौक पदार्पण

शासनप्रभाविकाजी पावटा सिद्धान्तशाला में

बड़ी दीक्षा के पश्चात् नवदीक्षित संत का नाम अविनाशमुनि रखा गया

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 के सान्निध्य में जोधपुर

नगर के श्रावक-श्राविका सतत लाभान्वित हो रहे हैं। 1 मई 2015 को पूज्य उपाध्यायप्रवर का 53 वां दीक्षा दिवस दया-संवर के साथ मनाया गया। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा., शासनप्रभाविका श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. आदि ने उपाध्यायप्रवर के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। लगभग 42 दया-संवर व्रत हुए।

2 मई को नवदीक्षित अविनाश जी की बड़ी दीक्षा पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में सम्पन्न हुई। **मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन एवं उसमें प्रतिपादित पाँच महाव्रत के पाठों की सुन्दर ढंग से विवेचना की। उपाध्यायप्रवर ने उनको पंच महाव्रतों में आरूढ़ किया। इस अवसर पर **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.** ने भी सम्बोधित किया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. से प्राप्त संकेत के अनुसार नवदीक्षित संत का नाम **अविनाश मुनि** रखा गया। श्री प्रसन्नचन्दजी पुनवानचन्दजी ओस्तवाल ने साधर्मी वात्सल्य का लाभ लिया। 3 मई को पाक्षिक पर्व पर विशेष धर्माराधना हुई।

9 मई 2015 को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आचार्य पद रजत वर्ष के शुभारम्भ पर जोधपुर में लगभग 825 एकाशन तप हुए, जिनमें 350 सामूहिक एकाशन पावटा स्थानक में स्वीकार किए गए। **महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.** ने पूज्य आचार्यप्रवर के आचार्यपद चादर महोत्सव के 25 वें वर्ष में प्रवेश पर भावपूर्ण प्रवचन फरमाया, जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार थीं- 'जिनके जीवन में शास्त्र स्वयं व्याख्या पा जाये, सिद्धान्त सत्य बनकर उभर आये, पूर्व-अपूर्व श्रुत सा नज़र आये, ज्ञान विज्ञान बनकर केवलज्ञान में समा जाये, वो होते हैं आचार्य।' **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** ने पूज्य आचार्यप्रवर के प्रति श्रद्धासिक्त वचनों से सभा को पूरित किया। **मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने पूज्य आचार्यप्रवर के विनय, समर्पण, सेवा आदि सद्गुणों का उल्लेख करने के साथ फरमाया कि आचार्यप्रवर स्वयं साधना डायरी भरते हैं, स्वयं अनुशासित हैं, आपके आचार्यकाल में संघ ने उल्लेखनीय प्रगति की है। उनके संघनायकत्व में यह संघ संरक्षित एवं संवर्द्धित हो रहा है। **श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.** ने भी पूज्य आचार्यप्रवर की आचारनिष्ठा एवं संघनिष्ठा की सराहना की। साधर्मी वात्सल्य का लाभ श्री हंसराजजी जैन एवं श्रीमती शान्ता जी लोढ़ा ने लिया। 11 मई को अष्टमी होने से दया-संवर व्रत की विशेष आराधना हुई। 13 मई को बदि दशमी के दिन गुरु भगवन्तों के मौन होने से **श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.** ने ही प्रवचन फरमाया। 17 मई को चतुर्दशी एवं पाक्षिक पर्व होने से उपवास, दया, संवर, एकाशन आदि की आराधना हुई।

पावटा से 28 मई को उपाध्याय प्रवर विहार कर हाईकोर्ट रोड़ स्थित अबानी हैण्डीक्राफ्ट पधारे। यहाँ से 29 मई को आपका संत मण्डल के साथ घोड़ों का चौक स्थानक में पदार्पण हुआ। जोधपुर में संतों की प्रेरणा से आचार्यपद रजत साधना वर्ष के उपलक्ष्य में लगभग 35 एकान्तर उपवास के वर्षीतप चल रहे हैं।

श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी का जयपुर में विचरण

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का जयपुर के विभिन्न उपनगरों में विचरण चल रहा है। 27 अप्रेल को आपका लाल भवन पदार्पण हुआ, जहाँ संवर, पौषध एवं धर्मध्यान का ठाट लग गया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. उत्तराध्ययन सूत्र के एक-एक अध्ययन पर प्रवचन फरमा रहे हैं। 9 मई 2015 को पूज्य आचार्यप्रवर के 25 वें चादर दिवस के अवसर पर लगभग 400 सामूहिक एकाशन के साथ 3-3 सामायिकों की आराधना की गई। अनेक प्रबुद्ध श्रावकों ने आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के जीवन एवं सद्गुणों का विवेचन किया। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने संयमी जीवन का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए दोनों महापुरुषों के जीवन से सीख ग्रहण करने की प्रेरणा की। सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. ने आचार्य भगवन्त एवं उपाध्यायप्रवर के जीवन जीने की कला पर धारा प्रवाह प्रकाश डाला। 10 मई को लाल भवन से विहार कर संत-मण्डल जवाहर नगर स्थित स्थानक पधारे हैं तथा यहाँ 6 जून तक लाभान्वित करने की सम्भावना है।

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 25 वाँ आचार्य पदारोहण दिवस देशभर में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया

जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के द्वारा आचार्य पद के रजत वर्ष में प्रवेश करने पर ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 9 मई 2015 का दिन सम्पूर्ण भारतवर्ष में उल्लास के साथ समुपस्थित हुआ। देश-विदेश में सामूहिक एकाशन तप की आराधना हुई। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा 2500 एकाशन का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, किन्तु मोटे तौर पर मिली सूचनाओं से ज्ञात होता है कि यह आंकड़ा कई गुणा होगा। नदबई, जोधपुर, जयपुर आदि विभिन्न स्थानों पर आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर, शासनप्रभाविकाजी एवं संत-सतियों की सन्निधि में यह गौरवशाली दिवस सामूहिक एकाशन, सामायिक-साधना एवं अनेकविध तप-त्याग के साथ मनाया गया। आचार्यप्रवर के सान्निध्य एवं उपाध्यायप्रवर के सान्निध्य का विवरण अलग से प्रकाशित है। यहाँ पर अन्य कतिपय स्थानों का विवरण दिया जा रहा हैं-

चेन्नई- पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का रजत आचार्य पदारोहण दिवस 9 मई 2015 को सी.यू. शाह भवन, पुरुषवाक्कम, चेन्नई में प्रातः 9 बजे से सामायिक एवं सामूहिक एकाशन दिवस के रूप में मनाया गया। श्राविका मण्डल की सदस्याओं ने मंगलाचरण किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु के अध्यक्ष श्री महेन्द्र जी कांकरिया ने स्वागत किया। संघ के सह-सचिव श्री नरेन्द्र जी कांकरिया ने सभा का संचालन करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के गुणों का निरूपण किया। इसी प्रसंग पर **'गुण सौरभ गणि हीरा'** पुस्तक पर आधारित प्रतियोगिता का शुभारम्भ श्री भंवरलालजी गोठी ने किया तथा पुस्तक की प्रतियाँ श्री कैलाशमल जी दुगड़, श्री गौतमचन्दजी कांकरिया, श्री पन्नालाल जी बाफना को भेंट की। आचार्यप्रवर के बाल्यकाल से वैराग्यकाल तक का श्री ज्ञानचन्दजी बाघमार ने, संयम अंगीकार से गुरु सन्निधि का वर्णन पूर्व मंत्री श्री उगमचन्द जी कांकरिया ने, आचार्य पदारोहण समारोह का संचालन श्री नरेन्द्र जी कांकरिया ने, अष्ट सम्पदा का श्री अमरचन्दजी छाजेड़ ने सजीव निरूपण किया। आचार्यप्रवर के सामायिक-स्वाध्याय अभियान का श्री रमेशजी जांगड़ा ने, व्यसन मुक्ति एवं सामूहिक रात्रिभोजन-त्याग अभियान का सुन्दर विवेचन श्री विनोदजी जैन ने किया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमलजी दुगड़, श्री जैन महासंघ चेन्नई के महामंत्री श्री गौतमचन्दजी कांकरिया, चेन्नई में स्थानकवासी परम्परा के वयोवृद्ध श्रावक श्री भंवरलाल जी गोठी, सुधर्म जैन संघ सुश्रावक श्री पन्नालाल जी बाफणा, एस.एस. जैन संघ, साहुकारपेट के मंत्री श्री गौतमजी लोढ़ा, प्राज्ञ जैन संघ दक्षिण जोन के अध्यक्ष श्री सुभाषचन्दजी छाजेड़, जयमल जैन संघ-तमिलनाडु के अध्यक्ष श्री पारसमल जी गादिया, मरुधर सेवा समिति से महावीरचन्दजी सिसोदिया ने गद्य-पद्य रूप में आचार्यश्री के गुणगान किये।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर से दक्षिण प्रान्त में वरीयता प्राप्त परीक्षार्थियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में आलन्दुर श्री संघ, पुरुषवाक्कम श्रीसंघ, सैदापेट संघ, साहुकारपेट संघ के अध्यक्ष, मन्त्री आदि की सराहनीय उपस्थिति रही।

इस अवसर पर मानसिक रूप से पीड़ितजनों की संस्था 'बाल विहार' के बालक-बालिकाओं को भोजन करवाया गया। इस समारोह को सफलतापूर्वक सम्पन्न करवाने में श्री सुगनचन्द जी बोथरा, श्री हरिशजी कांकरिया, श्री ललितजी बाघमार, श्री महेन्द्र जी बोहरा आदि का विशेष सहयोग रहा। *-आर. नरेन्द्र कांकरिया, सहसचिव*

सवाईमाधोपुर- आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 25 वाँ आचार्य पदारोहण

दिवस तप-त्याग-संवर एवं एकाशन दिवस के रूप में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में बजरिया सवाईमाधोपुर स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में 09 मई 2015 को मनाया गया। इस पावन अवसर पर आस्था के केन्द्र परम पूज्य आचार्य भगवन्त को श्रद्धा भक्ति एवं तप-त्याग का अर्घ्य अर्पित करने हेतु सवाईमाधोपुर शहर, आलनपुर, आवासन मण्डल, महावीर नगर, आदर्श नगर, कुण्डेरा, सूरवाल, कुस्तला, पचाला, चोरू, अलीगढ़, चौथ का बरवाड़ा, सुमेरगंज मण्डी, जरखोदा, कोटा आदि अनेक नगरों एवं ग्रामों से लगभग 600-700 की संख्या में श्रावक-श्राविका उपस्थित हुए। प्रवचन सभा में पधारने वाले अधिकांश श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन के प्रत्याख्यान किये। इसके अतिरिक्त उपवास, दया, संवर आदि के भी प्रत्याख्यान हुए। महासती जी की पावन प्रेरणा से सम्पूर्ण पोरवाल क्षेत्र में लगभग 2000-2500 एकाशन तप की आराधना हुई एवं अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने रजत साधना वर्ष में उपवास, आयम्बिल, एकाशन, नींवी आदि की तपाराधना यथाशक्ति करने के नियम ग्रहण किये। इस अवसर पर महासती श्री ऋद्धि प्रभाजी म.सा., महासती श्री वृद्धि प्रभाजी म.सा., महासती श्री विमलावती जी म.सा. ने आचार्य भगवन्त के संयममय जीवन पर प्रकाश डाला। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए फरमाया कि चादर महोत्सव पर पूज्य आचार्य भगवन्त ने चतुर्विध संघ को मूक संदेश देते हुए अपने अमृत वचनों में फरमाया था-**जिस प्रकार चादर का एक-एक तार अविच्छिन्न रूप से बंधा हुआ है उसी प्रकार संघ का प्रत्येक सदस्य श्रद्धा, समर्पण व अनुशासन के एक सूत्र में बंधा रहे। यही मेरी मंगल मनीषा है।**

विशिष्ट श्रावक श्री सौभाग्यमल जी जैन कुस्तला एवं स्वाध्यायी श्री बाबूलालजी जैन ने गीतिका के माध्यम से आचार्य भगवन्त के गुणगान किये। स्वाध्याय संघ के राष्ट्रीय संयोजक श्री कुशलचन्दजी गोटेवाला ने आचार्य हीरा गुण सौरभ प्रश्न-प्रतियोगिता की जानकारी दी। *-नरेन्द्र मोहन जैन, मंत्री*

पाली- पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आचार्य पदारोहण रजत वर्ष के शुभारम्भ के अवसर पर संघ की ओर से कम से कम तीन सामायिक करने का आह्वान किया गया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने 5-5 सामायिकें भी की। लगभग 70 भाई-बहनों ने भोजनशाला में तथा कुछ लोगों ने अपने घर पर एकाशन किए। समरथ गच्छाधिपति श्रद्धेय श्री उत्तमचन्दजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी **महासती श्री चन्द्रयशाजी म.सा.** आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के गुणानुवाद किए गए। महासती श्री नम्रताजी म.सा. ने कहा कि जिस बीज को अच्छा खाद-पानी मिलता है वह अवश्य

पल्लवित होकर वटवृक्ष बनकर अपनी शीतल छाया प्रदान करता है। पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. से शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर मुनि हीरा महान् आचार्य के रूप में चमक रहे हैं तथा वटवृक्ष के रूप में आध्यात्मिक छाया प्रदान कर रहे हैं। सुश्रावक श्री मांगीलाल जी चौपड़ा, श्री पारसमल जी चौपड़ा, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुभद्रा जी धारीवाल, श्री प्रेमचन्दजी ढेडिया एवं श्री घीसूलाल जी सुराणा ने आचार्यप्रवर का गुणानुवाद किया। सभा का संचालन सहमंत्री श्री चैनराजजी मेहता ने किया। *-रूपकुमार चौपड़ा*

भोपालगढ़- आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आचार्यपद के 25 वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में 25 एकाशन एवं 7 उपवास सम्पन्न हुए। *-प्रसन्नचन्द ओस्तवाल*

अलीगढ़-रामपुरा- परमपूज्य गुरुदेव 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 77 वाँ जन्मदिवस एकाशन दिवस के रूप में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। श्राविका मण्डल द्वारा दो-दो सामायिक एवं प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संस्कार केन्द्र के अन्तर्गत 'गुरु हीरा गुणगान' कार्यक्रम रखा गया। आचार्यपद रजत वर्ष के शुभारम्भ पर भी सामूहिक एकाशन तप सम्पन्न हुए। *-रिंकी जैन*

आचार्य हस्ती का 24 वाँ पुण्यस्मृति दिवस तप-त्यागपूर्वक मनाया गया

अध्यात्मयोगी युगमनीषी परम आराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 24 वाँ पुण्यस्मृति दिवस वैशाख शुक्ला अष्टमी, 26 अप्रेल 2015 को सम्पूर्ण देश में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। कतिपय स्थानों के समाचार प्रकाशित हैं-

शान्तिनगर (बैंगलोर)- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बेंगलूरु एवं श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शान्तिनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में श्रीमती भीखी बाई पूनमचन्द जी लुणावत जैन स्थानक भवन के प्रांगण में सामायिक स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. का 24 वां पावन स्मृति-दिवस सामूहिक सामायिक-साधना के साथ अपार श्रद्धाभक्ति से मनाया गया। वरिष्ठ स्वाध्यायी सुश्रावक श्री शान्तिलाल जी डुंगरवाल ने गुरु महिमा एवं आचार्य श्री हस्ती के जीवन की विशेषताओं को विवेचित किया। पत्रकार गुरुभक्त स्वाध्यायी श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने गुरु हस्ती के अनेक प्रभावी संस्मरण प्रस्तुत करते हुए, उनके बहु आयामी व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। रत्नसंघ के मंत्री श्री निर्मलजी बम्ब ने आभार प्रकट कर शान्तिनगर संघ को धन्यवाद दिया तथा जैन संकल्प श्री राजेन्द्रकुमार जी चोरड़िया (कर्नाटक क्षेत्रीय प्रधान) ने कराया। सभा का संचालन शान्तिनगर संघाध्यक्ष श्री महावीरचन्दजी मुथा ने बखूबी

किया। इस अवसर पर श्री भोपालचन्दजी पगारिया, श्री यशवंतराजजी सांखला, श्री छगनमलजी लुणावत, श्री शान्तिलालजी लोढ़ा, श्री राजेन्द्राजजी कर्णावट, श्री हुक्मीचन्दजी डोसी, श्रीमती प्रमिलाजी भण्डारी, श्रीमती मंजू जी भण्डारी, श्रीमती सुशीला जी भण्डारी सहित अनेक श्रावक-श्राविकाएँ, रत्न महिला मण्डल, रत्न युवक परिषद् व शान्तिनगर संघ के सदस्यगण उपस्थित थे। *-गौतमचन्द ओस्तवाल*

भोपाल- पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 24 वाँ पुण्यस्मृति दिवस प्रार्थना एवं जाप के साथ 26 अप्रेल 2015 को श्रद्धा भक्तिपूर्वक मनाया गया। भोपाल के वरिष्ठ श्रावक श्री फतेहचन्द जी बाफना ने पूज्यश्री के गुणों को जीवन में धारण करने का आह्वान किया। श्री प्रताप सिंह जी डागा ने आचार्य श्री के स्वाध्याय-सामायिक अभियान पर अपने भाव व्यक्त किए। श्री मानसिंह जी डागा ने भजन की कड़ियों से गुरुदेव का गुणगान किया। *-शांता नाहर*

अजमेर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा स्वाध्याय भवन, पुष्कर रोड़ में पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का 24 वाँ पुण्यस्मृति दिवस 26 अप्रेल 2015 को सामूहिक सामायिक के साथ मनाया गया। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. ने पूज्य आचार्य श्री हस्ती के जीवन एवं उनके सद्गुणों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में श्री चन्द्रप्रकाशजी गाँधी, श्री राजेन्द्र जी रांका, कल्पनाजी कटारिया, मेघाजी कोठारी, मास्टर यश कोठारी ने भजनों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक-साधना की।

पाली- वैशाख शुक्ला तृतीया 21 अप्रेल एवं वैशाख शुक्ला अष्टमी 26 अप्रेल 2015 को आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का क्रमशः 86 वाँ आचार्य पद एवं 24 वाँ पुण्यस्मृति दिवस, धर्म-ध्यान, त्याग-तप, उपवास-पौषध एवं दया संवर के साथ मनाया गया। अनेक भाई-बहनों ने स्थानक में आकर तीन से लेकर पाँच सामायिकें की। वृद्धाश्रम, कुष्ठाश्रम एवं अंधता निवारण केन्द्र के प्रवासियों को मीठा भोजन कराया गया।

अक्षय तृतीया पर खेरली (जिला-अलवर) में वर्षीतप पारणक करने वाले तपस्वियों की सूची

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में अक्षय-तृतीया का पावन पर्व तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। इस दिन अनेक तपस्वियों ने पारणक किया, जिसकी सूची इस प्रकार है- 1. श्रीमती चन्द्रकलाजी पदमचन्दजी जैन-उनियारा (टोंक), 2. श्रीमती रेणूजी सम्पतराजजी ललवाणी-बैंगलुरु, 3. श्रीमती इन्द्रादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री महावीरप्रसादजी जैन-सवाईमाधोपुर, 4. श्रीमती राजेशबाईजी जैन-सवाईमाधोपुर, 5. श्रीमती कमलादेवीजी

बाबूलालजी जैन-सवाईमाधोपुर, 6. श्री प्रकाशचन्दजी जैन-अजमेर, 7. श्रीमती उर्मिलादेवीजी प्रकाशचन्दजी जैन-अजमेर, 8. श्रीमती विमलाजी कस्तूरचन्दजी जैन-खेरली, 9. श्रीमती कंचनजी जैन-इन्द्रगढ़, 10. श्रीमती कमलाजी जैन-इन्द्रगढ़, 11. श्रीमती किरणजी कोठारी-जयपुर, 12. श्रीमती हेमलताजी महावीर प्रसादजी जैन-बाबई, 13. श्रीमती मायादेवीजी नेमीचन्दजी जैन-जयपुर, 14. श्रीमती प्रेमलताजी ओमप्रकाशजी जैन-भरतपुर, 15. श्रीमती उषाजी सुरेशचन्दजी जैन-भरतपुर, 16. श्रीमती चंचलबाईजी भेरुलालजी जैन-चौथ का बरवाड़ा, 17. श्रीमती कमलाबाईजी चौथमलजी जैन-अलीगढ़-रामपुरा, 18. श्रीमती प्रेमबाईजी माणकचन्दजी जैन (लहसोड़ा वाले)-कोटा छावनी, 19.श्री देवीसहायजी बागपतिया-नदबई, 20. श्रीमती माधुरीजी जिनेन्द्रजी जैन-आगरा, 21. श्रीमती पुष्पाजी भण्डारी, 22. श्रीमती निर्मलाजी चाँदमलजी जैन-जयपुर, 23. श्रीमती कमलाबाईजी-ब्यावर, 24. श्री अशोकजी-ब्यावर, 25. श्री गौतमजी बागमार-ब्यावर, 26. श्रीमती सुनीताजी बागमार-ब्यावर, 27. श्रीमती चांदबाई जी श्रीश्रीमाल-ब्यावर, 28. श्री निर्मलजी जैन-हिण्डौन (निरन्तर तप)।

बनें आगम अध्येता (5)

उत्तराध्ययन सूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

श्रावक-श्राविकाएँ सुज्ञ एवं तत्त्वज्ञ बनें, इस हेतु आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की सदैव प्रेरणा रहती है। अतः अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आगम अध्येता श्रावक-श्राविकाएँ तैयार करने हेतु ''बनें आगम अध्येता'' अनुष्ठान प्रारम्भ किया गया है, जिसके अन्तर्गत दशवैकालिकसूत्र, उपासकदशांगसूत्र, नन्दीसूत्र, अन्तगडसूत्र की परीक्षाएँ आयोजित हो चुकी हैं। अब परीक्षार्थ पाँचवें आगम के रूप में 'उत्तराध्ययनसूत्र' के स्वाध्याय को लिया गया है। 13 अप्रेल 2015 से यह प्रतियोगिता प्रारम्भ हो चुकी है, जो तीन चरणों में पूर्ण होगी। प्रत्येक चरण में 12-12 अध्ययनों में से प्रश्न लिये जायेंगे। प्रथम भाग का मूल्यांकन प्रश्नपत्र पूर्ण कर भिजवाने की अन्तिम तिथि 30 जून, 2015 रखी गई है। उत्तराध्ययनसूत्र (12 अध्ययन) की मुख्य समापक परीक्षा 02 अगस्त 2015 को पूर्व की भांति मध्याह्न 12 से 3 बजे सभी केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी। **सम्पर्क सूत्र-** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2575997, 2570753, **श्राविका-मण्डल अध्यक्ष-**श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, जयपुर-098290-19396, **महासचिव-** श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625

-बीना मेहता, महासचिव

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा 12 जुलाई को

शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 12 जुलाई 2015 को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी। इच्छुक भाई-बहिनों से अनुरोध है कि स्वयं बोर्ड की परीक्षा में भाग लें तथा अन्य को भी प्रेरित करें। आवेदन पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि 20 जून 2015 है। कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है। परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं। सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। परीक्षार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती तीनों भाषाओं में प्रकाशित हैं। परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती इन तीनों में से किसी भी भाषा में लिखे जा सकते हैं। जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा) परीक्षा 10 जनवरी-2016 को आयोजित की जायेगी। परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन पत्र एवं पाठ्य पुस्तकें तथा अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- सुरेश बी. चोरड़िया, संयोजक-94440-28841, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490, 2622623, फैक्स-2636763, Website:jainratnaboard. com, E-mail:shikshanboardjodhpur@gmail.com, info@jainratnaboard.com

- नवरतन गिड़िया, सचिव

रात्रिभोजन-त्याग के प्रति चेन्नई संघ के सत्प्रयास

आचार्य भगवन्त 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. मात्र एक साधक ही नहीं, अपितु संघ समाज को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करने वाले महापुरुष हैं। इसलिये आपश्री अपने प्रवचनों में रात्रिभोजन त्याग का प्रभावपूर्ण विवेचन करते हैं। आपकी प्रेरणा पाकर अनेक श्रावक-श्राविका अपने आत्मबल व दृढ़ता का परिचय देते हुए अपने यहाँ होने वाले सामूहिक भोज रात्रि में आयोजित नहीं करने का संकल्प ले चुके हैं और ले रहे हैं।

आचार्य भगवन्त की प्रभावी प्रेरणा को क्रियान्वित करने हेतु श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के अध्यक्ष, मंत्री एवं पदाधिकारीगण विशेष रूप से प्रयासरत हैं। जिनके यहाँ सामूहिक भोज रात्रि में आयोजित होता है, संघ के अध्यक्ष वहाँ भोजन नहीं करते हैं। संघ के मंत्री ने अपने यहाँ आयोजित सामूहिक भोज दिन में रखे। आचार्य श्री की असीम कृपा एवं संघ के विशेष प्रयासों के परिणामस्वरूप संघ के अनेक गुरु भ्राताओं ने अपने यहाँ आयोजित सामूहिक भोज दिन में रखे। ऐसे गुरु भ्राताओं का सम्मान-सत्कार अभिनन्दन पत्र, माल्यार्पण एवं शाल्यार्पण के द्वारा किया जा रहा है। अभी श्री पारसमलजी

नरेन्द्रकुमारजी कोठारी, श्री दलीचन्दजी अशोककुमारजी कवाड़ एवं श्री बुधमल जी बोहरा का सम्मान किया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु का भारतवर्ष के समस्त श्री संघों से निवेदन है कि वे भी इस सत्कार-सम्मान अभिनन्दन की परम्परा का अपने-अपने संघों में शुभारम्भ करावें। *-आर. नरेन्द्र कांकरिया, सहमंत्री*

'गुणसौरभ गणिहीरा' पुस्तक पर प्रतियोगिता

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, रात्रिभोजन-त्याग, आजीवन शीलव्रत, व्यसनमुक्ति एवं समाज सुधार के प्रबल प्रेरक, सामायिक-स्वाध्याय के सम्प्रेरक जिनशासन गौरव आचार्य भगवन्त 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के **आचार्य पदारोहण रजत वर्ष** के अवसर पर **'गुणसौरभ गणिहीरा'** खुली पुस्तक प्रतियोगिता का आयोजन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु द्वारा 9 मई 2015 से प्रारम्भ किया गया है।

प्रथम पुरस्कार-एक(गणि हीरा जन्म पदक रुपये 77000/)

द्वितीय पुरस्कार-एक (गणि हीरा संयम पदक रुपये 52000/-)

तृतीय पुरस्कार-एक (गणि हीरा रजत पदक रुपये 25000/-)

गुण सौरभ पुरस्कार (77)- 1000/-रुपये प्रत्येक एवं प्रतियोगिता में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक प्रतियोगी को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा। प्रतियोगियों के लिए 'गुण सौरभ गणि हीरा' साधनामय कृति की राशि 50 रुपये मात्र, प्रश्न पुस्तिका की राशि 25 रुपये मात्र तथा दोनों को डाक द्वारा मंगवाने पर राशि 100 रुपये रखी गई है।

प्रश्न पुस्तिका वितरण तिथि- आचार्य पदारोहण दिवस तिथि वि.सं. 2072 ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी, 09 मई, 2015 से 20 सितम्बर 2015 तक।

उत्तर पुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि- वि.सं. 2072, कार्तिक शुक्ला षष्ठी, 17 नवम्बर 2015 तक (आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 53 वाँ दीक्षा दिवस)

परिणाम व पुरस्कार वितरण की तिथि- वि.सं. 2072 चैत्र कृष्णा अष्टमी, 01 अप्रेल 2016 (आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 78 वाँ जन्मदिवस)।

गुण सौरभ गणि हीरा पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका के प्राप्ति-स्थल तथा सम्पर्क सूत्र- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, स्वाध्याय भवन, 24/25, बेसिन वॉटर वर्क्स स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु), मोबाइल नं.-97109-99990, 98411-48948

चेन्नई क्षेत्र- 1. श्री सुरेश जी हिंगड़-94448-52330, 2. श्री विनोदजी जैन-94447-

34394, 3. श्री आर. नरेन्द्रजी कांकरिया-98411-48948, 4. श्री दुलीचन्द जी नाहर-72000-99000, 5. श्री दिनेश जी सुराणा-72009-36070, 6. श्री राजेश जी बोथरा-94440-08284, 7. श्रीमती संगीताजी बोहरा-94443-72714, 8. श्रीमती इन्द्राजी बोहरा-91768-06000, 9. श्रीमती विनीताजी सुराणा- 91503-05494

पल्लीवाल क्षेत्र- 1. हिण्डौन सिटी- श्री राजेश जी जैन-95290-83690, **2. नदबई-** श्री नरेशजी जैन-94609-12255, **3. गंगापुर-** श्री महावीरजी जैन-8740828435, **4. भरतपुर-** श्री धर्मेन्द्रजी जैन-94140-23534, **5. खेरली-** मनीष जी जैन-94148-54310

पोरवाल क्षेत्र- श्री मुकेश जी जैन-94142-04721, श्री कुशल जी गोटेवाला-94140-31360, **1. बजरिया-** पदमजी जैन-94131-54351, **2. सवाईमाधोपुर-** श्री मुकेश जी जैन-98871-07248, **3. सुमेरगंजमण्डी/इन्द्रगढ़-** श्री राकेश जी जैन-94138-60198, **4. अलीगढ़-रामपुरा-** श्री कमलेश जी जैन-92528-77990, **5. आलनपुर-** श्रीमती मोहनीदेवीजी जैन- 94601-52614, **6. चौथ का बरवाड़ा-** श्री महेन्द्रजी जैन-99284-20975, **7. आवासन मण्डल-** श्री रविन्द्रजी जैन-94134-01835, **8. कोटा-** श्री अभय जी जैन-98291-61231, सुश्री विधिजी कोठारी-94619-16309

मारवाड़/मेवाड़ क्षेत्र- 1. जोधपुर- श्रीमती बीनाजी मेहता-97727-93625, **2. जयपुर-** श्रीमती उर्मिला जी बोथरा-93145-01856, श्रीमती जयाजी गोखरू-94149-25501, श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-98290-19396, **3. मेड़ता-** श्री हस्तीमल जी डोसी-94133-68997, **4. पीपाड़-** श्रीमती पुष्पाजी मेहता-94616-47464, **5. बालोतरा-** श्री धर्मेश जी चौपड़ा-94141-08191, **6. भीलवाड़ा-** श्री कन्हैयालालजी जैन-87644-09328, **7. ब्यावर-** श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा-94603-08388, **8. मदनगंज-** श्री राजेन्द्रजी डांगी-94140-12286, 98871-80586, **9. गुलाबपुरा-** श्रीमती सरिताजी डोसी-98750-51667

गुजरात क्षेत्र- 1. अहमदाबाद- श्री पदमचन्दजी कोठारी-94293-03088, **2. सूरत-** श्री राजीव जी नाहर-93751-65765

दिल्ली क्षेत्र- श्रीमती कनकजी बडेर-98681-50330

महाराष्ट्र क्षेत्र- 1. जलगांव- श्री मनोजजी संचेती-94225-91423, **2. धुलिया-** सौ. विमला कांतिलालजी चौधरी-98231-72765, **3. वैजापुर-** श्रीमती ललिताजी

बोहरा-94222-03962, **4. अमरावती-** श्री अमृतलालजी मुथा-94221-57974, **5. नासिक-** श्रीमती मधुबाला जी ओस्तवाल-94225-10571, श्री बुधमल जी बोहरा- 94239-28858, **6. औरंगाबाद-** श्रीमती पुष्पा ताराचन्दजी बाफणा-90114-94566, **7. जालना-** श्री सुभाषजी संखलेचा-94222-15733, **8. पुना-** श्रीमती सुशीलाजी रूणवाल-87933-16045, **9. नागपुर-** श्रीमती ललिताजी बाफणा-94221-46230, **10. इचलकरंजी-** श्रीमती मीनाजी नाहर-94203-38257, **11. कोल्हापुर-** श्रीमती दीनाजी वासा- 97644-40040, 0231-2526099, **मुम्बई मीरा रोड़-**श्री जितेन्द्र जी कांकरिया-98214-62562, **जोगेश्वरी-मुम्बई-** श्रीमती हेमलताजी सांखला-99200-57718, **जामखेड़-** श्रीमती शिल्पाजी खेरोदिया-83810-92600

मध्यप्रदेश क्षेत्र- 1. करही- श्रीमती शीतलजी छाजेड़-97706-14536, **2. इन्दौर-** श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा-98275-28331, **3. जबलपुर-** श्रीमती निर्मलाजी चौपड़ा-93033-18877, **4. कानपुर-** श्री मनमोहनचन्दजी बाफणा-95989-89900, **5. भोपाल-** श्री संजयजी नाहर-94244-10955

कर्नाटक क्षेत्र- 1. बैंगलोर- श्री प्रसन्नचन्दजी बाघमार-98806-65551, **2. रायचूर-** श्री ज्ञानचन्दजी भण्डारी-90195-55670, **3. बल्लारी-** श्री पारसमलजी बोथरा-94481-94748

आन्ध्रप्रदेश क्षेत्र- 1. हैदराबाद- श्रीमती पदमाजी गुगलिया-95539-01195, श्री पारसमलजी डोसी-98490-17041, श्रीमती इन्द्राजी बाघमार-98494-20043

कलकत्ता क्षेत्र- श्रीमती मंजूजी भण्डारी-98312-54044

पोण्डिचेरी क्षेत्र- श्री जम्बूजी देशरला-94432-34128

तमिलनाडु क्षेत्र- 1. कोयम्बतूर- श्री उपेन्द्रजी बाघमार-90946-43355, श्री मोहनलालजी धारीवाल-97876-16002, **2. सेलम-** श्रीमती किरण जी रांका-98428-98760, श्री महेन्द्र जी बाबेल-94432-44357, **3. ईरोड़-** श्री महेन्द्र जी बाफणा-94430-29795, **4. विल्लीपुरम्-** श्री नवीनजी बोहरा-99428-90502, **5. तिरूकोईलूर-** श्रीमती सरोजजी बोहरा- 77080-45622, **6. कांजीवरम्-** श्रीमती रीनाजी बड़ोला-96888-67070

पंजाब क्षेत्र- 1. होशियारपुर- श्रीमती किरणजी जैन-94631-18600, **2. चण्डीगढ़-** श्रीमती अंजुजी सतीशजी जैन-98153-96814

उत्तरप्रदेश क्षेत्र- 1. बलरामपुर- श्री प्रसन्नचन्दजी मुथा-94509-49852, **2. आगरा-** श्रीमती माधुरीजी जैन-85330-19399, **3. बनारस-** श्री हर्षदकुमारजी जैन-97218-88878

प्रश्नों से सम्बन्धित अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- 1. श्री विनोदजी जैन-094447-34394, 2. श्री सुरेशकुमारजी हिंगड़-094448-52330, 3. श्री नरेन्द्र जी कांकरिया-098411-48948, 4. श्रीमती मनीषाजी कांकरिया-091500-42434

-महेन्द्रकुमार कांकरिया, अध्यक्ष-97109-99990, आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रतियोगिता संयोजक-98411-48948, सुधीर कुमार सुराणा, मंत्री-91506-40000

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2015 का प्रकाशन

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी समग्र जैन सम्प्रदायों (श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर) के चातुर्मास की सूची का प्रकाशन किया जा रहा है। आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन पूज्य जैन गच्छ नायक आचार्यों, साधु-साध्वियों के 2015 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी संत-सतियों के चातुर्मास की जानकारियाँ शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें, ताकि चातुर्मास प्रारम्भ होने तक इनका प्रकाशन हो सके। चातुर्मास की जानकारियाँ ई-मेल से भी प्रेषित कर सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र-** बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल' संपादक, 105, तिरुपती अपार्टमेंन्ट्स, आकुर्ली क्रॉस रोड़ नं.1, रेलवे स्टेशन के सामने, कांदिवली(पूर्व), मुम्बई-400101(महा.), टेलीफैक्स-022-28871278, मोबाइल-093245-21278, E-mail:ujjwalprakashan@gmail.com

प्राकृत के पाठ्यक्रम जारी रखने हेतु करें अपील

श्री वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के द्वारा प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेशार्थियों की कमी को देखते हुए विश्वविद्यालय की एकेडेमिक कॉउन्सिल ने इन पाठ्य क्रमों को बंद करने की सिफारिश की है। प्राकृत में रुचि रखने वाले स्वाध्यायियों एवं श्रावक-श्राविकाओं से निवेदन है कि वे कुल सचिव, श्री वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा (राजस्थान) के नाम पर एक पत्र अवश्य लिखें कि इन पाठ्यक्रमों को बंद न किया जाए, वे इन पाठ्यक्रमों का लाभ लेने को तत्पर हैं।

संक्षिप्त-समाचार

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी

बालक-बालिकाओं का ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण शिविर 17 मई 2015 से 07 जून 2015 तक जयपुर के 10 विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया जा रहा है।

जोधपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में इक्कीसवां धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर 21 मई 2015 से 07 जून 2015 तक आयोजित हो रहा है। इस शिविर को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ग के अन्तर्गत 8 वर्ष से कम आयु वाले बच्चों को शिशु शिविरार्थी के रूप में जोधपुर के 11 केन्द्रों में ज्ञानार्जन के साथ ही संस्कारित भी किया जा रहा है, जिसमें 400 शिविरार्थी भाग ले रहे हैं। द्वितीय वर्ग में 8 वर्ष से अधिक आयु वाले बालक-बालिकाओं का शिविर केन्द्रीय स्तर पर एक ही स्थान महावीर पब्लिक स्कूल, अजित कॉलोनी में संचालित किया जा रहा है, जिसमें 350 बालक-बालिकाएँ भाग लेकर विद्वान् प्रशिक्षकों के माध्यम से ज्ञानार्जन कर रहे हैं। -*कौशल बोथरा, कार्याध्यक्ष*

मुम्बई- U-TURN शिविर का आयोजन मुम्बई से करीब 50 किमी दूर, नाकोड़ा धाम में 01 से 03 मई 2015 को आयोजित किया गया। इसमें 16 से 30 वर्ष तक के 55 युवाओं ने भाग लिया। शिविर में 'भ्रम से जागृति', 'धर्म को जीवन में कैसे उतारें?' जैसे विविध विषयों का आज की आवश्यकतानुसार वैज्ञानिक तरीकों से विवेचन किया गया। शिविर में श्रीमती सुमनजी कोठारी, सुश्री नेहा जी चोरड़िया, श्री संतोष जी रांका, श्री हर्ष जी गड़ा, श्री नमनजी, श्री निपुण जी डागा, श्री जय जी पुंगलिया एवं महक जी कोठारी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

जोधपुर- श्री कुशल जैन छात्रावास, 30, पोलो प्रथम, पावटा, जोधपुर में वर्ष 2015 के लिए प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। उच्च कक्षाओं में प्रवेशार्थी जैन छात्र शीघ्र सम्पर्क करें- भागचन्द कांकरिया-098290-27379

लासलगाँव- श्री महावीर जैन विद्यालय के वसतीगृह (छात्रावास) में 15 जून 2015 से कक्षा 5 से 12 वीं साइन्स, आर्टस् व कॉमर्स (उच्च माध्यमिक) तक छात्रों को और आई.टी.आई के लिए इलेक्ट्रिशियन व फिटर ट्रेड में छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। होनहार और आर्थिक स्थिति से कमजोर छात्रों को संस्था की ओर से सहयोग किया जाएगा। **सम्पर्क-** श्री महावीर जैन विद्यालय, महावीर नगर, कॉलेज रोड़, लासलगाँव-422306, ता. निफाड़, जिला-नाशिक (महा.), फोनः 02550-266358

पूना- आचार्यप्रवर श्री रामलालजी म.सा. के पावन मुखारविन्द से 26 अप्रेल 2015 को श्री सायरचन्दजी छल्लाणी-दिल्ली, श्री जयजी बोहरा-अक्कलकुआ, सुश्री सुरभि जी भूरा-जदिया, सुश्री सलोनीजी चोरडिया-इच्छापुर, सुश्री सोनलजी गोलेछा-ईरोड़ की जैन

भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। एक दिन पूर्व 25 अप्रेल की शाम 4.30 बजे सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी, दानवीर, अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री सायरचन्दजी छल्लाणी-नई दिल्ली ने दीक्षा की भावना व्यक्त की एवं दूसरे दिन दीक्षा ग्रहण कर ली। श्री छल्लाणी शास्त्रों एवं थोकड़ों के विशेष जानकार हैं तथा श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ के छात्र रहे हैं।

नई दिल्ली- ज्ञानोदय चेरिटेबल सोसायटी, नई दिल्ली जैन बच्चों के लिये सैकेण्डरी स्कूल तक शिक्षा जारी रखने हेतु आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान करती है। आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर लिखें- GYANODAY CHARITABLE SOCIETY (Regd. No. 40191/2001) 572, Asiad Village, New Delhi-110049, Ph. 011-26493538, 26492386, 09811449431

जोधपुर- श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी द्वारा श्रीमती कृष्णाजी धनपतराजजी मुणोत के सौजन्य से 19 जुलाई 2015 को परामर्श जाँच शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर प्रातः 9 से 1 बजे तक रखा गया है। इच्छुक मरीज अपना पंजीयन 18 जुलाई, 2015 से पूर्व करवा लेवें। शिविर में मधुमेह, ई.सी.जी. एवं रक्त की जाँच सुविधाएँ लागत मूल्य पर उपलब्ध रहेगी। शिविर में जोधपुर के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. राम गोयल-सर्जन, अहमदाबाद से डॉ. नवीन डी. खिमेसरा-फिजिशियन एवं डायबिटोलोजिस्ट, डॉ. सौरभ गोयल-जॉइन्ट रिप्लेसमेन्ट सर्जन, डॉ. हितेश शाह-कार्डियोलोजिस्ट एवं डॉ. प्रकाश चौधरी-यूरोलोजिस्ट की सेवाएँ प्राप्त होंगी। सम्पर्क सूत्र- श्री वर्द्धमान हॉस्पिटल, फोन नं. 0291-2627283 *-श्री पूरणराज अबानी, अध्यक्ष-093147-10985*

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान, भोपालगढ़ द्वारा विधालय परिसर में धार्मिक एवं संस्कार निर्माण शिविर 18 मई 2015 से प्रारम्भ हुआ है जो सात दिनों तक संचालित होगा। लगभग 65 शिविरार्थी संस्कार निर्माण का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। शिविर में अजैन छात्र-छात्राएँ भी ज्ञानार्जन का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। शिविर का संचालन वरिष्ठ स्वाध्यायी श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती कंचन जी मेहता कर रही है। *-प्रसन्नचन्द ओस्तवाल*

लाडनूँ- जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूँ में एम.ए., एम.फिल, पी-एच्.डी आदि के अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। एम.ए., एम. फिल में प्रवेश लेने विद्यार्थियों को क्रमशः 2000 एवं 2500 रुपये प्रतिमाह छात्रवृत्ति प्रदान करने की सुविधा है। नेट/जे.आर.एफ. स्लेट आदि परीक्षाओं हेतु कोचिंग की निःशुल्क व्यवस्था है। छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध है। **सम्पर्क सूत्रः-** प्रो. समणी चैतन्य प्रज्ञा, विभागाध्यक्ष, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, फोनः- 01581-226110, 224332, मोबाइल नं.

9413142180, Website-www.jvbi.ad.in, E-mail-office@jvbi.ad.in, cpragyal108@gmail.com, ykjain99@gmail.com

बधाई

मुम्बई- श्री आलोक कुम्भट सुपुत्र श्रीमती सरलाजी-श्री सुरेन्द्रमलजी कुम्भट एवं सुपौत्र स्व. श्री विजयमलजी कुम्भट ने एक्जीक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मैनेजमेन्ट आई. आई. एम., कोजिक्कोड से अच्छे अंकों में उत्तीर्ण किया है। इसके पूर्व सी.ए. तथा कम्पनी सेक्रेटरी की परीक्षाएँ भी अच्छे अंकों में उत्तीर्ण कर चुके हैं।

जोधपुर- स्नेहा जैन ने राष्ट्रीय मास्टर्स एथलेटिक्स में तीन स्वर्ण पदक जीते। धर्मशाला में हुई इस प्रतियोगिता में स्नेहा जैन ने 100 मीटर रेस, लम्बीकूद और त्रिकूद में स्वर्ण पदक हासिल किए। वे जून में मलेशिया और सितम्बर में फ्रांस में होने वाली विश्व मीट में भाग लेंगी।

जोधपुर- 36वीं राष्ट्रीय मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में सुश्री मोनिका जैन ने 400 मीटर दौड़ में रजत पदक प्राप्त किया। सुश्री मोनिका द्वारा वर्तमान में निःशुल्क चिकित्सा एवं योग प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

जोधपुर- श्री रोहित चौपड़ा सुपुत्र श्री दिनेशजी चौपड़ा ने सी.बी.एस.इ. की सी. सैकण्डरी परीक्षा (वाणिज्य) 90 प्रतिशत अंकों से (ए-1 ग्रेड) उत्तीर्ण की है।

सवाईमाधोपुर- श्री मुकुल जैन सुपुत्र श्री इन्द्रकुमारजी जैन ने राजस्थान बोर्ड की उच्च माध्यमिक परीक्षा विज्ञान विषय से 92 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की।

लाडनूँ- समणी डॉ. संगीतप्रभाजी को भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा 23 मार्च 2015 को नई दिल्ली में महर्षि बादरायण व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया है। जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ के संस्कृत एवं प्राकृत विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर पद पर कार्यरत समणीजी को यह पुरस्कार प्राकृत में उल्लेखनीय कार्य हेतु प्रदान किया गया है।

लाडनूँ- समणी डॉ. संगीतप्रज्ञाजी को भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा 23 मार्च 2015 को नई दिल्ली में महर्षि बादरायण व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया है। जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ के संस्कृत एवं प्राकृत विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर पद पर कार्यरत समणीजी को यह पुरस्कार प्राकृत में उल्लेखनीय कार्य हेतु प्रदान किया गया है।

आलोक कुम्भट

स्नेहा जैन

मोनिका जैन

रोहित चौपड़ा

मुकुल जैन

श्रद्धाञ्जलि

दया की मूर्ति महासाध्वी श्री यशकंवरजी म.सा. का स्वर्गारोहण

जोगणिया माता के गोवटा मन्दिर में पशुबलि बन्द कराने वाली यशस्विनी शासन प्रभाविका महासाध्वी श्री यशकंवरजी म.सा. का 98 वर्ष की वय में 30 अप्रेल 2015 को भीलवाड़ा के बींगोद गाँव में स्वर्गारोहण हो गया। उनका ज्योतिर्मय व्यक्तित्व सभी की श्रद्धा का केन्द्र था। 9 वर्ष की आयु में संवत् 1984 में चित्तौड़गढ़ के बेगूं कस्बे में महासती श्री हुल्लासकंवरजी म.सा. से दीक्षित महासती आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. के व्यक्तित्व से प्रभावित थीं। आचार्य श्री हस्ती ने उन्हें 'शासन प्रभाविका' के विरुद से सम्मानित किया था। यशकंवरजी महाराज का प्रायः मेवाड़ क्षेत्र में विचरण रहा।

जोधपुर- संघ-सेवी, सरलमना सुश्राविका श्रीमती जतनकंवरजी चाम्बड़ मेहता (भंवरी

बाईसा) का 8 मई 2015 को 79 वर्ष की वय में परलोकगमन हो गया। उनका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप नित्य सामायिक-स्वाध्याय करती थीं तथा घोड़ों का चौक की प्रमुख एवं अग्रणी श्राविकाओं में थीं। आपने अपने धर्ममय जीवन में कई त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। श्रद्धानिष्ठ श्राविका ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में सदैव जागरूक रहा करती थीं। श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर की वरिष्ठ स्वाध्यायी अपना सम्पूर्ण समय साधना-आराधना एवं सेवा-भक्ति में व्यतीत करती थीं। चाम्बड़ परिवार का संघ-कार्यों में सदैव सहयोग प्राप्त होता है।

जोधपुर- युवारत्न श्री शैलेन्द्रजी सिंघवी (शैलु) का 15 मई 2015 को 30 वर्ष की अल्पायु

में स्वर्गवास हो गया। आप सहृदय, हँसमुख तथा चिन्तनशील युवारत्न थे। 10 वर्ष पूर्व हुई दुर्घटना के कारण आपका कमर के नीचे का हिस्सा निष्क्रिय था, जिसके कारण आप बिस्तर पर ही थे। आपका जीवन सहज, सरल एवं शान्तिपूर्ण था। आप रत्नसंघ के श्री कैलाशमुनिजी म.सा. के सांसारिक भतीजे थे। सम्पूर्ण सिंघवी परिवार की रत्नसंघ के प्रति अगाध श्रद्धाभक्ति है।

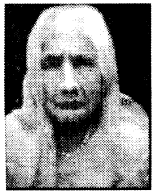

जोधपुर- श्रद्धाशील सुश्राविका श्रीमती उगमकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री मोतीलालजी संकलेचा का 6 मई 2015 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-सतियों के प्रति

गहरी श्रद्धाभक्ति थी। आप स्वस्थ रहते हुए हमेशा सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आपने अपने जीवन में कई व्रत-ग्रहण कर रखे थे। आपके सुपुत्र श्री गौतमजी संकलेचा गजेन्द्र निधि के सदस्य के रूप में अपनी सेवा संघ को प्रदान कर रहे हैं।

पीपाड़- समाजसेवी, सुश्रावक श्री रूपचन्दजी सुपुत्र श्री हरखचन्दजी कोठारी का 22 अप्रेल 2015 को 95 वर्ष की आयु में सागारी संथारा सहित माला जाप करते हुए परलोक गमन हो गया। वे नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाले चिन्तनशील श्रावक थे। आप असहायों के हितैषी, सहृदय, कर्मठ और सकारात्मक सोच के धनी थे। आपने जैन स्वाध्याय पाठशाला के सचिव पद पर 42 वर्षों तक सेवाएँ प्रदान कीं। आपके दोनों पुत्र समाज सेवा में अग्रणी हैं। श्री ओमप्रकाश जी कोठारी 'सी.ए.' मुम्बई में तथा श्री ललित जी कोठारी स्वाध्यायी के रूप में निरन्तर सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

चेन्नई- धर्मानुरागी सुश्राविका श्रीमती कमलाकंवरजी धर्मसहायिका श्री सिद्धेचन्दजी लोढ़ा कुचेरा निवासी का 60 वर्ष की वय में 07 अप्रेल 2015 को देवलोकगमन हो गया। आप प्रतिदिन दो सामायिक करती थीं। आपने अपने जीवन काल में बेला, तेला, चोला, पंचोला एवं अट्ठाई आदि अनेक तपस्याएँ कीं।

इचलकरंजी (महा.)- सुश्रावक श्री सायरचन्दजी सुपुत्र श्री चौथमलजी गाँधी का समाधि भावों में 31 मार्च 2015 को 90 वर्ष की वय में स्वर्गारोहण हो गया। आप राजस्थान के श्री सकल जैन संघ के अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष तथा श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष एवं मंत्री रहे।

उदयपुर- सुश्राविका श्रीमती शोभा जी मेहता धर्मपत्नी श्री कन्हैयालाल जी मेहता (डूंगला वाले) का 3 मई 2015 को स्वर्गवास हो गया। मृदुभाषी सुश्राविका सभी सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों की सेवा-शुश्रूषा, गोचरी, विहार आदि में श्रद्धाभाव से जुटी रहती थीं। उनके आवास के एक हिस्से में साधु-साध्वियों का शेषकालीन प्रवास भी होता था। वे बहुत मनोयोग से कल्पानुसार उनका ध्यान रखती थीं।

बेंगलूरु-श्राविकारत्न श्रीमती ताराबाई जी चौपड़ा धर्मपत्नी श्री सज्जनराज जी चौपड़ा का 76 वर्ष की उम्र में 25 अप्रेल 2015 को स्वर्गगमन हो गया। आप मिलनसार, व्यवहार कुशल एवं धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। आप नित्य सामायिक करती थीं। आपने 18 बार एकान्तर वर्षीतप की साधना की।

बम्बोरा (उदयपुर)- सुश्राविका श्रीमती राजबाई जी धींग धर्मपत्नी श्री शान्तिलाल जी धींग का 80 वर्ष की वय में 23 मई 2015 को परलोकगमन हो गया। आप सरल, सहिष्णु व परिश्रमी महिला थीं।

हलसूर (बेंगलूरु)- सुश्राविका श्रीमती मदनकंवरजी ओस्तवाल का 10 अप्रेल 2015को संथारा सहित पंडित मरण हो गया। आपने 5 अप्रेल 2015 को स्वेच्छा से संथारा ग्रहण किया था। आपके सांसारिक पति श्री शान्तिलालजी ओस्तवाल अभी ज्ञानगच्छ के श्री श्रेयांसमुनिजी म.सा. के रूप में जिनशासन की प्रभावना कर रहे हैं। आपने प्रतिदिन सामायिक एवं पौरुषी करने का व्रत ले रखा था तथा तेला, अठाई, वर्षीतप की तप साधना भी की थी।

बगावदा (सवाईमाधोपुर)- सुश्रावक श्री सुगनचन्दजी जैन सुपुत्र स्व. श्री देवीलालजी जैन का 12 मई 2015 को स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं मृदुभाषी श्रावक रत्न थे।

जोधपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती हुकमकंवरजी पारख धर्मसहायिका श्री बच्छराज

जी पारख का 65 वर्ष की वय में 26 मई 2015 को स्वर्गगमन हो गया। आप प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आपने पूरा जीवन जप-तप-त्याग के साथ संयमपूर्वक व्यतीत किया। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में आप परिवार के सभी सदस्यों सहित सदैव तत्पर रहती थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

प्रव्रज्या की ओर बढ़ता झुकाव

जहाँ एक ओर अधिकतर लोग धन-सम्पदा के संग्रह की असीमित दौड़ में शामिल हैं, वहाँ करोड़ों एवं अरबों के स्वामी धन-सम्पदा का त्याग कर पावन प्रव्रज्या पथ को अपना रहे हैं। ऐसे कई उदाहरण सामने आ रहे हैं। उन्हीं में से एक उदाहरण है दिल्ली के अरबपति उद्योगपति श्री भंवरलाल जी डोसी। उनकी 31 मई 2015 को अहमदाबाद में आचार्य श्री भुवन भानुसूरीश्वरजी की परम्परा में आचार्य गुणरत्नसूरीश्वर जी के मुखारविन्द से 41 आचार्यों की सन्निधि में भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। आचार्य श्री रामलालजी म.सा. की सन्निधि में अखिल भारतीय श्री साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री हुलासजी संचेती ने भी प्रव्रज्या पथ अपना लिया है।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15418 से 15431 तक 14 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

5501/- श्री उत्तमचन्दजी खिंवसरा, मांडल जिला-जलगाँव, सुपुत्र श्री अभय का शुभविवाह सौ. कां. दीपाली सुपुत्री श्री त्रिलोकचन्दजी साबद्रा (लासलगाँव वाले) के साथ 31 मार्च 2015 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

5000/- श्रीमान् भंवरलालजी, प्रदीप कुमारजी, पारसमलजी डोसी, हैदराबाद, स्मृति शेष श्रीमती कमलादेवीजी धर्मसहायिका श्री भंवरलालजी डोसी पुत्रवधू स्व. श्रीमान् सोनराजजी डोसी (ब्यावर वाले) की पुण्यतिथि 12 मई 2015 के उपलक्ष्य में।

5000/- वीरपिता श्री उच्छबचन्दजी, महेशचन्दजी सालेचा 'जेठन्तरी निवासी', हुबली, मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा द्वारा 25 अप्रेल 2015 को जोधपुर में पावन प्रव्रज्या ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।

3100/- श्री प्रकाशचन्दजी जैन (ज़रखोदा वाले), कोटा, सुपौत्री सौ. चारूजी जैन सुपुत्री श्री राकेशजी जैन की प्रथम पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि स्वरूप।

2100/- श्रीमान् राजमलजी, निर्मल कुमारजी पोखरना, अजमेर, श्रीमती ताराजी जैन के 2 वर्ष के एकांतर तप पूर्ण होने पर।

2100/- श्री माँगूसिंहजी गांग सुपुत्र स्व. श्री सुमेरमल जी गांग, जोधपुर, बैंक से सेवानिवृत होने के प्रसंग पर।

2100/- श्री विनयचन्दजी बम्ब, जयपुर, सुश्री आंचल बम्ब सुपुत्री श्री विजयजी बम्ब के सी.सैकण्डरी परीक्षा में 95 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण होने के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती पारसदेवीजी-श्री धनरूपमल जी हीरावत, जयपुर, सुपौत्र श्री आदित्य जी सुपुत्र श्रीमती हेमलताजी-दिनेशजी हीरावत द्वारा सी.बी.एस.ई. कॉमर्स की 12 वीं कक्षा में 96.6 प्रतिशत अंकों से राजस्थान में तृतीय स्थान प्राप्ति पर।

2000/- श्री दिलीपकुमारजी, राजेशकुमारजी बाफना 'बोरूंदा वाले',चेन्नई, सहयोगार्थ।

1501/- श्रीमती ललिताजी, महेन्द्रजी गांग (जोधपुर वाले), सूरत, श्री अभिषेकजी एवं आरवजी सुपुत्र एवं सुपौत्र के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1101/- श्रीमान् जगदीश प्रसादजी, चन्दन कुमारजी जैन (सुमेरगंज मंडी वाले), कोटा, चि. गौरवजी संग सौ.कां. ज्योतिजी सुपुत्री श्री मनीषजी जैन के साथ 4 मई 2015 को विवाह सुसम्पन्न होने के प्रसंग पर।

1100/- श्रीमती पुष्पाजी पारख एवं अभयजी पारख, जयपुर, स्व. श्री प्रशान्त जी पारख की 9 वीं पुण्यस्मृति में।

1100/- सुश्री निकिता बागपतिया सुपुत्री श्री सतीशचन्दजी बागपतिया, नदबई-भरतपुर, सूचना सहायक अधिकारी पद पर नियुक्ति होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमान् नेमीचन्दजी नाहर, जयपुर, सहयोगार्थ।

1100/- सौ. उषाजी गाँधी धर्मपत्नी श्री संतोष जी गाँधी, अजमेर, श्रीमती प्रेमकंवरजी गाँधी धर्मपत्नी स्व. श्री दलपतचन्दजी गाँधी की द्वितीय पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री बच्छराजजी पारख, जोधपुर, श्रीमती हुकमकंवरजी पारख का स्वर्गगमन 26 मई 2015 को हो जाने पर पुण्यस्मृति में।

1100/- श्रीमती शान्तादेवीजी-केशरीचन्दजी गोलेछा, जयपुर, सुपौत्र श्री रजत जी गोलेछा सुपुत्र श्रीमती विनिता-विमलचन्दजी गोलेछा के सी.बी.एस.ई. कॉमर्स की 12 वीं कक्षा में 91.2 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

1,25,000/-श्रीमान् रतनलाल सी. बाफणाजी, जलगाँव, "विचारों के आभूषण व रत्नमंजूषा" के पुनः प्रकाशन हेतु।

51,000/- श्रीमान् नवरतनजी, श्रीमती सुमनजी, श्री पुनीतजी, श्रीमती खुशबूजी एवं सुश्री प्रीयलजी डागा, जोधपुर, "भगवान महावीर" पुस्तक के प्रकाशन हेतु।

41,000/- श्रीमती रूपदेवीजी, श्री राजेन्द्रजी, अशोकजी चोरड़िया एवं चोरड़िया परिवार, जयपुर "श्रावक सामायिक- प्रतिक्रमण सूत्र" पुस्तक के पुनः प्रकाशन हेतु।

32,500/- श्रीमान् सुभाषजी, अशोकजी, विपिनजी, पुनीतजी एवं यशजी धोका, मैसूर, 'श्रावक सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र' के पुनः प्रकाशन हेतु।

32,500/- श्रीमान् प्रकाशचन्दजी भंडारी, लालबाग, बेंगलुरू, पुनः प्रकाशन हेतु।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

21000/- श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्रकुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी रांका, अजमेर, श्रीमती प्रेमकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री सुगनचन्दजी रांका के संथारापूर्वक देवलोकगमन होने पर पावन स्मृति में संघ सहायतार्थ।

21000/- वीरपिता श्री उच्छबचन्दजी, महेशचन्दजी सालेचा 'जेठन्तरी निवासी', हुबली, मुमुक्षु श्री अविनाशजी सालेचा द्वारा 25 अप्रेल 2015 को जोधपुर में पावन प्रव्रज्या ग्रहण करने के उपलक्ष्य में।

5000/- वीरपिता श्री उच्छबचन्दजी, महेशचन्दजी सालेचा 'जेठन्तरी निवासी', हुबली, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

7000/- श्री जयकुमारजी जैन, जोधपुर, सहयोगार्थ।

5100/- श्री महेन्द्रराजजी, नरेन्द्रराजजी, नरपतराजजी चाम्बड़ मेहता, जोधपुर, अपनी पूजनीया माताजी श्रीमती जतनकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री चंदनराजजी मेहता का 08

मई, 2015 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2500/- श्री विनयजी लुणावत, जोधपुर, सहयोगार्थ।

1500/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, अपने तथा पौत्र राहुल गांग सुपुत्र श्रीमती योगिता-राजेश जी गांग के जन्मदिवस पर।

1100/- श्री चन्द्रकांतजी हिरण, जलगांव, अपनी सुपुत्री सौ. कां. मित्तल संग चि. भूषण कुमारजी के विवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री रामदयाल उम्मेदचन्दजी सर्राफ, बजरिया-सवाईमाधोपुर, सुपौत्र श्री लालचन्दजी जैन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री धर्मचन्दजी, रमेशचन्दजी, महेन्द्रजी करेला वाले, सवाईमाधोपुर, पूजनीया माताजी के पावन स्मृति में।

1100/- श्री रामलक्ष्मणजी-श्रीमती उषाजी कुम्भट, जोधपुर, मातुश्री स्व. उगमकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री मगराजजी कुम्भट की पाँचवीं पुण्यतिथि (4 जून 2015) पर स्मरणांजलि स्वरूप।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

9000/- श्री कुशलराजजी, पदमचन्दजी, महावीरचन्दजी कोठारी, निमाज-अहमदाबाद, सहयोगार्थ।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

200000/- श्री रिखबचन्दजी सुखानी, रायचूर (कर्नाटक), श्रीमती मानकंवरबाईजी धर्मपत्नी श्री गौतम चन्दजी मेहता का स्वर्गवास 14 मई 2015 को संथारापूर्वक होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

12000/- श्रीमती सुनयना जी धर्मपत्नी श्री महावीरचन्दजी मेहता, जोधपुर, सहयोगार्थ।

12000/- श्री एम. मोहनलाल जी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

12000/- श्रीमती एम. उगमाबाई जी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

12000/- श्री एम. पारसमल जी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

12000/- श्रीमती पी. मदनबाईजी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

12000/- श्री एम. सुशीलकुमार जी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

12000/- श्रीमती एस. सरोजजी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

12000/- श्री पी. आनन्दजी कुमारजी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

12000/- श्रीमती ए. चन्द्राजी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

12000/- श्री आर. शिल्पीजी-शीतल जी बोहरा, तिरुवनमल्लै (तमिलनाडु)

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

जयपुर में जैन छात्रों के लिए उच्च शिक्षा प्रवेश हेतु स्वर्णिम अवसर, 9वीं कक्षा से प्रवेश प्रारम्भ

घटते संस्कार बढ़ते साधन के इस आधुनिक युग में नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों के साथ उच्च शैक्षणिक अध्ययन के लिए आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान संचालित है। यहाँ छात्रों के अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण एवं सुविधाएँ हैं। सर्वांगीण विकास के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जैसे- भाषण, प्रश्नोत्तरी, सेमिनार, इंगलिश स्पीकिंग कोर्स, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, मोटिवेशनल कार्यक्रम, खेलकूद एवं धार्मिक अध्ययन के साथ प्राकृत-संस्कृत भाषा का ज्ञान। नियमित दिनचर्या, अनुशासन एवं कठोर परिश्रम के साथ संस्कारित व्यक्तित्व का निर्माण करना हमारा लक्ष्य है। विगत 41 वर्षों में सैकड़ों विद्यार्थी यहाँ अध्ययन कर वर्तमान में राजकीय, प्रशासनिक सेवाओं के उच्च पदों पर कार्यरत हैं। कई छात्र व्यावसायिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित रूप में कार्यरत हैं। कक्षा 9 से स्नातक (सभी विषय) एवं प्रोफेशनल शिक्षण, प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले चयनित छात्रों को प्रवेश दिए जाते हैं।

प्रवेश प्रक्रिया की नियमावली:-

1. संस्थान में प्रवेश का मुख्य आधार बालकों का प्रतिभाशाली एवं शैक्षणिक स्तर पर अच्छे अंक होना प्राथमिकता रखेगा।
2. कक्षा आठवीं उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यालय, महाविद्यालय के सभी विषयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रवेश सुविधा।
3. प्राप्त आवेदनों में से शैक्षणिक व आध्यात्मिक योग्यतानुसार चयनित छात्र ही प्रवेश हेतु साक्षात्कार में आमंत्रित किये जायेंगे। आवेदनपत्र जिनवाणी मई-2015 के अंक में है।

सुविधाएँ:-

1. संस्थान में अध्ययनानुकूल उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्था।
2. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु इंगलिश स्पीकिंग कोर्स, मोटिवेशनल कक्षाएँ, सेमिनार, शैक्षणिक भ्रमण एवं विविध विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा अभिप्रेरणा एवं कार्यशालाओं का आयोजन।
3. सुसज्जित पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण की उत्तम व्यवस्था।
4. भाषण, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी का आयोजन एवं क्रिकेट, कैरम, बेडमिंटन आदि खेलों की सुविधाएँ।
5. विद्यार्थियों को स्कूल एवं महाविद्यालय के अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन अनिवार्य।
6. संस्थान द्वारा निर्धारित अन्य नियमों एवं उपनियमों का पालन अनिवार्य।

फार्म प्राप्ति एवं अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यानपथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.), फोनः 0141-2710946, 094614-56489, ई-मेल : ahassansthan@gmail.com

-दिलीप जैन, अधिष्ठाता

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 69 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 11 से 18 सितम्बर 2015** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **05 अगस्त 2015** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
   .....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
   .....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
   .....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता–संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स-2636763,मो.-9460441570(संयोजक),9461013878(सचिव), 94142-67824,9462543360(का.प्रभारी),ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष– दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन
के पास, न्यू पावर हाऊस रोड़, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

– आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

With Best Compliments from :

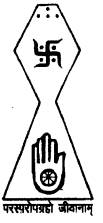

Parasmal Suresh Kumar Kothari

Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

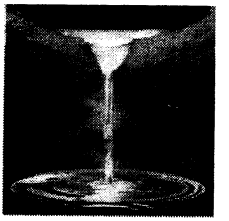
Electric Arc Furnace

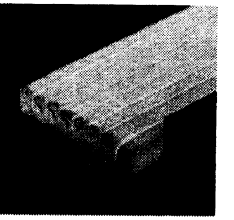
Billets

Rolling Mill

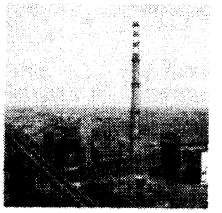
Captive Power Plant

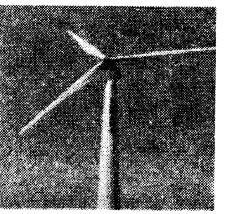
Windmill

With best wishes from

ISO 9001:2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED
INTEGRATED STEEL PLANT
MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL
29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नम: ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पूण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य	रजत स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(50 हजार रुपये प्रति वर्ष)

नोट–सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/– रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address – AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code – UTIB0000168
PAN No. – AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	रजत स्तम्भ सदस्य (50 हजार रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीशजी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् राजीव जी डागा, ह्यूस्टन। श्रीमती नीता जी डागा, ह्यूस्टन। श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेशजी कवाड़, पूनामल्लई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजेशजी विमलजी पवनजी बोहरा, चैन्नई।	श्रीमान् गणपतजी हेमन्तजी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, W-570, Park Road,Annanagar West Extn.,**CHENNAI-600101** (TN)
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob.095430 68382)**

kelico®
remembering quality

स्वाध्याय से ही आप आत्म-निर्माण
और समाज-निर्माण के साथ जिनशासन
को समुन्नत करने में समर्थ होंगे।
-आचार्य हस्ती

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
• PACHPADRA • PALI • ERODE

K.L. ASSOCIATES

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali - 306 401 (Raj.)
Mobile: 094141 22757
135, N.M.S.Compound, ERODE - 638 001 (T.N.)
✆ Off : 3205500, Mobile: 93600 25001

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं।
ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी ।
- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जून, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 06 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2015 ★ आषाढ़, 2072

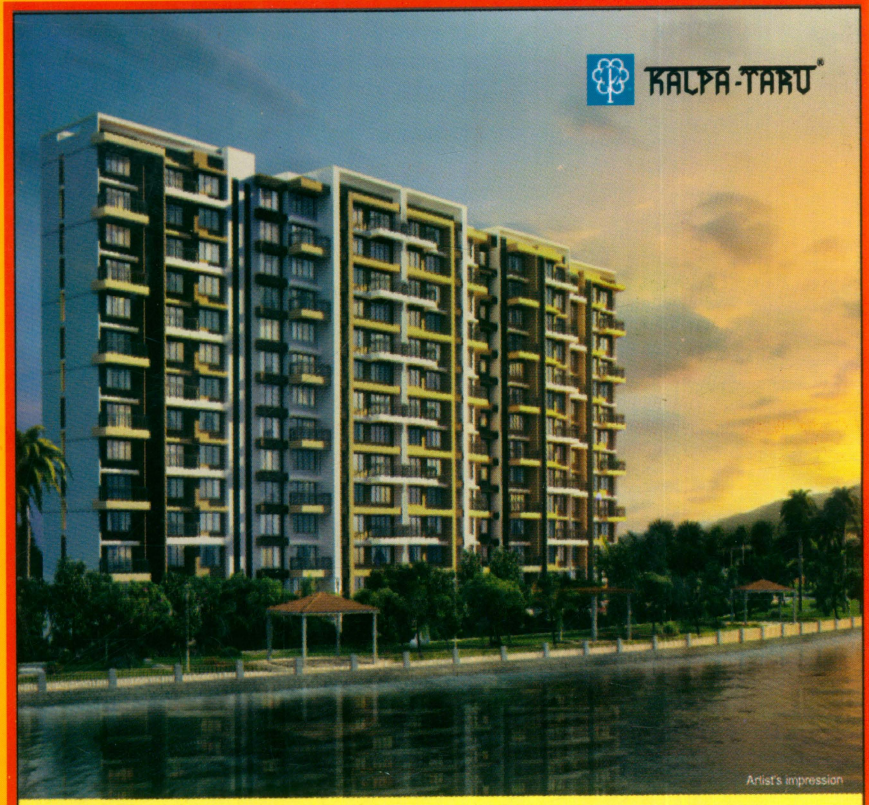

waterfront
at KALPATARU riverside PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences
022 3064 3065

Promoters: M/S Kalpataru + Sharyans
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited.
The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन